हजारीमल मालू ग्रन्थमालाका तृतीय पुष्प

❀ श्री वीतरागाय नमः ❀

विमलज्ञान प्रकाश

संग्रहकर्त्ता
बाबू मंगलचन्द मालू

प्रकाशक
हजारीमल मंगलचन्द मालू
४ राजा उडमेन्ट स्ट्रीट
कलकत्ता
मालू बोथरों की गवाड़
बीकानेर (राज.)

तृतीयवृत्ति
१०००

सम्वत्
२०३२

मूल्य
वीर भक्ति

निवेदन

उस पारब्रह्म परमात्मा जिनेश्वर भगवानको अनेकानेक धन्यवाद है जिनकी असीम कृपासे यह "हजारीमल मालू ग्रन्थमाला" का तृतीय संस्करण पूर्ण सौरभके साथ आप लोगोंके करकमलोंमे शोभित हुआ है ।

उक्त ग्रन्थ मालाको प्रकाशित करनेका अभिप्राय स्वर्गीय पूज्य दादाजी श्री हजारीमलजी व पूज्य पिताजी मंगलचन्द जी मालूकी स्मृतिको चिरस्थायी बनाये रखना तथा सहयोगी जैन बन्धुओं को स्वधर्ममें प्रीती बनाये रखनेके लिये आचार्य मुनियों श्रावकों द्वारा लिखित सुन्दर पद्योंका संग्रह करना है ।

ग्रन्थमालाके इस तृतीय पुष्पका सौरभ पराग भक्तमन भ्रमर हो जान सकेंगे । हमने इस पुस्तकमें पूज्य पिताजीके संग्रहीत पद्यों कितने ही पद्य इस संक्षिप्त सग्रहमे दिये हैं ।

दृष्टि दोषसे यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो सज्जन वृन्द सुधार पढ़ेंगे ।

किमधिकम् ।

भवदीय

हजारीमल मंगलचन्द मालू

—ö—

विषय सूचीपत्रम्

समर्पण

सतसंगमें रत रहत जो अरु दया पालत ज्ञानते ।
भक्ति है जिन धर्म की अरु विरत शान-गुमानतें ।।
चरचा करे नित शास्त्र को सद्धर्म में रति मानते ।
'मंगल' उन्हीके कर कमल अर्पण करे सम्मानते ।।

—❀—

हजारीमल मंगलचन्द साहू
बीकानेर (राज०)

मुद्रक : राजश्री प्रिंटर्स, एम.जी. रोड, बीकानेर

स्व. श्री पूज्य पितामह हजारीमलजी नाहर
जन्म आश्विन कृ० ६ सं० १६३१ वि०
निर्वाण मि० भाद्रपद शु० १४ सं० १६८६ वि०

॥ श्री मद्वीतरागायनमः ॥

अथ चौबीसी पद

॥ दोहा ॥

कर्म्म कलंक निवारिने, थया सिद्ध महाराज ।
मन वचन काये करी, वदु तेने आज ।

१—श्रीआदिनाथजी का स्तवन

॥ ढाल ॥ उमादे भटियाणी ॥ ए देशी ॥

श्री आदीश्वर स्वामी हो । प्रणमू सिरनामी तुम भणी ॥ प्रभू अंतर जामी आप । मोपर म्हैर

करीजं हो मेटीजै चिन्ता मनतणी । म्हारा काटो पुराकृत पाप ।। श्री आदीश्वर स्वामी हो।।टेर।।१।। आदि धरमकी कीधी हो । भर्तक्षेत्र सर्पणी काल में । प्रभु जुगला धरम निवार । पहिला नरवर १ मुनिवर हो २ । तिर्थंकर ३ जिनहुवा ४ केवली५। प्रभु तीरथ थाप्या च्यार ।। श्री० २ ।। मामद दिक्या धारी हो । गज होदे मुक्ति पधारिया । तुम जनम्या हो परमाण । पिता नाभ म्हाराजा हो । भव देव तणो कर नर थया । प्रभू पाम्या पद निरवाण ।। श्री० ३ ।। भरतादिक सो नदन हो । दो पुत्री वाह्मी सुंदरी ।। प्रभू ए थारा अंग जात । सगला केवल पाया हो । समायो अविचल जात में । केइ त्रिभुवन में विख्यात ।। श्री० ४ ।। इत्यादिक बहु तारया हो । जिन कुल में प्रभू तुम ऊपना । केइ आगम में अधिकार । और असंख्या तारया हो । उधारया सेवक आपरा । प्रभू शरणा हो आधार ।।श्री०।।५।।मतारण शरण कहीजें हो ।

प्रभू विरद विचारो सायवा। केइ अहो गरीब निवाज। शरण तुम्हारी आयो हो। हूँ चाकर निज चरना तणो। म्हारी सुणिये अरज अवाज॥ श्री० ६॥ तू करुणा कर ठाकुर हो। प्रभु धरम दिवाकर जग गुरू। केइ भव दुषदुकृत टाल। विनयचंदने आपो हो। प्रभु निजगुण संपतसास्वती प्रभू दीनानाथदयाल॥ श्री० ७॥ इति॥

—☼☼—

२—श्रीअजितनाथजीका स्तवन

॥ ढाल कुविसन मारग माथे रे धिग॥ ए दशी॥

श्री जिन अजित नमौं जयकारी। तुम देवनको देवजो। जय शत्रु राजाने विजाया राणी कौ। आतम जात तुमेवजो। श्री जिन अजित नमौं जयकारी॥ टेर॥ १॥ दूजा देव अनेरा जगमें, ते मुझ दाय न आवेजो॥ तह मन तह चित्त हमनें एक, तुहोज अधिक सुहावैजो॥ श्री० २॥ सेव्या देव घणा भव २ में। तो पिण गरज न

सारी जी ॥ अबकै श्री जिनराज मिल्यौ तूं। पूरण पर उपकारी जी ॥ श्री० ३ ॥ त्रिभुवनमें जस उज्वल तेरो, फैल रह्यो जग जानें जी ॥ वंदनीक पूजनीक सकल लोकको। आगम एम बखानें जी ॥ श्री० ४ ॥ तू जग जीवन अंतर-जामी। प्राण आधार पियारो जी ॥ सब विधिला-यक संत सहायक। भक्त वछल वृष धारो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अष्ट सिद्धि नव निद्धिको दाता। तो सम अवर न कोई जी ॥ वधं तेज सेवकको दिन दिन जेथ तेथ जिम होई जी ॥ श्री० ६ ॥ अनत ग्यान दर्शण संपति ले ईश भयो अधिकारी जी ॥ अविचल भक्ति विनयचंद कूं देवो। तो जाणूं रिभवारोजी ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥

—:o:—

३—श्रीसम्भवनाथजीका स्तवन

॥ राग ॥ आज म्हारा पारसजी नें चालो वंदन जइए ॥ ए देशी ॥

आज म्हारा संभव जिनरे। हित चितसूं

गुणगास्यां । मधुर २ स्वर राग अलापी । गहरे शब्द गुंजास्यां राज ।। आज म्हारा संभव जिनके हित चितसूं गुण गास्यां ।। आ० १ ।। नृप जितारथ सेन्या राणी । तासुत सेवकथास्यां ।।नवधा भक्त भावसौं करने । प्रेम मगन हुई जास्यां राज ।। आ० २ ।। मन बच कायलाय प्रभू सेती । निसदिन शास उसास्यां ।। संभव जिनकी मोहनी मूरति । हिये निरन्तर ध्यास्यां राज ।। आ० ३ ।। दीन दयालदीन बंधव कै । खाना जाद कहास्यां ।। तनधन प्रान समरपी प्रभूको । इन पर वेग रिझास्यां राज ।। आ० ४।। अष्ट कर्म दल अति जोरावर ते जीत्या सुख पास्यां ।। जालम मोहमार कै जगसे । साहस करी भगास्यां राज ।। आ० ५ ।। ऊबट पंथ तजी दुरगतिको । शुभगति पंथ समास्यां ।। आगम अरथ तणे अनुसारे । अनुभव दशा अभ्यास्यां राज ।। आ० ६ ।। काम क्रोध मद लोभ कपट तजि । निज गुणसूं लवलास्यां ।। विनैचंद

गहे ॥ कवि जिन चरित हुलास ॥ प्रभु० ४ ।
पपइयोपीउ पीउ करेजी ॥ जान वर्षाऋतु जेह ।
त्यूं मोमन निस दिन रहे ॥ जिन सुमरन सूं नेह
॥ प्रभु० ५ ॥ काम भोगनी लालसा जी ॥ थिरता
न धरे मन्न ॥ पिण तुम भजन प्रतापथी ॥ दाझे
दुरमति वन्न ॥ प्रभु० ६ ॥ भवनिधि पार उतारिये
जी । भगत वच्छल भगवान ॥ विनैचंदकी वीनती
मानो कृपानिधान ॥ प्रभु० ७ ॥ इति ॥

—✡✡—

६-श्रीपद्मप्रभु स्वामीजीका स्तवन

॥ राग ॥ [illegible] ॥ ए देशी ॥

पदम प्रभु पावन नाम तिहारो । प्रभू पतित
उद्धारन हारो ॥ टेर ॥ जदपि धीमर भील कसाई ।
अति पापिष्ठ जमारो । तदपि जीव हिंसा तज प्रभू
भज ॥ पावें भवदधि पारो ॥ पदम० १ ॥ गो
ब्राह्मण प्रमदा बालककी ॥ मोटी हित्यारधारो ॥
तेह नो करण हार प्रभू भजन ॥ होत हित्यासूं

न्यारी ॥ पदम०२ ॥ वेश्या चुगल चंडाल जुवारी॥
चोर महा भट सारो । जो इत्यादि भजे प्रभू तोने॥
तो निवृर्तें संसारो ॥ पदम० ३ ॥ पाप परालको
पुञ्ज बन्यो अति ॥ मानो मेरू अकारो ॥ ते तुम
नाम हुताशन सेती ।: सहज्या प्रजलत सारो
॥ पदम० ४ ॥ परम धर्मको मरम महारस ॥
सो तुम नाम उचारो या सम मंत्र नहीं
कोई दूजो । त्रिभुवन मोहन गारो ।' पदम० ॥५॥
तो सुमरण विन इण कलयुगमें । अवरन को
आधारो॥ में बलि जाऊँ तो सुमरन पर॥ दिन२
प्रीत वधारो ॥ पदम० ६ ॥ कुसमा राणीको अंग
जात तूं ॥ श्रीधर राय कुमारो ॥ विनैचन्द कहे
नाथ निरञ्जन । जीवन प्रान हमारो । पदम०॥७॥
इति ॥

७-श्र सुपार्श्वनाथ प्रभुका स्तवन

॥ राग ॥ प्रभूना दीनदयाल सेवक सरण आयो ॥ ए देशी ॥

श्री जिनराज सुपास । पुरो आस हमारी॥टेर॥
प्रातष्ट सेन नरेश्वर को सुत । पृथवी तुम महतारी
सगुण सनेहो साहिब सांचो । सेवकने सुखकारी
॥श्रीजिन० । १॥ धर्म काज धन मुक्त इत्यादिक ।
मन वांछित सुखपूरो ॥ वार वार मुझ विनती
येही ॥ भव २ चिन्ता चूरो ॥श्रीजिन०॥२॥ जगत्
शिरोमणि भगति तिहारी कल्प वृक्ष सम जाणु ॥
पूरण मह प्रभु परमेश्वर । भव भव तुम्हें पिछाणु॥
श्रीजिन० । ३॥ हूं सेवक तूं साहिब मेरो ॥ पावन
पुरुष विज्ञानी ॥ जनम २ जित तिथ जाऊं तो ।
पामो प्रीत पुरानी ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ तारण
तरण प्रद अमरदा शरणको । बिरद इसो तुम
सोहे ॥ तो सम दीनदयाल जगतमें ॥ इन्द्र
नरेन्द्र नको है ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ शम्भू रमदा
बड़ो समुद्रोंमें ॥ सैल सुमेर बिराजे ॥ तू ठाकुर

त्रिभुवन में मोटो ।। भगत किया दुख भाजे ।। श्रीजिन० ।। ६ ।। अगम अगोचर तू अविनाशी अलप अखंड अरूपी ।। चाहत दरस बिनैचन्द तेरौ । सत चित आनन्द स्वरूपी ।।श्रीजिन०।।७।।

।। इति ।

—¤¤—

८-श्रीचन्द्र प्रभुजीका स्तवन

।। ढाल चोकनी देशी ।।

मुझ म्हेर करो । चन्द प्रभूजग जीवन अन्तरजामी ।। भव दुःख हरो ।। सुणिये अरज हमारी त्रिभुवन स्वामी ।। टेर ।। जय जय जगत् शिरोमणी । हूँ सेवकने तूं धणी ।। अब तौसू गाढ़ी बणी ।। प्रभू आशा पूरो हमतणी ।। मुझ० ।। १ ।। चन्द्रपुरी नगरी हती ।। महासेन नामा नरपति । तसु राणी श्रीलषमा सती ।। तसु नन्दन तूं चढ़ती रती ।। मुझ०।।२।। तूं सरवज्ञ महाज्ञाता ।। आतम अनुभवको दाता ।। तो तूठां लहिये सुखसाता ।।

पन २ जे जगमें तुम ध्याता ॥ मुझ० ॥ ३ ॥ शिव सुख प्रार्थना करसूं । उज्वल ध्यान हिये धर सूं ॥ रसना तुम महिमा करसूं ॥ प्रभू इम भवसागरसे तिरसूं ॥ मुझ० ॥ ४ ॥ चन्द चकोरनके मनमें ॥ गाज अवाज होवे घनमें ॥ पिय अभिलाषा ज्यों त्रियतनमें ॥ त्यों वसियो तू मो चित मनमें ॥ मुझ० ॥ ५ ॥ जो सू नजर साहिब तेरी ॥ तो मानो विनती मेरी काटो भरम करम बेरी ॥ प्रभु पुनरपि नहि परूं भव फेरी ॥ मुझ० ॥ ६ ॥ आतम ज्ञान दशा जागी ॥ प्रभु तुम सेती मेरी लौ लागी । अन्य देव भ्रमना भागी ; विनैचन्द तिहारो अनुरागी ॥ मुझ ७ ॥ इति ॥

—ःःः—

९-श्रीसुविधनाथजीका स्तवन

॥ राग ॥ पूतली बेरी कांदिला हो ॥ एदेशी ॥

श्रीसुविध जिणेसर वंदिये हो ॥ टेर ॥ काकंदी नगरी भली हो । श्री सुग्रीव नृपाल । रामा तसु

पट रागनी हो॥ तस सुत परम कृपाल॥श्रीसु०॥१॥
त्यागी प्रभुता राजनो हो। लीधो संजम भार।
निज आतम अनुभाव थी हो। पाम्या प्रभु पद
अविकारी॥ श्री०॥२॥ अष्ट कर्म नोराजवी हो।
मोह प्रथम क्षय कीना॥ सुध समकित चारित्रनो
हो। परम क्षायक गुणलीन॥श्री०॥ ३ ॥ ज्ञाना-
वरणी दर्शणावरणी हो अन्तरायके अन्त॥ ज्ञान
दरशण बल ये त्रिहूँ हो प्रगटय्या अनन्ता अनन्त
॥श्री०॥४॥ अवा वाह सुख पामिया हो।
वेदनी करम क्षपाय। अवगाहण अटल लही हो।
आयु क्षै करनैं श्री जिनराय॥श्री०॥५॥ नाम
करम नौ क्षै करो हो। अमूर्तिक कहाय। अगुर
लघुपण अनुभव्यौ हो। गोत्र करम सुकाय॥श्री०॥
६॥ आठ गुणा कर ओलप्या हो। जात रूप
भगवंत। विनैचन्दके उरवसौ हो। अह निस प्रभु
पुष्पदंत॥ ॥०७॥ इति॥

—※※—

मिटै अज्ञान अविद्या । मुक्त पंथ पग धररे ॥श्री०६॥ तू अविकार विचार आतम गुन ॥ जंजालमें न पररे ॥ पुद्गल चाव मिटाय विनैचन्द ॥ तू जिनते न अवररे ॥ श्री० ॥७॥ इति ॥

१२-श्रीवासुपूज्यजीकी स्तुति

॥ राग ॥ फूलगो देह पलकमें पलटे ॥ एदेशी ॥

प्रणमूं वासु पूज्य जिन नायक ॥ सदा सहा-यक तू मेरो ॥ विषमी बाट घाट भय थानक ॥ परमासय सरना तेरा ॥प्रणमूं० ॥ १ ॥ खल दल प्रबल दुष्ट अति दारुण । चौतरफ दिये घेरो ॥ तो पिण कृपा तुम्हारी प्रभुजी ॥ अरियन भी प्रगटै चेरो ॥ प्रणमूं० २ ॥ विकट पहार उजार विचालै । चोर कुपात्र करै हेरो । तिण विरियां करिये तो सुमरण । कोई न छीनै सकै डेरो ॥ ॥ प्रणमूं० ३ ॥ राजा बादशाह कोइ कोपै अति । तकरार करै छेरो । तदपी तू अनुकूल हुवै तो ॥ छिनमें छुट जाय केरो ॥ प्रणमूं ४ ॥ राक्षस भूत

पिसाच डांकिनी ॥ संकनी भय न आवै नेरौ
दुष्ट मुष्ट छल छिद्र न लागै ॥ प्रभू तुम नाम भज
गहरौ॥ प्रणमू० ५ ॥ विष्फोटक कुष्टादिक सङ्क
रोग असाध्य मिटै देहरौ ॥ विष प्यालो अ
होय प्रगमें ॥ जो:बिस्वास जिनन्द केरौ ॥ प्रण
॥ ६ ॥ मात जया वसु नृपके नदन ॥ तत्व जय
रथ बुध प्रेरौ वे कर जोरि विनेचन्द बिनवे ॥
मिटे नुफ भव फेरौ ॥ प्रणमू० ७ ॥ इति

१३-श्रीविमलनाथ स्वामीका स्तवन

॥ ढाल ॥ फूलसी देह पलकमें पलटे ॥ एदेशी ॥

विमल जिनेस्वर सेविये ॥ थारी बुध निर्मल
जायरे ॥ जीवा ॥ विषय विकार विसार नै
तूं मोहनी करम खपायरे ॥ जीवा विमल जिनेश
सेविये ॥ १ ॥ सूक्ष्म साधारण पणे । परते
वनसपती मांयरे ॥ जीवा ॥ छेदन भेदन तेसही
मर मर ऊपज्यो तिण कायरे ॥ जीवा ॥ वि
॥ २ ॥ काल अनन्त तिहागम्यो ॥ तेहना दु

आगम थी संभालरे ॥ जीवा ॥ पृथ्वी अप्प तेउ वायुमें ॥ रह्यो असंख्या २ तो कालरे ॥ जीवा ॥ वि० ॥३॥ एकेन्द्री सूं बेंद्री थयो ॥ पुन्याई अनंती वृधरे ॥ जीवा । सन्नीपचेंद्री लगें पुनबंध्या ॥ अनन्ता २ प्रसिद्ध रे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ ४॥ देव नरक तिरयंच में ॥ अथवा माणस भवनीचरे ॥ जीवा ॥ दीन पणें दुख भोगव्या । इणपर चारों गति बीचरे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ ५ ॥ अबके उत्तम कुल मिल्यो ॥ भेट्या उत्तम गुरु साधुरे ॥ जीवा ॥ सुण जिन वचन सनेहसें ॥ समकित रत्न शुद्ध आराधरे ॥ जीवा ॥ वि० ॥ ६ ॥ पृथ्वी पति कीरति भानु को ॥ माताराणी को कुमाररे ॥ जीवा ॥ जिनचन्द कहे ते प्रभु ॥ शिर सेहरो हियडारो हाररे ॥ जीवा ॥वि०॥७॥ इति॥१३॥

१४-श्रीअनतनाथजीका स्तवन

॥ ढाल ॥ बेला थयाँरे ग्रैम की ॥ ए देशी ॥

अनंत जिनेश्वर नित नमो ॥ अद्भुत जोग

अलेप ।। ना कहिये ना देखिये । जाके रूप न रेख ।। अनंत ।। १ ।। सुक्षमथी सुक्षम प्रभू ।। चिदानन्द चिद्रूप । पवन शब्द आकाशथी ।। सुक्ष्यम ज्ञान सरूप ।। अनन्त । २ ।। सकल पदारथ चितवूं ।। जेजे सुक्षम जोय । तिणथी तू सुक्षम महा ।। तो सम अवर न कोय ।। अनन्त ।। ३ ।। कवि पण्डित कह कह थके ।। आगम अर्थ विचार । तौ पिण तुम अनुभव तिको ।। न सके रसना उचार ।। अनन्त ।। ४ ।। प्रभूने श्रीमुख सरस्वती । देवी आपी आप ।। कहि न सकै प्रभू तुम अस्तुती ।। अलख अजपा जाप ।। अनन्त ।।५।। मन बुध वाणी तो विषै ।। पहुँचे नहीं लगार । साक्षी लोकालोकनी ।। निरविकल्प निराकार ।। अनन्त ।। ६ ।। मातु जसा सिहरथ पिता ।। तसु सुत अनन्त जिनन्द ।। विनैचन्द अब ओलख्यो । साहिब सहजा नन्द ।। अनन्त ।। ७ ।। इति ।।१४।।

—ʘʘ—

आगम थी संभालरे ।। जीवा ।। पृथ्वी अप्प तेउ वायुमें ।। रह्यो असंख्या २ तो कालरे ।। जीवा ।। वि० ।।३।। एकेन्द्री सूं बेंद्री थयो ।। पुन्याई अनंती वृधरे ।। जीवा । सन्नीपचेंद्री लगें पुनबंध्या ।। अनन्ता २ प्रसिद्ध रे ।। जीवा ।। वि० ।। ४।। देव नरक तिरयंच में ।। अथवा माणस भवनीचरे ।। जीवा ।। दीन पणें दुख भोगव्या । इणपर चारों गति बीचरे ।। जीवा ।। वि० ।। ५ ।। अबके उत्तम कुल मिल्यो ।। भेट्या उत्तम गुरू साधुरे ।। जीवा।। सुण जिन वचन सनेहसे ।। समकित व्रत शुद्ध आराधरे ।। जीवा ।। वि० ।। ६ ।। पृथ्वी पति कीरति भानु को ।। सामाराणी को कुमाररे ।। जीवा ।। विनंचन्द कहै ते प्रभु ।। सिर सेहरो हिवडारो हाररे ।। जीवा ।।वि०।।७।। इति।।१३।।

१४-श्रीअनतनाथजीका स्तवन

।। ढाल ।। वेगा पधारोरे म्हेल थी ।। ए देशी ।।

अनंत जिनेश्वर नित नमो ।। अद्भुत जोत

अलेष ।। ना कहिये ना देखिये । जाके रूप न रेख ।। अनंत ।। १ ।। सुक्षमथो सुक्षम प्रभू ।। चिदानन्द चिद्रूप । पदन शब्द आकाशथी ।। सुक्ष्यम ज्ञान सरूप ।। अनन्त । २ ।। सकल पदारथ चितवूं ।। जेजे सुक्षम जोय । तिणथी तू सुक्षम महा ।। तो सम अवर न कोय ।। अनन्त ।। ३ ।। कवि पण्डित कह कह थके ।। आगम अर्थ विचार । तौ पिण तुम अनुभव तिको ।। न सके रसना उवार ।। अनन्त ।। ४ ।। प्रभूने श्रीमुख सरस्वती । देवी आवी आप ।। कहि न सकै प्रभू तुम अस्तुती ।। अलख अजपा जाप ।। अनन्त ।।५।। मन बुध वाणी तो विषै ।। पहुँचे नहीं लगार । साक्षी लोकालोकनो ।। निरविकल्प निराकार ।। अनन्त ।। ६ ।। मातु जसा सिंहरथ पिता ।। तसु सुत अनन्त जिनन्द ।। विनैचन्द अव ओलख्यो । साहिब सहजा नन्द ।। अनन्त ।। ७ ।। इति ।।१४।।

—XXX—

१५-श्रीधमनाथजी का स्तवन

। ढाल ॥ पाज नहीं जोरे दीमें नाहलो ॥ एदेशी ॥

धरम जिनेश्वर मुज हिवडै बसो । प्यारो प्राण समान ॥ कबहूं न बिसरूं हो चितारूं सही । सदा अखंडित ध्यान ॥ धरम० ॥ १ ॥ ज्यूं पनिहारी कुम्भ न वीसरै ॥ नट वो चरित्र निदान ॥ पलक न विसरं हो पदमनि पियु भणी । चकवी न विसरेरे भान ॥ धरम० ॥ २ ॥ ज्यूं लोभी मन धनको लालसा ॥ भोगीके मन भोग ॥ रोगी के मन माने औषधी ॥ जोगीके मन जोग ॥ धरम ॥ ३ ॥ इणपर लागी हो पूरण प्रीतडो ॥ जाव जीव परियंत ॥ भव भव चाहूं हो न पड़े आंतरो भव भंजन भगवन्त ॥ धरम० ॥ ४ ॥ काम क्रोध मद मच्छर लोभ थी ॥ कपटी कुटिल कठोर ॥ इत्यादिक अवगुण कर हूं भर्यो ॥ उदै कर्म केरे जोर ॥ धरम० ॥ ५ ॥ तेज प्रताप तुमारो प्रगटै । मुज हिवड़ा मेरे आय ॥ तो हूं आतम निज गुण

संभालनै अनन्त बली कहिवाय ॥ धरम० ॥ ६ ॥ भानू नृप सुव्रता जननी तणो ॥ अंग जात अभिराम । विनैचंद नैरे बल्लभ तू प्रभू ॥ सुध चेतन गुण धाम ॥ धरम० ॥ ७ ॥ इति ॥ १५ ॥

१६-श्री शांतिनाथ स्वामी का स्तवन

॥ ढाल ॥ प्रभूजी पधारो हो नगरी हमतणी ॥ एदेशी ॥

शांति जिनेश्वर साहिब सोलमों शान्तिदायक तुम नाम हो ॥ सोभागी ॥ तन मन बचन सुध कर ध्यावता । पूरै सघली आस हो ॥ सोभागी ॥ १ ॥ बिश्व सैन नृप अचला पटरानी ॥ तसु सुत कुल सिणगार हो ॥ सोभागी ॥ जन मति शांति करी निज देसमें ॥ मरी मार निवार हो ॥ सोभागी ॥ २ ॥ बिघन न व्यापे तुम सुमरन कियां । नासे दारिद्र दुःख हो ॥ सोभागी ॥ अष्ट सिद्धि नव निद्धि मिलै ? प्रगटै सवला सुवख हो ॥ सौभागी ॥ ३ ॥ जेहने सहायक शान्ति जिनंद तूं ॥ तेहनै कमीय न काय हो

बिमल विज्ञान विलासी ॥ साहिब सीधौ० ॥ १ ॥
तू चेतन भज अरह नाथने ते प्रभु त्रिभुवन राय॥
तात श्रीधर सुदर्शण देवी माता॥ तेहनों पुत्र
कहाय॥ साहिब सीधौ० ॥ २ ॥ क्रोड़ जतन
करता नहीं पामें ॥ एहवी मोटी माम॥ तें जिन
भक्ति करो नें लहिये ॥ मुक्ति अमोलक ठाम॥
साहिब० ॥ ३ ॥ समकित सहित किया जिन
भगती॥ ज्ञान दरसन चारित्र ॥ तप वीरज उप-
योग तिहारा प्रगटे परम पवित्र । साहिब० ॥४॥
सो उपयोगी सरूप चिदानन्द जिनवरने तू एक।
द्वैत अविद्या विभ्रम मेटौ । बाघ शुद्ध विवेक ॥
साहिब० ।५॥ अलप अरूप अखण्डित अविचल
अगम अगोचर आपे ॥ निर विकल्प निकलंक
निरंजन॥ अदभुद जोति अमायें॥ साहिब ॥ ६ ॥
ओलख अनुभव अमृत याकौ ॥ प्रेम सहित नित
पीजे ॥ हूं तू छोड़ विनंचन्द अंतस ॥ आतम राम
रमीजे ॥ साहिब सीधौ ॥ ७॥ इति॥ १८ ॥

१९-श्रीमल्लिनाथ स्वामीजीको स्तवन

॥ ढाल लावणी ॥

मल्लि जिन बाल ब्रह्मचारी ॥ कुम्भ पिता पर भावती मइया तिनकी कूंवारी ॥ टेर ॥ मानो कूंख कंदरा मांही उपना अवतारी । मालती कुसुम मालनी वांछा जननी उरधारी ॥म०॥ १॥ तिणथी नाम मल्लि जिन थाप्यो ॥ त्रिभुवन प्रिय कारी ॥ अद्भुत चरित तुम्हारा प्रभुजी वेद धर्यो नारी ॥ म० ॥ २ ॥ परणन काज जान सज आए । भूपति छः भारी । मिहिला पुरी घेरि चौतरफा सेना विस्तारी ॥ म० ॥ ३ ॥राजा कुम्भ प्रकाशी तुम पै । बीतक बिधिसारी छहुँ नृप जान सजी तो परनन आया अहंकारी ॥म० ॥ ४॥ श्री मुख धीरप दीघि पिताने । राख्यो हुशियारी ॥ पुतली एक रची निज आकृत । थोथी ढकवारी ॥ म० ॥ ॥ ५ ॥ भोजन सरस भरी सा पुतली ॥ ओजिण सिणगारी ॥ भूपति छहूँ बुलाया मन्दिर ॥ विच

बहु किना पारी ॥ म० ॥ ६ ॥ पुतली देख छहूँ नृप मोह्या। अवसर विचारो ॥ ढाक उघार लीनो पुतली को ॥ भवकयो अतिभारो ॥ म० ॥ ७ ॥ दुसह दुर्गन्ध सही न जावे, ऊठ्या नृपहारो ॥ तब उपदेश दियो श्रीमुख सूं, मोह दसा टारी ॥ म० ॥ ८ ॥ महा असार उदारक देहो । पुतली इव प्यारी ॥ संग किया पटकं भव दुःखमें, नारि नरक वारी ॥ म० ॥९॥ नृप छहूँ प्रति बोधे मुनि होय॥ सिद्धगति सभारी ॥ विनैचन्द चाहत भव भवमें ॥ भक्ति प्रभू थारी ॥ म० ॥ १० ॥ इति ॥ १९ ॥

२०-श्रीमुनिसुव्रतस्वामीका स्तवन

॥ ढाल ॥ चेतरे चेतरे मानवी ॥ एदेशी ॥

श्रीमुनिसुव्रत साहिवा । दीन दयाल देवां तणा देव कं ॥ तारण तरण प्रभू तो भणी । उज्वल चित्त सुमरूं नितमेव कं ॥ श्री मुनि सुव्रत साहिवा ॥ १ ॥ हूं अपराधी अनादिको ॥ जनम जनम गुना किया भरपूर कं ॥ लूटिया प्राण छं

कायना ।। सेविया पाप अठार करू रके । श्रीमुनि० ।। २ ।। पूरव अशुभ करतव्यता ।। ते हमना प्रभू तुम न विचारकै।। अधम उधारण विरुद छे ।शरण आयो अब कीजिये सारकै ।। श्रीमुनि० ।। ३ ।। किंचित पुन्य परभावथी ।। इण भव ओलिख्यो श्रीजिन धर्मकै ।। निवृतूं नरक निगोद थी ।। एहवी अनुग्रह करो परब्रह्मकै ।। श्रीमुनि० ।। ४ ।। साधु-पणो नहि संग्रह्यो ।। श्रावक व्रत न कीया अंगी-कारकै। आदरया तो न अराधिया । तेहयो रुलियो अनन्त संसारकै ।। श्रीमुनि० ।। ५ ।। अब समकित व्रत आदरयो।। तदपि अराधक उतरूं भव पारकै।। जनम जीतब सफलो हुवैं ! इणपर विनवूं वार हजारकै ।। श्रीमुनि० ।। ६ ।। सुमति नराधिप तुम पिता ।। धन धन श्री पदमावती मायकै।। तसु सुत त्रिभुवन तिलक तूं । वदत विनैचन्द सीस नवायकै ।। श्रीमुनि० ।। ७ ।।

—※—

२१-श्रीनेमनाथजीका स्तवन

॥ ढाल ॥ मुणियोरे बाबा कुटिल मकारी तोता ले गई॥

सुज्ञानी जीवा भजले जिन इक वीसमों ।।टेर।।
विजय सेन नृप विप्राराणी । नेमी नाथ जिन जायो । चौसठ इन्द्र कियो मिल उत्सव । सुर नर आनंद पायोरे ।। सुज्ञानी० १ ।। भजन किया भव भवना दुष्कृत । दुक्ख दुभाग मिट जावे ।। काम क्रोध मद मच्छर त्रिसना । दुश्मन निकट न आवेरे ।। सु० ।। २ ।। जीवादिक नव तत्व हिये धर । ज्ञेय हेय समझीजे ।। तीजो उपादेय ओलखने । समकित निरमल कीजेरे ।। सुज्ञा० ।। ३ ।। जीव अजीव बंध एतीनूं । ज्ञेय जथारथ जानो ।। पुन्य पाप आश्रव पर हरिये । हेय पदारथ मानोंरे ।। सुज्ञानी० ।। ४ ।। संवर मोक्ष निर्जरा निज गुण । उपादेय आदरिये ।। कारण कारज समझ भली विधि । भिन भिन निरणो करियेरे ।। सुज्ञानी० ।। ५ ।। कारण ज्ञान सरूपी

जियको । कारज क्रिया पसारो ॥ दोनूं की साखी सुध अनुभव ॥ आपो खोज निहारो रे ॥ सुज्ञानी० ॥ ६ ॥ तू सो प्रभू प्रभू सो तू है । द्वैत कल्पना मेटो ॥ शुध चेतन आनंद विनैचन्द । परमातम पद भेटोरे सुज्ञानी० ॥ ७ ॥

२२-श्रीअरिष्टनेम प्रभुका स्तवन

॥ ढाल ॥ नगरी खूब बणी छै जी ॥ एदेशी ॥

श्री जिनमोहन गारो छै । जीवन प्राण हमारा छै ॥ टेर ॥ समुद्र विजै सुत श्री नेमीश्वर । जादव कुलको टीको ॥ रतन कुक्ष धारनी सेवा देवी ॥ जेहनो नंदन नीको ॥ श्री० ॥ १ ॥ सुन पुकार पशुकी करुणा कर ॥ जानिजगत सुख फीको ॥ नव भव नेह तज्यो जोवन में ॥ उग्रसैन नृप धीको ॥ श्री० ॥ २ ॥ संहस पुरुष सो संजम लीधो । प्रभुजी पर उपकारी ॥ धन धन नेम राजुलकी जोड़ी महा बालब्रह्मचारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चोधानंद सरुपानंद में । चित एकाग्र लगायो ॥

आतम अनुभव दशा अभ्यासी । शुक्ल ध्यान निज ध्यायो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पूर्णानंद केवली प्रगटे । परमानंद पद पायो ॥ अष्टकर्म छेदी अलवेसर । परमानंद समायो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नित्यानंद निराश्रय निश्चल । निर्विकार निर्वाणी ॥ निरांतक निरलेप निरामय । निराकार वरणानी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ एहवोज्ञान समाधि संयुक्तो । श्री नेमीश्वर स्वामी ॥ पूरण कृपा विनैचंद प्रभूकी । अबते ओलखपामी ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥

२३-श्रीपार्श्वनाथजीका स्तवन

॥ ढाल ॥ जीवरे तीन तणो कर संग ॥ ए देशी ॥

जीवरे तू पार्श्व जिनेश्वर वन्द ॥ टेर ॥ अस्वसेन नृप कुल तिलोरे ॥ वामा दे नौनंद ॥ चिंतामणि चित्तमें वसै तो दूर टले दुख द्वन्द ॥ जीवरे० ॥ १ ॥ जड़ चेतन मिश्रित पणेरे ॥ करम शुभा शुभयाय ॥ ते विभ्रम जग कलपनारे ॥ आतम अनुभव न्याय ॥ जीवरे० ॥ २ ॥ पैहमी भय माने

जथारे। सूने घर बैताल ।। त्यों मूरख आतम विषैरे। माड्यो जग भ्रम जाल ।। जीवरे० ।। ३ ।। सरप अंधारै रासडीरे। रूपो सीप मझार। मृग तृषनः अम्बुज मृषारे। त्यों आतम संसार ।। जी० ।। ४ ।। अग्नि विषै ज्यों मणि नहीं रे। सींग-शशै सिर नाहिं। कुसुम न लागै व्योम मेरे। ज्यूं जग आतम मांहि ।। जी० ।। ५ ।। अमर अजौनी आतमारे। है निश्चै तिहुं काल ।। बिनैचंद अनुभव जागोरे। तू निज रूप सम्हाल ।। जीवरे० ।। ६ ।। इति ।। २३ ।।

२४-श्रीमहावीर प्रभुका स्तवन

।। ढाल ।। आनवकार जपो मन रगे ।। एदेशी ।।

धन २ जनक सिद्धारथ राजा। धन त्रसलादे मातरे प्राणी। ज्यां सुत जायो गोद खिलायो। वर्धमान विख्यातरे प्राणी। श्री महावीर नमो वरनाणी। शासन जेहनो जाणरे ।। प्रा० १ ।। प्रवचन सार विचार हियामें। कीजै अरथ प्रमा–

रणरे ।। प्रा० ।। श्री० ।। २ ।। सूत्र विनय आचार तपस्या । चार प्रकार समाधिरे ।। प्रा० ।। ते करिये भव सागर तरिये । आतम भाव अराधिरे ।। प्रा० ।। श्री० ।। ३ ।। ज्यों कञ्चन तिहुं काल कहीजे । भूषण नाम अनेकरे ।। प्रा० ।। त्यों जगजीव चराचर जोनी । है चेतन गुन एकरे ।। प्रा० ।। श्री० ।। ।। ४ ।। अपणो आप विषै थिर आतम सोहं हंस कहायरे ।। प्रा० ।। केवल ब्रह्म पदारथ परिचय ।। पुद्गल भरम मिटायरे ।। प्रा० ।। श्री० ।। ५ ।। शब्द रूप रस गंध न जामें, ना सपरस तप छाहीरे ।। प्रा० ।। तिमर उद्योत प्रभा कछु नाहीं । आतम अनुभव माहिरे ।। प्रा० ।। श्री० । ६ ।। सुख दुख जीवन मरन अवस्था ।। ऐ दस प्राण संघातरे ।। प्रा० ।। इनथी भिन्न विनैचन्द रहिये ।। ज्यों जलमें जलजातरे । प्रा० ।। श्री० ।। ७ ।। इति ।। २४ ।।

—※※—

॥ कलश ॥

चौवीस तीरथ नाम कीरति,
गावतांमन गह गहे ।
क्रुमट गोकुलचन्द नन्दन,
विनैचन्द इणपर कहै ॥
उपदेश पूज्य हमीर मुनिको,
तत्व निज उरमें धरी ।
उगणीस सौ छं के छमच्छर,
चतुर्विशति स्तुति इम करी ॥

—✲✲—

अथ स्तवन

धम्मो मंगल महिमा निलो, धर्म समो नहिं कोय । धर्म थकी नमें देवता, धर्म शिव सुख होय ॥ ध० ॥ १ ॥ जीव दया नित पालिये, संयम सतरे प्रकार । बारा भेदें तप तपे, धर्म तणो ये सार ॥ ध० ॥ जिम तरुवरने फूलड़े, भमरो रस

ले जाय । तिम सन्तोषे आतमा, फूलने पीड़ा न थाय ॥ ध० ॥ ३ ॥ इण विध विचरे गोचरी, वहोरे सूजतो अहार । ऊंच नीच मध्यम कुलें, धन्य ते अणगार ॥ ध० ॥४॥ मुनिवर मधुकर सम कह्या, नहि तृष्णा नहि लोभ । लाधो भाडो दिये देहने, अण लाधा संतोष ॥ ध० ॥ ५ ॥ अध्ययन पहले दुम्म पुप्फिए, सखरा अर्थ विचार । पुण्य कलश शिष्य जेतसी, धर्म जय जयकार ॥ ध०॥६॥

—※※—

अथ सोले जिन स्तवन लिख्यते

श्रीनवकार मन्त्रीजीरो ध्यानधरो ॥ एहीज देसी ॥ श्रीरिषव अजीत सम्भव स्वामी, वन्दु अभिनन्दन अन्तरजामी । रागद्वेषदोषख्य करणा, वन्दु शोलेइ जिन सोवन वरणा ॥ वंदु०॥१॥सुमत नाथजीने सू पासो, प्रभु मुगत गया मेट्या गरभा-वासो । मेट दिया जनम ने मरणा ॥ वन्दु० ॥२॥ शीतल श्रीश्रेशजिन दोई, प्रभु चौदे राज राज

जोई । विमल मत निरमल करणा ।।बन्दु० ।। ३ ।। अनन्तनाथ अनन्त ज्ञानी, जासु मनडारी बात नहिं छानो ।। धर्म नाथजीको ध्यान हृदय धरणा ।। बन्दु० ।। ४ ।। सन्तनाथ साताकारो, कुंथुनाथ स्वामोरो जाउं बलिहारी । अरियनाथ आतम उद्धरणा ।।ब०।। ५ ।। महिमा घणी हो नमीनाथ तणी, महावीरजो हुवा सासणारा धणी ।। मे धरिया प्रभुथारां चरणा ।। बन्दु० ।।६।। तीन लोकमें रूप प्रभु पायो, एसो मायडी पुत्र बोजो नहिं जायो । चौसठ इन्द्र भेटे चरणा ।। बन्दु० ।। ७ ।। शरीर संप्रदा सुन्दर सोहै, निरखंतारा नयन तुरन्त मोहे । चतुरारातो चित्त हरणा ।। बन्दु० ।। ८ ।। जगमग दीप रही देही, ज्यांने सुरनर निरख रह्या केई ।। ज्यारी आखां जाणे अमी ठरणा ।। बन्दु० ।। ९।। पग नख सूं मस्तक तांई, ज्यांरो शरीर दखाण्यो सूतर माही ।। च्यारुई संघ लेवे सरणा ।।बन्दु०।। १० ।। समचेई अरज सुणो सोले, रिषं रायचन्द

जो श्रणपरे बोले । म्हारो आवागमन दुख दूरे हरणा ॥ वन्दु० ॥ ११ ॥ संमत अठारे छत्तीसे वरसे, कियो नागोर चौमासो भाव सरसे ॥ भजन किया भव सागर तरणा ॥ वन्दु० ॥ १२ ॥

॥ इति ॥

—¤¤—

अथ श्रीनवकार मन्त्र स्तवन

प्रथम श्रीअरिहन्त देवा ज्यांरो चौसठ इन्द्र करे सेवा ॥ मारग ज्यांरे सुध खरो, श्रीनवकार मन्त्र जीरो ध्यान धरो ॥श्री० ॥१॥ चौतीस अतिसे पैंतीस वाणी. प्रभु सगलारा मनरी जाणी । कर जोड़ी ज्यांसु विनती करो । श्री० ॥ २ ॥ भवजीवाने भगवन्त तारे, पछे आप मुगत माहे पाउधारे । सकल तीर्थं करनो एकसिरो ॥ श्री० ॥ ६ ॥ पनरे भेदेसिद्ध सिधा, ज्यां अष्टकर्मनि खय कीधा ॥ शिव रमणीने वेग वरो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ चौदेई

राजरे ऊपर सही, जठे जनम जरा कोई मरण नहीं ।। ज्यांरी भजन कियां भवसागर तीरो।।श्री०।। ।। ५ तीजे पद आचारज जाणी, जिणरी वल्लभ लागे अमृत वाणी ।। तन मन सु ज्यांरी सेव करो ।। श्री० ।। ६ ।। संघ माहे सोभे स्वामी, जिके मोक्ष तणा हुए रह्या कांमी ।। ज्याने पुज्या म्हारो पाप झरो ।। श्री० ।। ७ ।। उपाध्याजीरो बुद्धि भारी, ज्यां प्रति बुज्या बहु नर नारी । सूत्र अरथ जे करे सखरो ।। श्री० ।। ८ ।। गुण पंच बीसे कर दिपे, ज्यांसु पाखंडी कोई नहीं जीपे ।। दूर कियो ज्यां पाप परो ।। श्री० ।। ६ ।। पंचमें पद साधुजीने पुजो, यां सरीखो नजर न आवे दूजो ।। मिटाय देवे ते जनम जरो ।। श्री० ।। १० ।। जो आत्मारा सुख चावो, तो थें पांच पदांजीरा गुण गावो । क्रोड़ भवारा करम हरो ।। श्री० ।। ११ ।। पूज्य जेमल जीरे प्रसादे जोड़ी, सुणतां तुटे करमारो कोडी । जीव छकायारा जतन करो ।। श्री० ।।१२।।

शहरे बीकानेर चौमासो, रिपरायचन्द्रजी इम भासो। मुक्ति चाहो तो धरम करो ॥ श्री० ॥ १३

—※※—

अथ भरत बाहुबलनी सज्झाय लिख्यते

राज तणारे अति लोभिया, भरत बाहू बल भुंजेरे॥ मूठ उपाडी मारवा, बाहुबल प्रति बुझेरे॥ वीरां म्हारा गज थकी उतरोरे, गज चढ्यां केवल न होसीरे। बंधव गज थकी उतरोरे ॥वी० ॥१॥ ब्राह्मी सुन्दरी इम भावेरे। रिषब जिणेश्वर मोकली, बाहुबल तुम पासेरे ॥ वी० ॥ २ ॥ लोच करी संजम लियो, आयो वलि अभिमानोरे ॥ लघु बन्धव वान्दु नहीं, काउ सग्ग रह्या, सुभ ध्यानोरे ॥ वी० ॥ ३ ॥ वरस दिवस काउ सग्ग रह्या, वेलड़ियां विटाणा रे॥ पक्षीमाला मांडिया, सीत ताप सुकारणा रे॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी वचन सुणीकरी, चमक्या चित्त मभारो रे। हय गय रथ पायक तज्या, पिण चढियो अहंकारो रे॥

बी० ॥ ५ ॥ वैरागे मन वालियो, मुक्यो निज अभिमानो रे । चरण उठायो वांदवा । पाम्या केवल ज्ञानो रे ॥ बी० ॥ ६ ॥ पहुता केवली परखदा, बाहूबल रिषरायो रे । अजर अमर पदवी लही, समय सुन्दर वंदे पायो रे ॥ बी० । ७ ॥

—※※—

छ सवरण सज्झाय लिख्यते

श्रीवीर जिणेश्वर गौतमने कहे, संवर धरतारे सहुजन सुख लहे (त्रोटक छन्द) सुख लहे संवर, कहें जिनवर, जीव हिंस्सा टालिये । सुक्षम बादर त्रस थावर सर्व प्राणी पालिए ॥ मन वचन काया धरो समता ममता कछु न आणिए । सुन वछ गोयम वीर जंपे, प्रथम संवर जाणिए ॥ १ ॥ बीजे संवर जिणवर इम कहे, साचो बोल्यारे सहु जन सुख लहे (त्रो० छ०) सुखलहे साचो सुजस सगले, सत्य वचन संभारिये ॥ जहां होय हिंसा जीव केरी, तेह भाषा टालिए ॥ असत्य

टाली सत्य आगममन्त्र नवकार भाविए ॥ सुण वछ गोयम वीर जंपे, जीभ जनन कर राखिए ॥ २ ॥ तीजे संवर घर बाहेर सही, अदत्त परायोरे लेतां गुण नहीं (ओ० छ०) गुण नहीं लेतां अदत जोतां दूर परायो परिहरो। निज राज दण्डे लोक भण्डे, इसो भंडण कांई करोजी। इसो जाण मन विवेक आणो, संचयोज लाधे आपणो। सुण वछ गोयम वीर जंपे, नहीं लीजे पर थापणो ॥ ३ ॥ चौथेसंवर चौथो व्रत धरो, सियल सघलेरे अंगे अलंकरो, (ओ० छ०) आलंकरो अंगे सियल सघले, रंग राचो एसही ॥ जुगमाहे जोतां एह जालम और उपमाको नहीं ॥ एसो जाण तुम नार पराई, रिखेज निरखो नेणसुं ॥ सुन वछ गोयम वीर जंपे, कछु न कहिए वेणसुं जी ॥ ४ ॥ पचमें संवर परिग्रह परिहरो, मूरख मायारे ममता मत करो (ओ० छ०) मत करो ममता दिन रेण रलतां, जोय तमासो एवडो ॥ मणी रत्न कंचन

क्रोड़ हुवे तो तृपत न थाए जोवडो। होय जहां तहां लाभ बहुलो, लोभ वाढे अति बुरो ।। सुण वछ गोयम वीर जंपे, त्रसणा घेटो परिहरो ।।५।। छट्ठे सवर छठ्ठो व्रत धरो, रात्रि भोजन भविपण परिहरो (त्रो० छ०) परिहरो भोजन रयणी केरो, प्रत्येक पातिक एहुनो। संसार रुलसी दुःख सहसी, सुख टलसी देहनो। इसो जाण संवेग श्रावक मूल गुण व्रत आदरो। सुण वछ गोयम वीर जंपै, शिव रमणी वेगो वरो ।।६।।

-xxx-

अथ कामदेव श्रावकनी सज्झाय लिख्यते

श्रावक श्री बीरना चम्पानो वासीजो। ए आंकड़ा ।। एक दिन इन्द्र प्रशंसियोजो, भरिये सभारे माय ।। दढ़ताई कामदेवनीजो, कोई देव न सके चलाय ।। श्रावक० ।। १ ।। सरद्यो नहीं एक देवतांजो, रूप पिशाच बनाय ।। कामदेव श्रावककनेजो, आयो पोषदसालरे माय ।। श्रा० ।।

२ ॥ रूप पिशाचनो देखनेजी, डर्‌णो नहीं रे लिगार ॥ जाण्यो मिथ्याती देवताजी, लियो शुद्ध मन ध्यान लगाय ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ अभोरे कामदेवजी, तोने कलपे नहीं छे कोय ॥ थारो धर्मना छोड़णोजी, पिणहं छुड़ास्युं तोय ॥ श्रा० ४ ॥ हस्तीनो रूद वेकरे कियोजी, पिशाच पणो कियो दूर ॥ पोषद शालामें आयनेभी, बोले वचन करूर ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ मन माहें नहि कंपियोजी हस्ती सुण्डमें झाल ॥ पोषद शाला बारे लेईजी, दियो अकाशे उछाल ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ दन्त सुलमे झेलने जी, कांवलनीपरे रोल ॥ उजल वेदना उपनी जो, नहि चलियो ध्यान अडोल ॥ श्रा० ॥ ७ ॥ गजपणो तज सर्प भयोजी, कालो महा विकराल ॥ डंक दियो कामदेवने जी, क्रोधी महा चण्डाल ॥ ॥ श्रा० ॥ ८ ॥ अतुल वेदना उपनोजी, चलियो रहीं तिल मात ॥ सूर तहीं प्रगट थयो जी, देवता रूप साक्षात ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ कर जोड़ीने इम

कहेजी, थांरा सुरपति किया हैं वखाण ॥ म्हें नहि सरध्यो सूढ़ मतीजी, थांने उपसर्ग दीनो आण ॥ आ० ॥ १० ॥ तन मन कर चलिया नहींजी, थे धर्म पायो परमाण ॥ खमजो अपराध ते माहरोजी इम कहि गयो निज ठाण ॥ आ० ॥ ११ ॥ वीर जिणन्द समोसर्या जी, कामदेव वन्दण जाय ॥ वीर कहे उपसर्ग दियोजी, तीने देव मिथ्याती आय ॥ आ० ॥ १२ ॥ हन्ता सामी सांच छे जी, तद समण समणी बुलाय ॥ घर बेठ्यां उपसर्ग सह्योजी, इम परशंसे जिनराज ॥ आ० ॥ १३ ॥ वीस वरस लग पालियोजी, श्रावकना व्रत बार ॥ पहिले सरगे उपनाजी, ववजासी भवपार ॥ आ० ॥ १४ ॥ आ दृढ़ताई देखनेजी, पालो श्रावक धर्म ॥ कामदेव श्रावकनी परेजी, थे पामो शिव सुख धर्म । आ० ॥ १५ ॥ मुरधर देश सुं आएनेजी, जेपुर कियो है चौमास ॥ अष्टादश छियासीयेजी रिष पुसालचन्दजी कियो प्रकाश ॥ आ० ॥ १६ ॥

✲✲

अथ पच तीर्थनो स्तवन

तुम तरण तारण, भव निवारण भविकमन आनन्दनं ।। श्रीनाभिनन्दन, जगतवन्दन, श्रीआदि नाथ निरंजन ।। १ ।। श्रीआदिनाथ अनाद सेऊं, भाव पद पूजा करूं ।। कैलाश गिरि पर रिषभ जिनवर, चरण कमल हिवडै धरूं ।। २ ।। ध्यान धुपे मन पुष्पे, अष्ट करम-विनाशनं ।। क्षमा जाप सन्तोष सेवा, पूजूं देव निरंजनं ।।३।। तुम अजित नाथ अजीत जीते, अष्ट कर्म महा बली ।। प्रभु विरद सुण कर शरण आया, कृपा कीजै नाथ जी ।।४।।तुम चन्द्र पूरणचन्द्र लंछन,चन्द्रपुरी परमेश्वरं।। महासेन नन्दन जगत वन्दन, चन्द्रनाथ जिणेश्वरं ।। ५ ।। तुम बाल ब्रह्म विवेकसागर भविक मन आनन्दनं ।। श्री नेमिनाथ पवित्र जिनवर, तिमिर पाप विनाशनं ।। ६ ।। जिन तजी राजुल राज कन्या, काम सेना वश करी ।। चारित्र रथपर चढ़ दूलह, शाम शिव सुन्दर वरी ।। ७ ।। कंदर्प द

सुसर्प लंछन, कमठ संठ निरगल कियो ॥ श्री पार्श्वनाथ सपूज्य जिनवर, सकल शीघ्र मंगल कियो ॥ ८ ॥ तुम कर्म घाता मोक्ष दाता, दीन जान दया करो ॥ सिद्धार्थं नंदन जगत-वन्दन महावीर मया करो ॥ ६ ॥

—✲✲—

अथ चार सर्णाको स्तवन

हिरद धारोजे, हो भवियण, मंगलीक सरणा च्यार ॥ ए टेक ॥ पो हो उठी नित समरीजे, हो भवियण ; मंगलीक शरणा चार, आपदा टले सम्पदा मिले, हो भवियण दौलतना दातार ॥ १॥ अरिहन्त सिद्ध साधु तणा ॥ हो भवि० ॥ केवली भाषित धरम, ए चार जपतां थकां ॥ हो भ० ॥ तुटे आठई करम ॥ हिरदै० ॥ २ ॥ ए शरणा सुख कारीया ॥ हो भ० ॥ ए शर्णा मंगलीक ॥ ए शर्णा उत्तम कह्या ॥ हो भ० ॥ ए शरण तहतीक ॥ हिरदै० ॥ ३ ॥ सुखसाता वरते घणी ॥

हो भ० ।। जे ध्यावे नर नार । पर भव जातां जीवने ।। हो भ० ।। एह तणो आधार ।। हिरदे० ।। ४ ।। डाकण साकण भूतणी ।। हो भ० ।। सिंह चीताने सूर । वैरी दुश्मन चोरटा ।। हो भ० ।। रहे सदाई दूर ।। हिरदे० ।। ५ ।। निशि दिन याने ध्यावतां ।। हो भ० ।। पामें परम आनन्द, कमी नहीं कोणी वातरी ।। हो भ० ।। सेव करे सुर इन्द्र ।। हि० ।। ६ ।। गेले घाटे चालेता ।। हो भ० ।। रात दिवस मझार ।। गावां नगरां विचरतां ।। हो भ० ।। विघन निवारण हार ।। हि० ।। ७ ।। इन सरिसा सरणा नहीं ।। हो भ० ।। इण सरिसो नहि नाव ।। इण सरिसो मन्त्र नहीं ।। हो भ० जपतां याथे आव ।। हि० ।। ८ ।। राजों शरणारी आसता ।। हो भ० ।। नेड़ोन आवे रोग ।। थरते आणन्द जीवने ।। हो भ० ।। एह तणो संयोग ।।हि०।।६।। मन चिन्त्या मनोरथ फले ।।हो भ०।। निश्चय फल निरवाण ।। कुमी नहि देवलोक में ।।

हो भ० ।। मुक्त तणा फल जाण ।। हि० ।। १० ।।
संवत अठारे वावन्ने ।। हो० ।। पाली सेखे
काल ।। रिष चौथमल जी इम कहे ।। हो भ० ।।
सुणजो बाल गोपाल ।। हि० ।। ११ ।। इति ।।

—¤¤—

चित्त संभूतीकी सज्झाय

चित्त कहै ब्रह्मराय ने, कछु दिल माहि आणो
हो । पूरब भवरी प्रीतड़ी, तुमे मूल न जाणो
हो ।। बंधव बोल मानो हो ।। १ ।। कतवारीरा
सूत ध्यों, सांधो दे आणो हो ।। जाती समरण
ज्ञान थी, पूर्व भवजाणो हो ।। बं० ।। २ ।। देश
देशायण राजा घरे, पहले भव दासे हो ।। बीज
भव कालिजरे, थया मृग वन वासे हो ।। सं० ।।३।।
तीजे भव गगा तटे, आंपे हंसला हुता हो ।। चौथे
भव चण्डालरे, घर जन्म्यापूता हो ।। बन्धव०।।४।।
चित्त संभूत दोनों जिण गुण बहुला पाया हो ।।
शरणे आयो आपणो, तिण पंडित पढ़ाया हो ।।

हो भ० ।। जे ध्यावे नर नार । पर भव जातां जीवने ।। हो भ० ।। एह तणो आधार ।। हिरदे० ।। ४ ।। डाकण साकण भूतणी ।। हो भ० ।। सिंह चीताने सूर । वैरी दुश्मन चोरटा ।। हो भ० ।। रहे सदाई दूर ।। हिरदे० ।। ५ ।। निशि दिन याने ध्यावतां ।। हो भ० ।। पामें परम आनन्द, कमी नहीं कीणी वातरी ।। हो भ० ।। सेव करें सुर इन्द्र ।। हि० ।। ६ ।। गेले घाटे चालंता ।। हो भ० ।। रात दिवस मझार ।। गावां नगरां विचरतां ।। हो भ० ।। विघन निवारण हार ।। हि० ।। ७ ।। इन सरिसा सरण नहीं ।। हो भ० ।। इण सरिसी नहि नाव ।। इण सरिसो मन्त्र नहीं ।। हो भ० जपतां वाधे आव ।। हि० ।। ८ ।। राखों शरणारी आसता ।। हो भ० ।। नेड़ोन आवे रोग ।। वरते आणन्द जीवने ।। हो भ० ।। एह तणो संयोग ।।हि०।।६।। मन चिन्त्या मनोरथ फले ।।हो भ०।। निश्चय फल निरवाण ।। कमी नहि देवलोकमें ।।

हो भ० ॥ मुक्त तणा फल जाण ॥ हि० ॥ १० ॥ संवत अठारे बावन्ने ॥ हो० ॥ पाली सेखे काल ॥ रिष चौथमल जी इम कहे ॥ हो भ० ॥ सुणजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥ ११ ॥ इति ॥

—☼☼—

चित्त संभूतीकी सज्झाय

चित्त कहै ब्रह्मराय ने, कछु दिल माहि आणो हो । पूरव भवरी प्रीतड़ी, तुमे मूल न जाणो हो ॥ बंधव बोल मानो हो ॥ १ ॥ कतवारीरा सूत ध्यों, सांधो दे आणो हो ॥ जाती समरण ज्ञान थो, पूर्व भवजाणो हो ॥ बं० ॥ २ ॥ देश देशायण राजा घरे, पहले भव दासे हो ॥ बीज भव कालिंजरे, थया मृग वन वासे हो ॥ सं० ॥३॥ तीजे भव गगा तटे, आपे हंसला हुता हो ॥ चौथे भव चण्डालरे, घर जन्म्यापूता हो ॥ बन्धव०॥४॥ चित्त संभूत दोनों जिणा गुण बहुला पाया हो ॥ शरणे आयो आपणे, तिण पंडित पढ़ाया हो ॥

वन्ध० ॥ ५ ॥ राजा नगरी थी काढ़िया, आपे मरणा मंडिया हो ॥ वन माहें गुरू उपदेश थी, आपां घर छाड़िया हो ॥ व० ॥ ६ । संयमले तपस्या करो, लब्धधारी हूता हो । गावां नगरां विचरता, हस्तीनापुर पहूंता हो ॥ व० ॥ ७ ॥ निमुचि ब्राह्मण ओलख्या नगरी थी कंढाव्या हो ॥ कोप चढ्या बेहूं जिणा, सथारा ठाया हो ॥ बंधव ॥८॥ धुवोंयें कीधो लब्ध थी, नगरी भय पाया हो॥ चक्रवर्त निज परिवार सुं आवि तुरत खमाव्या हो ॥ वं० ॥ ९ ॥ रत्ना राणी रायनो, आवी शोश नमायो हो पग पुज्यां के सांथको थांरे मन भाया हो ॥ वं० ॥ १० ॥ निहाणो तुमे किया, तपनो फल हारय्यो हो । म्हें थांने वन्धव वरजियो, तुमे नाहो विचारय्यो हो ॥ वं० ॥ ११ ॥ ललनी गुलनी वीमाणमें भव पांचमें यथा हो । तिहां थी चवी करी कपिलापुर काया हो ॥ वं० ॥ १२ ॥ हम तिहां थो चवी करी, गाथापती हो । संयम भार

लेई करी ।। तासु मिलणने आया हो ।।वं०।।१३।। चक्रवर्त पदवी थें लीवो, रिद्ध सगली पाई हो ।। किधो सोई पामियो, हिवे कमीयन काई हो ।।वं० ।।१४।। समरथ पदवी पामिया, हिवे जनम सुधारो हो ।। संसारना सुख कारमा, विखियां रसवारो हो ।।वं०।।१५।। राय कहे सुण साधुजी, कछु और बताओ हो ।। आरिद्ध तो छुटे नहीं, पछे थें पीसतासो हो ।। वं० ।। १६ ।। थें आवो म्हारा राजमें, नर भव सुख माणो हो ।। साध पणा मांहो छे की सो. नीत मांगने खाणो हो ।। वं० ।। १७। चित्त कहै सुणो रायजी, इसडि किम जाणे हो ।। म्हे रिद्ध तो छोड़ी घणी, गिणती कुण आणे हो ।। वं० ।। १८ ।। हूँ आया थांने केणने, आरिद्ध तुमे त्यागो हो ।। वैरागे मन वालने, धर्म मार्ग लागो हो ।। वं० ।।१९।। भिन्न भिन्न भाव कह्या घणा, नहि आयो वैरागे हो।। भारी करमा जीवड़ा, ते किण विध जागे हो ।। वं० ।। २० ।। मिहाणो तुमे

कियो: खट खंडज केरो हो । इण करणी सो जाण जो, थारा नरके डेरा हो ।। वं० ।। २१ ।। पांचु भव भेला किया, आपे दोनो भाई हो ।। हिवे मिलणो छे दोहिलो, जिम पर्वत राई हो ।। वं० ।। २२ ।। ब्रह्मदत पहुंतो नरक सप्तमी, चित्त मुक्त मझारी हो ।। कर जोड़ कवियण कहे, आव गमण निवारी हो ।। वं० ।।२३।।

—❂❂—

अथ जीवापात्री सोरी सज्झाय लिख्यते

जीवा तु तो भोलोरे प्राणी, इम रुलियोरे संसार ।। मोहो मिथ्यातकी नींदमें, जीवा सूतो काल अनन्त ।। भव भव माहे तु भटकियो, जीवा ते साम्भल विरतंत ।। जो० ।। १ ।। ऐसा केई अनन्त जिन हुआ, जीवा उतकृष्टो ज्ञान अगाध ।। इण भव थी लेखो लियो, जीवा कुण बतावे थांरी याद ।। जो० ।। २ ।। पृथ्वी पाणी अग्निमें, जीवा चोथी वाऊ काय ।। एक एक काया मध्यें, जीवा काल

अणन्त गुणी विचार जी० ॥ १० ॥ एकेन्द्री माह्य थी निकल्यो, जीवा इन्द्री पाम्यो दोय। तव पुन्याई ताहारा, जीवा तेथी अनन्ती होय ॥ जी० ॥ ११ ॥ इम तेरन्द्री चोरन्द्री जीवमा, जीवा बे बे लाख ए जात । दु ख दिठा संसारमें, जीवा सुणता अचरज बात ॥ जी० ॥ १२ ॥ जलचर थलचर खेचरु, जीवा उरपुर भुजपुर जात । शीत ताप तृषा सहि, जीवा दुःख सह्या दिनरात ॥ जी० ॥ १३ ॥ इम भमन्ती जीवड़ो, जीवा पाम्यो नर भव सार । गरभावासमें दुख सह्यां, जीवा ते जाणे करतार ॥ जी० ॥ १४ ॥ मस्तक तो हेठो हुवे, जीवा उपर रहे बाहु पाय ॥ आंख्या आडी मुष्टी बेहुं, जीवा इम रह्या भिष्टा घर माय ॥ जी० ॥ १५ ॥ बाप वीरज माता रुद्र, जीवा इसडो लियो थे आहार । मूल गयो जन्म्या पछे जीवा सेवो करे अविचार ॥ जी० ॥ १६ ॥ ऊंट कोड सुई लाल करे, जीवा चांपे रु रु माय । अष्ट

गुणी हुवे वेदना, जीवा गरभा वासारे माय ॥
॥ जी० ॥ १७ ॥ जन्मतां हुवे क्रोड़ गुणी; जीवा
मरता क्रोड़ा क्रोड़ ॥ जनम मरणरा जीवडा जीवा
जाण जो मोटी खोड ॥ जी० ॥ १८ ॥ देश
अनारज ऊपनो, जीवा जीवा इन्द्री हीनो होय ॥
आऊपो ओछो हुवे, जीवा धर्म किसी विध होय ॥
जी० ॥ १९ ॥ कदाचित नर भव पामियो, जीवा
उत्तम कुल अवतार ॥ देही निरोगी पायने,
जीवा यु खोईयो जमवार ॥ जी० ॥ २० ॥ ठग
फांसीगर चोरटा जीवा धीवर कसाईरो न्यात ।
उपजीने मुईजोसी, जीवा एसी न रही काई जात ॥
जी० ॥ २१ ॥ चौदेई राजलोकमें, जीवा जनम
मरणरी जोड़ । खाली वालाग्र मात्राए, जीवा
ऐसी न रही कोइ ठोड़ ॥ जी० ॥ एही जीव
राजा हुवो, जीवा हस्ती बांध्या वार । कवहीक
करमा वसे, जीवा न मिले अन्न उधार ॥ जी०
॥ २३ ॥ इम संसार भमतो थकों, जीवा पाम्यो

समगत सार । आदरीने छिटकाय दीवो, जीवा जाय जमारो हार ।।जी०।। २४ ।।खोटा देवज सर दिया, जीवा लागो कुगुरु केड । खोटा धर्मज आदरी, जीवा किधा चौड गति फेर ।। जीवा० ।। ।। २५ ।। कद हिक नरके गयो, जीवा कदही हुवो तू देव ।। पुन्य पापना फल थकी, जीवा लागी मिथ्यातनी टेव ।। जीवा० ।। २६ ।। ओगाने वले मुमती, जीवा मेरु जेवड़ी लीध । एक ही समकित बिना,जीवा कारज नहि हुवो सिद्ध ।।जी०।।२७।। चार ज्ञान तना धणी, जीवा नरक सातमी जाय । चौदे पुरव नो भोग्यो, जीवा पडे निगोदनी माय ।। जी० ।। २८ ।। भगवन्तनो धर्म पाल्या पछे, जीवा करणी न जावे फोक । कदाचित पड़-वाई हूवे, जीवाअर्ध पुदगल माहि मोक्ष ।। जी० ।। २६ ।। सूक्ष्मने वादर पणे, जीवा मेली, वर्गणा सात । एक पुदगलने प्रावर्तनो, जीवा झीणी घणी छे वात ।। जी० ।। ३० ।। अनन्त जीव मुक्त

गया, जीवा टालो आतम दोष । नहीं गया नहि जावसी, जीवा एक निगोदना मोख ॥ जी०॥३१॥ पाप आलोई आपणा, जीवा अव्रत नाला रोक । तेथी देवलोक जावसो, जीवा पनरे भव माही मोक्ष ॥ जी० ॥ ३२ । एहवा भाव सुणी करो जीवा सर्धा आणी नाह । जिम आयो तिम ही ज गयो, जीवा लख चौरासी मांह ॥ जी० ३३ ॥ कोई उत्तम नर चिंतवे, जीवा जाणे अथीर संसार । साचो मारग सर्धीने, जीवा जाए मुक्त मझार ॥ जी० ॥ ३४ ॥ दान सियल तप भावना, जीवा इणसों राखो प्रेम। क्रोड़ कल्याण छे तेहने, जीवा रिष जेमलजी कहे एम ॥ जीवा० ॥ ३५ ॥

—✲✲—

अथ म्रघापुत्रकी सज्झाय लिख्यते

सुगरीव नगर सुहावणो जी, राजा वलभद्र नाम ॥ तस घरराणी म्रघावती जी, तस नन्दन गुणधाम ॥ ए माता खोण लाखोणी रे जाय ॥१॥

एक दिन बैठा गोखड़े जो, राण्या रे परिवार।
सीसदाजेने रवि तपे जो, दीठा तव अणगार।
ए माता० ॥ २ ॥ मुनि देखी भव सांभाल्योजो,
मन वासियोरे वैराग। हरख धरीने उठिया जो,
लागा माताँजीरे पाय ॥ ए जननी अनुमति दे मोरी
माय ॥ ए माता०॥३॥ तूं सुख माल सुहामणो जो,
भोगो संसार ना भोग जोबन वय पाछी पड़े जब,
आदरजो तुम जोग। रे जाया तुझ विन घड़ीरे
छ मांस ॥ ४ ॥ पाव पलकरी खबर नहीं ऐ माय
करे कालकोजी साज ॥ काल अजाण्यो झड़ पड़े
जी, ज्यों तीतर पर वाज ॥ ए माता खिण ला-
खिणो रे जाय ॥ ५ ॥ रत्न जड़ित घर आंगणाजी
तू सुन्दर अवतार। मोटा कुलरी ऊपनीजी, कांई
छोड़ो निरधार॥ रे जाया तू० ॥ ६ ॥ बांदो घर-
वादी रचिये एमाय, खिणमें खेर थाय, ज्युं
संसारनी सम्प्रदाजी, देखंता या विल जाय ॥ ए
माता० ॥ ७ ॥ पिलंग पथरणो पोढणोजी, तूं

भोगीरे रसाल ।। कनक कचोले जोमणोजी, काछ-
लडोमें आहार ।। रे जाया ।। तू ८ ।। सांयर जल
पिया घणाये माय, चुग्या मातारा थान । तृप्त न
हुवो जीवडोजी, इधक अरोग्या धान ।। ए माता०
।। ९ ।। चारित्र छे जाया दोहिलो जां, चारित्र
खांडानी धार । विन हथियारा भुंजणोजी, औषध
नईहै लिगार ।। रे जाया ।। तु० १० । चारित्र
छे माता सोहयलोजी, चारित्र सुखनोजी खान ।।
चवदेइ राज लोकनाजी, फेरा टालणहार ।। एमाता
।। ११ ।। सियाले सी लागसी जी, उनाले लुरे
वाय ।। चौमासे मेलां कापड़ाजो ए दुख सहयो
न जाय रे जाया० ।। १२ ।। बनमाछे एक मृग-
लोजी, कुंण करे उणरिज सार ।। मृगानी परे
विचरसुं जी, एकलड़ो अणगार ।। ए मांता०
।। १३ ।। मात वचन ले निसरय्याजो, मृघा पुत्र
कुमार । पंच महाव्रत आदरय्या जी, लोधो सयम
भार ।। ए माता० ।। १४ ।। एक मासनी सलेख-

नाजो, उपनो केवलज्ञान । कर्मखपाय मुक्ते गयाजो, ज्यांरालोजे नित प्रति नाम ॥ ए माता० ॥ १५ ॥

सोला सुपन चन्द्रगुप्त राजा दीठा लिख्यते

दोहा– पाडलिपुर नामे नगर, चन्द्रगुप्त तिहां राय सोले सुपना देखिया, पेखिया पोसा माय ॥ १ ॥ तिण कालेने तिण समे, पाँच सहे मुनि परिवार । भद्रबाहु स्वामी समोसरया, पाडलि बाग मझार ॥ २ ॥ चन्द्रगुप्त वांदण गयो, बैठो पर्षदा माय ॥ मुनिवर दीधो देसना, सगलाने हित लाय ॥ ३ ॥ चन्द्रगुप्तराजा कहे, सांभल जो मुनिराय ॥ मैं सोले सुपना लह्या, ज्यांरो अर्थ दीजो समझाय ॥ ४ ॥ वलता मुनिवर इम कहे सांभल तू राजान । सोलां सुपना नो अरथ, इक चित राखो ध्यान ॥ ५ ॥

ढाल—रे जीव विषय न राचिये ॥ ए देशी ॥ दीठो सुपनो पैलड़ो, भांग कल्पवृक्ष डालोरे ॥ राजा दीक्षा लेसी नहिं, इण दुषण पञ्चम का-

लरे ।। चन्द्रगुप्त राजा सुणो । १ ।। कहे भद्रबाहु स्वामी रे, चवदे पूर्वना धणी, चार ज्ञान अभि-रामोरे ।। चन्द्र० ।। २ ।। सूर्य अकाले आथम्यो, दुजे ए फल जोयोरे ।। जाया पांचमे कालमें, ज्याने केवल ज्ञान न होयोरे ।। चं० ।। ३ ।। त्रीजे चन्द्रज चालणी, तिणरो ए फल जोयोरे ।। समाचारी जुइ जुइ, वारोट्या धर्म होसी रे ।। चं० ।। ४ ।। भूत भूतनी दीठा नाचता, चौथेसुपनेराय जोसोरे । कुगुरु कुदेव कुधर्मनी, घणी मानता होसीरे ।। चं० ।। ५ ।। नाग दीठो वारे फणौ, पांचमें सुपने भाली रे ।। केतलाक वरसा पछे, पड़सी वार दुकाली रे ।। चं० ।। ६ ।। देव विमाण वल्यो छठे तिणरो सुणराय भेदोरे ।। विध्याजंगा चारणी, जासी लबद विछेदोरे ।। चं० ।। ७ ।। उगो उकरडो मजे, सातमे काल विमासीरे ।। चारू ही वर्णा मजे, वाण्या जैन धर्म थासीरे ।। चं० ।। ८ ।। हेत कथाने चोपई, स्तवना सिजायने जोडोरे । इणमे—

घणा प्रतिबोधिसी, सूत्रनो रुचि थोडोरे ॥ चं०
॥ ९ ॥ एको न हासी सहु वाणिया जुदो २ मत
जालोरे ॥ खांच करसी आप आपणो, विरला धर्म
रसालोरे ॥ चं० ॥ १० ॥ दीठो सुपने आठमें
आगि आनु चमतकारोरे ॥ अल्प उदोत जिन
धर्मनु, वहु मिथ्यात अंधकारोरे ॥ चं० ॥ ११ ॥
तपस्या धर्म वखाणनी, राग करथ्या होसी भेलारे ॥
ईम कर्त्ता अजांणनो, छता अछती होसे हेलारे ॥
चं० ॥ १२ ॥ समुद्र सुको तिनु दिसे, दषण दिसे
डोहलु पाणी रे ॥ तीन दिस धर्म विछेदहुसी,
दिषण दोहलो धर्म जांणी रे ॥ चं० ॥ १३ ॥
जिहार पांच कल्याण थया, तिहा धर्मरी हाणोरे ।
अर्थ नवमां सुपना तणो होसी एसा अहिनाणोरे ॥
चं० ॥ १४ ॥ सोनारो थाली मजे स्वान खातो
दीठो रे । दसमा सुपनानु अर्थ, सुणराय तुरो
धारोरे ॥ चं० ॥ १५ ॥ ऊंच तणो लक्षमितिका,
नीच तणे घर जासीरे वधसीरे ते चुगल चोरटा,

साहुकार सीदासीरे ।। चं० ।। १६ । हाथी ऊपर वानरो, सुपन अगियारमें दीठोरे ।। मलेच्छराज ऊंचो होसी, असल हिन्दू रहसी हेंठोरे ।। चं० ।।१७।। दीठो सुपने बारमें । समुद्र लोपी कारोरे।। कोई छोर गुरु वापना, हो जासी विकरालोरे ।। च० ।। १८ ।। क्षत्री लांच ग्रहाहुसी, बचन कही नट जासीरे दंगादंगी होसी घणा, विसासघात थासीरे ।। च० ।।१९।। कितला एक साव साधवी, अवेले सी भेषोरे ।। आज्ञा थोड़ी मानसी, सिष दियां करसो द्वेषोरे ।। चं० ।। २० ।। अकल विहुणा बांछसी गुरुआदिकनी घातोरे ।। सिख अवनीत होसी घणा, थोड़ा उत्तम सुपात्रोरे ।। चं० ।। २१ ।। महारथ जुता बाछड़ा, नाने थी धर्म थासीरे ।। कदाचित बूढ़ा करे तो, प्रमाद मांहि पड़जासीरे ।। चं० ।। २२ ।। बालक वय घर छोड़सी, आण वैराग भावोरे ।। लज्जा संयम पालसी बूढ़ा घेठ स्वभावोरे ।। चं० ।। २३ ।। सह

सर्ले नहि बालका धेठा नहि छे बूढ़ा रे ॥ समर
ईम ए भाव छै, प्रर्थ विचारो उडार ॥चां० ॥२४
रत्नज जाधादिठा, चउदमें ते सुपनानो
जोड़ो रे ॥भग्त खेत्रना साध सावधी, हेत मिला
होसी थोड़ो रे ॥ चां० २५ ॥ कलहकारी डंब
कारिया, असमादकारी विशेषो रे ॥ उदगकर
अवनीत ए, रहसी धेठा धेषोरे ॥ चां० ॥ २६
वैराग्य भाव थोड़ो होसी, ध्रव लंगना धारो रे ॥
भली सीख देतां थका, करसी क्रोध अपारो रे ॥
चां० ॥ २७ ॥ प्रशंसा करसी आप आपणी, कपट
वचन बहु गेरी रे ॥ आचार अशुद्धो साधातणी,
उलटा होसी वैरी रे ॥ चां० ॥ २८ ॥ सुद्धामार्ग
परुपता, तिणसु मच्छर भावो रे ॥ निन्दकबहु
साधांतणा, होसी धेठा सभावो रे ॥ चां० ॥ २९ ॥
राय कुमार चढ़ियो पोठीये, सुपन पनरमें देखो रे ॥
गज जिम जिन धर्म छंडने, तेज विनोद धर्म विसे-
षोरे ॥ चं० ॥ ३० ॥ न्याय मार्ग थोड़ा होसी,

नोची गमसी वातो रे ।। कुबुद्धि घणा मानी जसी, लालच ग्राही वरतो रे ।। चं० ।। ३१ ।। वगर मावत हाथो लड़े सुपन सोलमें एहो रे ।। काल पड़सी द्वीड ग्रान्तरा, मांग्या मेहन होसी रे ।। चं० ।।३२।। अकाले वृक्षा होसी, कालवर ससि थोड़ो रे ।। वाट घणी जी वड़सी, तिण ग्रननाहुसो तोलोरे ।। चं० ।। ३३ । बेटा गुरु मावित्रना, करसी भगती थोड़ी रे ।। मा वित्रवात करतां थका, विच माहि लेसी तोड़ीरे ।। चं० ।। ३४ ।। भाई भाई माहोमाहमें, थोड़ो होसी हेतोरे ।। घणी लड़ाइने ईर्षा वधसी एण भर्त क्षेत्रोरे ।। चं० ।। ३५ ।। कोण कायदो थोड़ो होसी. उच्छो होसी तोलो रे ।। घणा राड झगड़ा करे ऊपर ग्राणसी बोलोरे ।। चं० ।। ३६ ।। अर्थ सोल सपना तणु कह्यो भद्रवाहु स्यामो रे।। जिन भाख्यो न हुवे अन्यथा, सूराजा तज कामो रे ।। चं० ।। ३७ ।। एवा सोल सुपना सुणने सिंह जिम पराक्रम करसीरे ।। जिन वचन ग्राराधसी ते

शिव रमणी वरसीरे ॥ च० ॥ ३८ ॥ एवा वचन सुणीराही राय जोड़ा वेहु हाथोरे ॥ वैराग भाव आणी कहि मैं तो सध्यो कृपानाथो रे ॥ चं० ॥ ३९ ॥ राज थापो निज पुत्रने हूं लेसु संयम भारोरे ॥ वलता गुरु इसड़ो कहै. मत करो ढोल लगारोरे ॥ चं० ॥ ४० ॥ पुत्रने राज वेसाडने चन्द्रगुप्त लीधो संयम भारोरे छता भोग छटकायने. दीधो छकाय नेटारोरे ॥ चं० ॥ ४१ ॥ धन करणी साधां तणी. वाणी अमिय समाणीरे ॥ जेनु दरसन देखने घणा प्राणी आतरसीरे ॥ चं० ॥ ४२ ॥ चोखो चारित्र पालिने, सुर पदवी लहि सारोरे ॥ जिन मारग आराधने, करसी खेवो पारोरे । चन्द्र ॥ ४३ ॥ थोथिर मारा संसारनी, आप कह्यो जिन रायोरे । दयाधर्म सुध पालने, अमरपुर मांहा जायोरे ॥ चं० ४४ ॥ धन ववहार सूत्र नोचुत कामजे, भद्रवाहु कियो चोडोरे । तेणा अनुसारे माफिके रिष जेमलजी की धो जोडोरे ॥ चं० ॥ ४५ ॥ इति ॥

स्व. श्री पूज्य पिताजी मंगलचन्दजी म हू
जन्म चैत सुदी १ सं० १९५६ वि०
निर्वाण मि० पोह बदी ८ सं० २०१६ वि०

ॐ
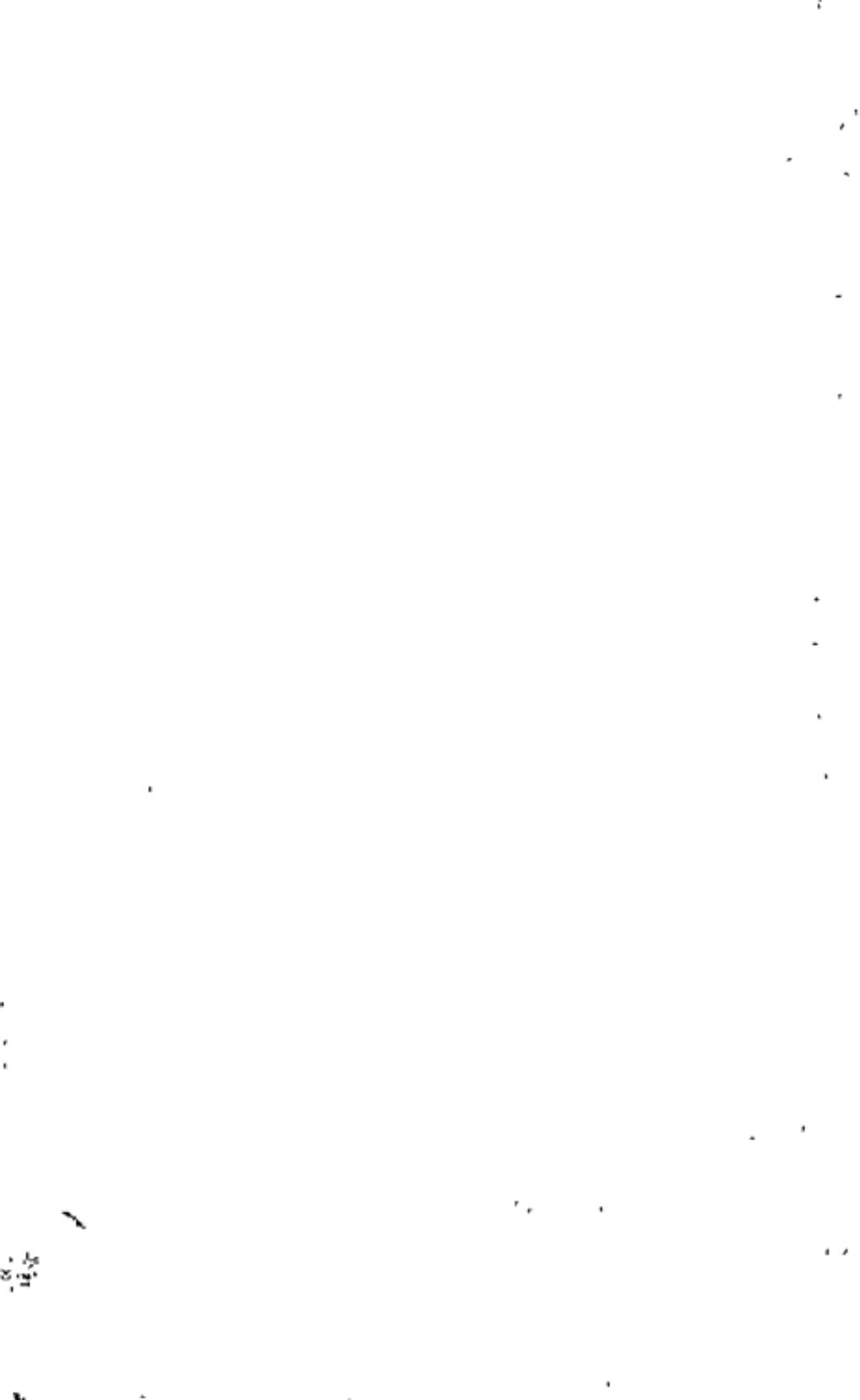
अथ श्रीपुण्यप्रभाविक श्रावक लालाजी साहेब
रणजीत सिंहजी कृत—

श्रीबृहदालोयणा प्रारंभः

दोहा

सिद्ध श्री परमातमा । अरिगंजन अरिहंत ॥
इष्टदेव वंदू सदा भय भंजन भगवंत ॥ १ ॥
अरिहंत सिद्ध समरु सदा । आचारज उवझाय ॥
साधु सकलके चरणकूं । वंदू शीश नमाय ॥ २ ॥
शासन नायक समरिये । भगवंत वीर जिणंद ॥
अलिय विघन दूरे हरे । आपे परमानंद ॥ ३ ॥
अंगूठे अमृत वसे । लब्धि तणा भंडार ॥
श्री गुरु गौतम समरिये । वंछित फल दातार ॥४॥
श्री गुरु देव प्रसादसें । होत मनोरथ सिद्ध ॥

ज्युं घन वरसत वेलि तरु। फूल फलनकी वृद्ध ।।५।।
पंच परमेष्टि देवको । भजनपूर पंचान
कर्म अरिभाजे सवि । होवे परम कल्याण ।। ६ ।।
श्री जिन युगपदकमलमें । मुझ मन भमर वसाय ।
कब ऊगो वो दिनकरु । श्रीमुख दरशन पाय ।।७।।
प्रणमी पदपंकज भणी । अरिगंजन अरिहंत ।
मन करूं हूं जीवनुं । किंचित मुझ विरतंत ।।८।।
प्रारंभ विषय कषाय वश। भमियो काल अनंत ।
लख चोराशी योनिमें अब तारो भगवंत ।। ९ ।।
देव गुरु धर्म सूत्रमें । नवतत्वादिक जोय ।
अधिका ओछा जे कह्या। मिच्छामि दुक्कडं मोय१०
मोह अज्ञान मिथ्यात्वको । भरियो रोग अथाग ।
वैद्यराज गुरु शरण थी। औषध ज्ञान वैराग । ११ ।
जे में जीव विराधिया । सेव्यां पाप अढार ।
प्रभू तुमारी साखसें । वारंवार धिक्कार ।। १२ ।
बुरा बुरा सबको कहे । बुरा न दीसे कोय ।
जो घट सोधूं आपनो। तो मोसूं बुरा न कोय।।१३।

कहेवामें आवे नहीं । अवगुण भरया अनंत ।।
लखवामें क्यों कर लिखूं । जाणे श्री भगवंत ।।१४।।
करुणा निधि कृपा करी । कठिण कर्म मोय छेद ।।
मोह अज्ञान मिथ्यात्वको । करजो गंठी भेद ।। १५ ।।
पतित उद्धारण नाथजी अपनो विरुद विचार ।।
भूल चूक सब म्हायरी ।। खमिये वारंवार ।।१६।।
माफ करो सब म्हायरा । आज तलकना दोष ।।
दीनदयाल देवो मुझे । श्रद्धा शील संतोष ।। १७ ।।
आतम निंदा शुद्ध भणी । गुणवंत वंदन भाव ।
राग द्वेष पतला करो सबसें खिमत खिमाव।।१८।।
छूटूं पिछला पापसें । नवा न बंधूं कोय ।।
श्रीगुरु देव प्रसादसें । सफल मनोरथ होय ।।१९।।
परिग्रह ममता तजि करो । पच महाव्रत धार ।।
अंत समय आलोयणा । करुं संथारो सार ।।२०।।
तीन मनोरथ ए कह्या । जो ध्यावे नित मन्न ।।
शक्ति सार वरते सही । पावे शिव सुख धन्न।।२१।।
अरिहंत देव निग्रंथ गुरु । संवर निर्ज्जरा धर्म ।।

केवली भाषित शास्त्रए । एही जिनमत मर्म ॥२२॥
आरंभ विषय कषाय तज । शुध समकित व्रत धार ॥
जिन आज्ञा परमाण कर । निश्चय खेवो पार ॥२३॥
क्षण निकमो रहेणो नही । करणो आतम काम ॥
भणनो गुणनो शीखणो। रमणो ज्ञाने आराम ॥२४॥
अरहंत सिद्ध सर्व साधुजी । जिन आज्ञा धर्मसार ॥
मंगलीक उत्तम सदा । निश्चय शरणां चार ॥२५॥
घड़ी घड़ी पल पल सदा । प्रभु समरणको चाव ॥
नरभव सफलो जो करे, दान सियल तप भाव ॥२६॥

॥ दोहा ॥

सिद्धां जैसो जीव है । जीव सोई सिद्ध होय ॥
कर्म मैलका अंतरा । बूझे विरला कोय ॥ १ ॥
कर्म पुद्गल रूप है । जीव रूप है ज्ञान ॥
दो मिलकर बहुरूप है । विछड़्यां पद निरवाण ॥२॥
जीव करम भिन्न भिन्न करो। मनुष्य जनमकूं पाय ॥
ज्ञानातम वैराग्यसें । धीरज ध्यान जगाय ॥ ३ ॥
द्रव्यथकी जीव एक है । क्षेत्र असंख्य प्रमान ॥

कालयकी सर्वदा रहे । भावे दर्शन ज्ञान ॥ ४ ॥
गर्भित पुग्दल पिण्डमें । अलख अमूरति देव ॥
फिरे सहज भव चक्रमें । यह अनादिको टेव ॥५॥
फूल अत्तर घी दूधमें । तिलमें तैल छिपाय ॥
युं चेतन जड़ करम संग । बंध्यो ममत दुख पाय ॥६॥
जो जो पुद्गलकी दशा । ते निज माने हंस ॥
याही भरम विभाव तें । बढ़े करमको बंस ॥ ७ ॥
रतन बंध्यो गठड़ी विषे । सूर्य छिप्यो घनमांय ॥
सिंह पिंजरामें दियो । जोर चले कछु नाय ॥८॥
ज्युं बंदर मदिरा पियां बिच्छू डंकत गात ॥
भूत लग्यो कौतुक करे । त्युं कर्मों का उत्पात ॥९॥
कर्म संग जीव मूढ़ है । पावे नाना रूप ॥
कर्मरूप मलके टले । चेतन सिद्ध सरूप ॥ १० ॥
शुद्ध चेतन उज्वल दरव । रह्यो कर्म मल छाय ॥
तप संयमसें धोवतां । ज्ञान ज्योति बढ़ जाय ॥११॥
ज्ञान थकी जाणे सकल । दर्शन श्रद्धा रूप ॥
चारित्रथी आवत रुके । तपस्या क्षपन सरूप ॥१२॥

कर्मरूप मलके शुधे। चेतन चांदी रूप॥
निर्मल ज्योति प्रगट भयो। केवलज्ञान अनूप॥१३॥
मुसोपावक सोहेगी। फूदयां तणो उपाय।
रामचरण चारू मल्यां। मेल कनकको जाय॥१४॥
कर्मरूप बादल मिटे। प्रगटे चेतन चन्द॥
ज्ञान रूप गुण चांदणी। निर्मल ज्योति अमंद॥१५॥
राग द्वेष दो बीजसें। कर्म बंधकी व्याध॥
ज्ञानातम वैराग्यसे। पावे मुक्ति समाध॥ १६॥
अवसर बीत्यो जात है। अपने वश कछु होत॥
पुन्य छतां पुन्य होत है। दीपक दीपक ज्योत॥१७॥
कल्पवृक्ष चिन्तामणि। इन भवमें सुखकार॥
ज्ञान शुद्धि इनसें अधिक। भवदुःखभंजनहार॥१८॥
राइ मात्र घट वध नहीं। देख्यां केवल ज्ञान॥
यह निश्चय कर जानके। तजिए परयम ध्यान॥१९॥
दूजाकूं भी न चिंतिये। कर्मबंध बहु दोष॥
त्रीजा चौथा ध्यायके। करिये मन सन्तोष॥२०॥
गई वस्तु सोचे नहीं। आगम वंछावांह॥

वर्तमान वर्ते सदा । सो ज्ञानी जगमांह् ॥२१॥
अहो समदृष्टी जोवडा । करे कुटुम्ब प्रतिपाल ॥
अंतर्गत न्यारा रहे । ज्युंधाइ खिलावे बाल ॥२२॥
सुख दुख दोनूं बसत है । ज्ञानीके घट माय ॥
गिरि रस दीखे मुकुरमैं । भार भोजवो नाय ॥२३॥
जो जो पुद्गल फरसना । निश्चे फरसे सोय ॥
ममता समता भावसें । करमबंध खै होय ॥२४॥
बांध्या सोही भोगवे । कर्म शुभाशुभ भाव ॥
फल निर्जरा होत है । यह समाधि चित चाव ॥२५॥
बांध्या बिन भुगते नही । बिन भुगता न छोड़ाय ॥
आपहि करता भोगता । आपहि दूर कराय ॥२६॥
पथ कुपथ घट वध करी । रोग हानि वृद्धि थाय ॥
युं पुण्य पाप किरिया करी सुखदुःख जगमेंपाय ॥२७॥
सुख दीयां सुख होत है । दुःख दीयां दुःख होय ।
आप हणे नहीं अवरकुं । वो अपने हणे नकोय ॥२८॥
ज्ञान गरीबी गुरु वचन । नरम वचन निर्दोष ॥
इनकुं कभी न छाडिए । श्रद्धाशील संतोष ॥२९॥

कर्मरूप मलके शुधे। चेतन चांदी रूप ॥
निर्मल ज्योति प्रगट भयां। केवलज्ञान अनूप ॥१३॥
मुसोपावक सोहेगी। फूक्यां तणो उपाय।
रामचरण चारू मल्यां। मैल कनकको जाय॥१४॥
कर्मरूप बादल मिटे। प्रगटे चेतन चन्द॥
ज्ञान रूप गुण चांदणो। निर्मल ज्योति अमंद॥१५॥
राग द्वेष दो बीजसें। कर्म बंधकी व्याध॥
ज्ञानातम वैराग्यसे। पावे मुक्ति समाध॥ १६॥
अवसर बीत्यो जात है। अपने वश कछु होत॥
पुन्य छतां पुन्य होत है। दीपक दीपक ज्योत॥१७॥
कल्पवृक्ष चिन्तामणि। इन भवमें सुखकार॥
ज्ञान शुद्धि इनसें अधिक। भवदुःखभंजनहार॥१८॥
राइ मात्र घट वध नहीं। देख्यां केवल ज्ञान॥
यह निश्चय कर जानके। तजिए परथम ध्यान॥१९॥
दूजाकूं भी न चितिये। कर्मबंध बहु दोष॥
त्रीजा चौथा ध्यायके। करिये मन सन्तोष॥२०॥
गई वस्तु सोचे नहीं। आगम बंछा नांह॥

वर्तमान वर्ते सदा । सो ज्ञानी जगमांह ।२१।।
अहो समदृष्टी जीवडा । करे कुटुम्ब प्रतिपाल ।।
अंतर्गत न्यारा रहे । ज्युं धाइ खिलावे बाल ।।२२।।
सुख दुख दोनूं बसत है । ज्ञानीके घट माय ।।
गिरि रस दीखे मुकुरमें । भार भीजवो नाय ।।२३।।
जो जो पुद्गल फरसना । निश्चे फरसे सोय ।।
ममता समता भावसें । करमबंध खं होय ।। २४ ।।
बांध्या सोही भोगवे । कर्म शुभाशुभ भाव ।।
फल निर्जरा होत है । यह समाधि चित चाव ।।२५।।
बांध्या बिन भुगते नही । बिन भुगता न छोड़ाय ।।
आपहि करता भोगता । आपहि दूर कराय ।।२६।।
पथ कुपथ घट वध करी । रोग हानि वृद्धि थाय ।।
युं पुण्य पाप किरिया करी सुखदुःख जगमेंपाय ।।२७।।
सुख दीयां सुख होत है । दुःख दीयां दुःख होय ।
आप हणे नहीं अवरकुं । वो अपने हणे नकोय।।२८।।
ज्ञान गरीबी गुरु वचन । नरम वचन निर्दोष ।।
इनकुं कभी न छाडिए । श्रद्धाशील संतोष ।।२९ ।

सत मत छोड़ो हो नरा । लक्ष्मी चौगुणी होय ॥
सुख दुःख रेखा कर्मकी । टाली टले न कोय ॥३०॥
गोधन गज धन रत्न धन । कंचन खान सुखान ॥
जब आवै संतोष धन । सब धन धूल समान ॥३१॥
शील रतन मोटो रतन । सब रतनांकी खाण ॥
तीन लोककी सम्पदा । रही शीलमें आण ।३२॥
शीले सर्पन आभडे । शीले शीतल आग ॥
शीले अरि करि केशरी। भय जावे सब भाग ॥३३॥
शील रतनके पारखु । मीठा बोले वेण ॥
सब जगसें ऊंचा रहे । जो नीचां राखे नेण ॥३४॥
तनकर मन कर वचन कर । देत न काहू दुःख ॥
कर्म रोग पातक झरे । देखत वांको मुख ॥३५॥
पान झरंतो इम कहे । सुनु तरुवर वन राय ॥
अबके बिछुरे ना मिलें । दूर पड़ेंगे जाय ॥ १ ॥
तब तरुवर उत्तर दियो । सुनो पत्र एक बात ॥
इस घर एही रीत है । एक आवत एक जात ॥२॥
बरस दिनाकी गांठको । उच्छव गाय बजाय ॥

मूरख नर समझे नहीं। वरस गांठको जाय ॥३॥

॥ सोरठो ॥

पवन तणो विश्वास। किण कारण तैं दृढ़ कियो ॥
इनकी एही रीत। आवेके आवे नहीं ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

करज विराना काढ़के। खरच किया बहु नाम ॥
जब मुद्दत पूरी हुवे। देना पड़से दाम ॥ ५ ॥
विनु दीयां छूटे नहीं। यह निश्चय कर मान ॥
हंस हंसके वयुं खरचिये। दाम बिराना जान ॥६॥
जीव हिंसा करतां थकां। लागे मिष्ट अज्ञान ॥
ज्ञानी इम जाणे सही। विष मिलियो पकवान ॥७॥
काम भोग प्यारा लगे। फल किंपाक समान ॥
मीठी खाज खुजावतां। पीछे दुःखकी खान ॥८॥
तप जप संजम दोहिलो। औषध कड़वो जाण ॥
सुख कारण पीछे घणा। निश्चय पद निरवाण ॥९॥
डाभ अणी जल बिंदुओ। सुख विषयनको चाव ॥
भवसागर दुःख जल भरयो। यह संसार स्वभाव ॥१०॥

चढ़ उत्तंग जहँसे पतन। शिखर नहींबो कूप॥
जिस सुख अन्दरदुःख वसे,सो सुख भी दुःखरूप॥११॥
जब लग जिसके पुण्यका। पहुंचे नहीं करार।
तब लग उसको माफ है। अवगुण करे हजार॥१२॥
पुण्य खीन जब होत है। उदय होत हैं पाप॥
दाभे वनकी लाकड़ी। प्रजले आपोआप॥ १३॥
पाप छिपाया ना छिपे। छिपे तो मोटा भाग॥
दाबी दूबी ना रहे। रूई लपेटी आग। १४॥
बहु बीती थोड़ो रही। अब तो सुरत संभार॥
परभव निश्चय चालणो। वृथा जन्म मत हार॥१५॥
चार कोस ग्रामांतरे। खरची बांधे लार॥
परभव निश्चे जावणो। करिये धर्म विचार॥१६॥
रज्जब रज ऊंची गई। नरमाई के पान॥
पत्थर ठोकर खात है। करड़ाईके तान॥ १७॥
अवगुण उर धरिए नहीं। जो हुये विरख बबूल॥
गुण लीजे कालू कहे। नहि छायामें सूल॥ १८॥
जैसी जापें वस्तु है। वैसी दे दिखलाय॥

याका बुरा न मानिये । वो लेन कहांसे जाय ।१९।
गुरु कारीगर सारिखा । टांको वचन विचार ॥
पत्थरसे प्रतिमा करे । पूजा लहे अपार ॥ २० ॥
संतनको सेवा कियां । प्रभु रीझत हैं आप ॥
जाका बाल खिलाइये । ताका रीझत बाप ॥२१॥
भवसागर संसारमें । दिया श्री जिनराज ॥
उद्यम करि पहुँचे तिरे । बैठी धर्म जहाज ॥ २२ ॥
निज आतमकूं दमन कर । पर आतमकूं चीन ।
परमातमको भजन कर । सोई मत परवीन ॥२३॥
समझू शंके पापसें । अण समझू हरषंत ॥
वे लुखां वे चीकणां । इण विध कर्म बधंत ॥ २४ ॥
समझू सार संसारमें । समझू टाले दोष ॥
समझ समझ करि जीवही । गया अनन्ता मोक्ष ॥२५॥
उपशम विषय कषायनो । संवर तीनूं योग ॥
किरियां जतन विवेकसें । मिटै कुकर्म दुःख रोग ॥२६॥
रोग मिटे समता वधे । समकित व्रत आधार ॥
निर्वैरी सब जीवको । पावे मुक्ति समाध ॥ २७ ॥

इति मूल सूत्र मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति श्रावक लालाजी रणजीतसिंहजी कृत

दोहा सम्पूर्णम्

श्री पंच परमेष्ठी भगवद्भ्यो नमः

दोहा

सिद्ध श्री परमातमा । अरिगंजन अरिहंत ।
इष्टदेव वंदू सदा । भयभंजन भगवंत ॥ १ ॥
अनन्त चोबीशी जिन नमूं । सिद्ध अनन्ता कोड ॥
वर्त्तमान जिनवर सभी । केवली प्रत्यक्ष कोड ॥२॥
गणधरादि सब साधुजी । समकित व्रत गुण धार ॥
यथायोग्य वंदन करूं । जिन आज्ञा अनुसार ॥३॥

प्रथम एक नवकार गुणावो ।

दोहा

पंच परमेष्ठी देवनो । भजनपूर पंचान ॥
धर्म अरी भजके सूवी । शिवसुख मंगल मान ॥४॥
अरिहंत सिद्ध समरूं सदा । आचारज उवझाय ॥
साधु सकल के चरणकूं । वंदू शीश नमाय ॥५॥

शासन नायक समरिये । वर्द्धमान जिनचन्द ॥
अलिय विघन दूर हरे । आपे परमानन्द ॥ ६ ॥
अंगूठे अमृत वसे । लब्धि तणा भंडार ॥
जे गुरु गौतम समरिये । मनवंछित फल दातार ॥७॥
श्री जिन युग पद कमल में, मुझमन अलिय बसाय ।
कब ऊगे वो दिनकरु । श्रीमुख दरशन पाय ॥८॥
प्रणमी पद पंकज भणी । अरिगंजन अरहंत ॥
कथन करुं हूं वे जीवनुं । किंचित मुझ विरतंत ॥९॥

॥ सोरठो ॥

हुं अपराधि अनादिको । जनम जनम गुना किया भरपूर कै । लूटीया प्राण छकायना । सेविया पाप अठार करूरके ॥ श्री मुठे ॥ १० ॥ १ ॥

आज तांई इन भव में पहला, संख्याता, असंख्याता, अनन्ता भवमें, कुगुरु, कुदेव, अरु कुधर्म कीसहहणा. प्ररूपणा, फरसना, सेवनादिक सम्बन्धी पाप दोष लाग्या; ते मिच्छामिदुक्कडं ॥ २ ॥ मैंने अज्ञानपणे मिथ्यात्वपणे अव्रतपणे. कषायपणे,

अशुभयोगे करी, प्रमादे करी, अपछंदा, अविनीत-पणां करयां ॥ ३ ॥ श्री श्री अरहिन्त भगवन्त वीतराग केवल ज्ञानी महाराजजीकी, श्रीगणधरदेव जीकी, आचारज महाराजजीको, धर्माचार्यजी महाराजकी, श्री उपाध्यायजोकी, अने साधुजीको, आर्याजी महाराजकी श्रावक श्राविकाजीकी, समदृष्टि साधर्मि उत्तम पुरुषांको, शास्त्र सूत्रपाठकी, अर्थ परमाथकी, धर्म सम्बन्धी सकल पदार्थोंको, अविनय, अभक्ति, आशातनादिक करी, कराई अनुमोदी मन बचन कयाए करी द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी, भावथी, सम्यक् प्रकारे, विनय भक्ति आराधना पालना फरसना, सेवनादि क यथायोग्य अनुक्रमे नहि करी, नहि करावी, नहि अनुमोदी, ते मुजे धिक्कार, धिक्कार बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं। मेरी भूल चूक अवगुण अपराध सब माफ करो बक्षो, मन वचन कायाये करी मुजसे खमावो ॥

—:o:—

॥ दोहा ॥

मैं अपराधी गुरु देवको। तीन भवनको चोर॥
ठगुं विराणा मालमें। हा हा कर्म कठोर॥१॥
कामी कपटी लालची। अपछंदा अविनीत॥
अविवेकी क्रोधी कठिण। महापापी रणजीत॥२॥
जे में जीव विराधिया। सेव्यां पाप अठार॥
नाथ तुमारी साखसें। बारम्बार धिक्कार॥३॥

मैंने छवकायपणे छये कायको विराधना करी पृथ्वीकाय अप्काय. तेउकाय, वाउकाय वनस्पतिकाय बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय, पंचेंद्रिय, सन्नी, असन्नी, गर्भज चौदे प्रकारे समूर्छिम प्रमुख, त्रस, थावर जीवांको विराधना करी, करावी, अनुमोदी, मन वचन कायाये करी, उठतां, बेसतां, सुतां, हालतां, चालतां, शस्त्र वस्त्र मकानादिक उपकरणे करी, उठावतां धरतां लेतां देतां, वर्त्ततां वर्त्तावतां, अप्पडिलेहणा दुप्पडिलेहणा सम्बंधि अप्रमार्जना,

† पाठको इस वचनके बाद अपना नाम कहना चाहिये।

दुःप्रमाज्जना, सम्बन्ध, अधिको ओछो, विपरीत पुंजना, सम्बन्धी और अहार विहारादिक नाना प्रकारका पडिलेहणा घणा घणां कर्तव्योमां, संख्याता असंख्याता अने निगोद आश्रयी अनन्ता जीवको, जिवना प्राण लुटया, ते सर्व जीवोंको, मैं पापी अपराधी हूं । निश्चेकरी । वहलीका देणदार हूं, सर्व जीव मुझ प्रते माफ करो, मेरी भूल चुक अवगुण अपराध सब माफ करो, देवसी राईसी, पखी, चोमासी, अने संवत्सरिक सम्बन्धि, वारं वार मिच्छामिदुक्कडं मांगुं छुं, तुमे सर्व खमजो ॥

खामेमि सव्वे जीवा । सव्वे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ति मे सव्वे भूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥ १ ॥

वो दिन धन्य होवेगा, जो दिन में छ काया का वैर बदला से निवर्तूंगा । सर्व चोराशी लाख जीवा योनिकु अभयदान देऊंगा, सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा ॥

❀ दोहा ❀

सुख दीठा सुख होत है। दुःख दिया दुःख होय ॥
आप हणो नहीं अवरकूं। आप हणे नहि कोय ॥१॥

इति दूजा पाप मृषावाद सो झूठ बोलणा। २॥
क्रोधवशे, मानवशे, मायावशे, लोभवशे, हास्ये करी, भयवशे, इत्यादिक मृषा वचन बोल्या ॥३॥
निंदा विकथा करी, कर्कश कठोर मर्मकी भाषा बोलो, इत्यादिक अनेक प्रकारे मन वचन कायाये करी मृषावाद झूठ बोल्या, बोलाया, बोलताने अनुमोद्या।

❀ दोहा ❀

पापण मोसा में किया। करि विश्वासज घात ॥
परनारी धन चोरियां। प्रगट कह्यो नहि जात।१॥

ते मुझे धिक्कार धिक्कार। वारंवार मिच्छामिदुक्कडं ॥ वो दिन मेरा धन्य होवेगा जिस दिन सर्वथा प्रकारे मृषावादका त्याग करूंगा, सो दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा ॥ २॥

त्रीजा पाप अदत्तादान है सो अणदीठी वस्तु चोरी करीने लीधी, ते मोटी चोरी, लौकिक विरुद्ध अल्प चोरी घर सम्बन्धी नाना प्रकारका फर्त्त ब्योंत उपयोग सहित, तथा विना उपयोग अदत्तादान चोरी करी कराइ, करताने अनुमोदी मन वचन कायाये करी, तथा धर्म सम्बन्धी ज्ञान, दर्शन, चारित्र अरु तपकी श्री भगवन्त गुरु देवोंकी अण आज्ञापणाये करय्या ते मुझे धिक्कार धिक्कार वारंवार मिच्छामिदुक्कडं। सो दिन मेरा धन्य होवेगा जिस दिन सर्वथा प्रकारे अदत्तादानका त्याग करूंगा, वो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा ॥ ३ ॥ चौथा मैथुन सेवनने विषे मन वचन अरु कायाका योग प्रवर्त्ताया, नववाड सहित ब्रह्मचर्य नहीं पाल्या, नववाडमें अशुद्धपणे प्रवृत्ति हुई, आप सेव्या, अनेरा [illegible] पास सेवतां प्रत्ये भला जाण्या सो [illegible] कायाये करी मुझे [illegible]वार

वो दिन धन्य होवेगा जिस दिन मैं नववाड सहित ब्रह्मचर्य शील रत्न आराधूंगा, सर्वथा प्रकारे काम विकारसें निवर्तुंगा, सो दिन मेरा परम कल्याणका होवेगा ॥ ४ ॥ पांचमां परिग्रह जो सचित परिग्रह सो, दास दासी द्वपद चौपद तथा मणि, पत्थर प्रमुख अनेक प्रकारका है अरु अचित परिग्रह जो सोना, रूपा, वस्त्र, आभरण प्रमुख अनेक वस्तु हैं, तिनकी ममत मुर्च्छा आपणात करी। क्षेत्र घर आदिक नव प्रकारका बाह्य परिग्रह, अरु चौदः प्रकारका अभ्यंतर परिग्रहको राख्यो, रखायो राखतांने अनुमोद्यो, तथा रात्रि-भोजन अभक्ष आहारादि सम्बन्धी पाप दोष सेव्या ते मुझे धिक्कार धिक्कार वारम्बार मिच्छामिदुक्कडं वो दिन धन्य होवेगा जिस दिन सर्व प्रकारे परिग्रहका त्याग करी संसारका प्रपंचसेंती निवर्तुंगा, सो दिन मेरा परम कल्याण रूप होवेगा ॥५॥ छट्ठा क्रोध पाप स्थानक, सो क्रोध करीने आपना

आत्माकुं, और परमात्माकुं तपाया ॥ ६ ॥ तथा सातमा मान ते अहङ्कार भाव आण्या। तीन गारव, आठ मदादिक करया ॥ ७ ॥ तथा आठमी माया ते धर्म सम्बन्धी तथा संसार सम्बन्धी अनेक कर्त्तव्योंमें कपटाई करी ॥ ८ ॥ तथा नवमें लोभ ते मूर्छाभाव आण्यो। आशा तृष्णा वाछादिक करी ॥ ६ ॥ तथा दशमां राग ते, मनगमती वस्तुसों स्नेह कीधो ॥ १० ॥ तथा इग्यारमा द्वेष ते, अणगमती वस्तु देखीने द्वेष करयो॥११॥ तथा बारमों कलह ते अप्रशस्त वचन बोलीने क्लेश उपजाव्यो ॥ १२ ॥ तथा तेरमां अभ्याख्यान ते अछतां आल दीधां ॥ १३ ॥ चौदमां पैशुन्य ते पराइ चाडी चुगली कीधी ॥ १४ ॥ पन्नरमां पर-परिवाद ते पराया अवगुणवाद बोल्या, बोलाया, अनुमोद्या ॥ १५ ॥ सोलमां रति अरति पांच इन्द्रियोना तेवीश विषय २४० विकारो छे, तेमां मनगमतीसों राग करयो, अणगमतीसों द्वेष

कर्य्यो, तथा संयम तप आदिकने विषे अरति करी, कराइ, अनुमोदी तथा आरम्भादिक असंयम प्रमादमें रति भाव कर्या, कराया, अनुमोद्या ॥१६॥ सत्तरमां मायामोसो पापस्थानक, सो कपट सहित झूठ बोल्या ॥ १७ ॥ अठारमां मिथ्यादर्शनशल्य सो श्री जिनेश्वर देव के मार्गमें शङ्का कंक्षादिक विपरीत प्ररूपणादिक करी, कराई, अनुमोदी॥१८॥ इत्यादिक इहां अठारः पापस्थानों की आलोयणा सो विशेष विस्तारे आपसे बने जिस मुजब कहेनी ॥ एवं अठारः पापस्थानक सो द्रव्यथकी, क्षेत्रथकी, कालथकी, भावथकी, जाणतां अजाणतां मन वचन अरु कायाये करी सेव्यां, सेवराया, अनुमोद्यां, अर्थे, अनर्थे, धर्मअर्थे, कामवशे, मोहवशे स्ववशे, परवशे, दीयावा, रात्रोवा, एगोवा, परिसा गओवा, सुत्तेवा, जागरमाणेवा, इनभवमें पहेलां संख्याता असंख्याता अनन्ता भवोंमें भवभ्रमण करतां आजदिन सुधी, राग,

द्वेष, विषय, कषाय, आलस प्रमादिक पौद्गलिक प्रपञ्च परगुण परजायको विकल्प भूल करी, ज्ञानकी विराधना करी, दर्शनकी विराधना करी, चारित्रकी विराधना करी, चारित्राचारित्रकी तपकी विराधना करी शुद्ध श्रद्धा, शील सन्तोष क्षमादिक निज स्वरूपकी विराधना करी, उपशम, विवेक, संवर, सामायिक, पोसह, पडिक्कमणा, ध्यान, मौनादिक नियम, व्रत पच्चक्खाण, दान, शील तप प्रमुखकी विराधना करी, परम कल्याणकारी इन बोलोंकी आराधना पालनादिक, मन वचन अरु कायासें करी नहीं, करावी नहीं, अनुमोदी नहीं ॥ छहों आवश्यक सम्यक् प्रकारे विधि उपयोग सहित आराध्या नहीं, पाल्या नहीं, फरस्या नहीं, विधि उपयोग रहित निरादार पणे कर्या परन्तु आदर सत्कार भाव भक्ति सहित नहीं कर्या, ज्ञानका चौदः, समकितका पांच, बाराव्रतका साठ, कर्मादानका पन्द्रह संलेषणाका पांच, एवं

नव्वाणु अतिचार मांहे तथा १२४ अतिचार मांहे. तथा साधुजीका १२५ अतिचार मांहे तथा ५२ अनाचरणको श्रद्धानादिकमें विराधनादिक जो कोई; अतिक्रम व्यतिक्रम, अतिचारादिक सेव्या,सेवराव्या. अनुमोद्या, जाणतां, अजाणतां मन वचन कायाये करी ते मुझे धिक्कार धिक्कार,वारम्वार मिच्छामि- दुक्कडं ॥ मैंने जीवकूं अजीव सद्धर्या परूप्या, अजीवकूं जीव सद्धर्या परूप्या, धर्मकूं अधर्म अरु अधर्मकूं धर्म सद्धर्या परूप्या. तथा साधुजी- को असाधु और असाधुका साधु सद्धर्या परूप्या, तथा उत्तम पुरुष साधु मुनिराज, महासतीयांजी की सेवा भक्ति यथाविधि मानतादिक नहीं करी. नहीं करावी. नहीं अनुमोदी, तथा असाधुओंकी सेवा भक्ति आदिक मानता पक्ष कर्या. मुक्तिका मार्गमें संसारका मार्ग. यावत् पच्चीश मिथ्यात्व मांहिला मिथ्यात्व सेव्या सेवाया. अनुमोद्या. मने करी वचने करी. कायाये करी. पच्चीश कषाय

सम्बन्धी, पच्चीश क्रिया सम्बन्धी तेत्रीश अशा-तना सम्बन्धी, ध्यानका उगणीश दोष, वन्दना का बत्रीश दोष, सामायिकका बत्रीश दोष, अने पोसहका अठारह दोष सम्बन्धी, मन वचन का-याये करी जे कांई पाप दोष लाग्या, लगाया, अनुमोद्याते मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छा-मिदुक्कडं ॥ महा मोहनीय कर्मबंधका, त्रीश स्थानकका, मन वचन अरु कायासें सेव्या, सेवाया, अनुमोद्या ॥ शीलकी नव वाड, आठ प्रवचन माताकी विराधनादिक, तथा श्रावकका एकवीश गुण, अरु बारावत क्रिया बिरदावकी विरा-धनादि मन वचन अरु कायासें करी, करावी अनुमोदी ॥ तथा तीन अशुभ लेश्याका लक्षणों की, बोलोंकी, सेवना करी, अरु तीन शुभ लेश्या का लक्षणोंकी, बोलोंकी, विराधना करी ॥ चर्चा वार्त्ता वगैरामें श्री जिनेश्वर देवका मार्ग लोप्या गोप्या । नहीं मान्या, अच्छताकी थापना करी प्रव-

तांया, छताको थापना करी नहीं, अरु अछताको निषेधना नहीं करी, छताको थापना अरु अछताको निषेधना करने का नियम नहीं कर्या, कलुषता करी तथा छ प्रकारे ज्ञानावरणीय बंधका बोल, ऐसेही छ प्रकारका दर्शनावरणीय बन्धका बोल, यावत् आठ कर्मकी अशुभ प्रकृतिबन्धका पच्चावन कारण करी, बेयासी प्रकृति पापांकी बांधी बधाई, अनुमोदी मने करी वचने करी, कायाये करी, ते मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं। एक एक बोलसें लगाकर कोड़ा कोड़ी यावत् संख्याता, असंख्याता अनन्ता अनन्त बोलतांई, मैं जो जाणवा योग्य बोलको, सम्यक् प्रकारे जाण्या नहीं, सद्दह्या नहीं, प्ररूप्या नहीं तथा विपरीतपणे श्रद्धानादिक करी, कराइ, अनुमोदी मन वचन कायाये करी ते मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं ।। एक एक बोलसें यावत् अनन्ता अनन्त बोलमें छांडवा योग्य बोलको छांड्या नहीं,

उनको मन वचन कायाये करके सेव्यां, सेवाया, अनुमोद्या सो मुझे धिक्कार धिक्कार बारम्बार मिच्छामिदुक्कडं ॥ एक एक बोलसें लगाकर यावत् अनंता अनंत बोलमें आदरवा योग्य बोल आदर्या नहीं, आराध्या पाल्या फरस्या नहीं, विराधना खंडनादिक करी, कराइ, अनुमोदी मन वचन कायाये करी, ते मुझे धिक्कार धिक्कार बारंवार मिच्छामिदुक्कडं श्री जिन भगवंतजी महाराज आपकी आज्ञामें जो जो प्रमाद कर्या, सम्यक् प्रकारे उद्यम नहीं कर्या, नहीं कराया नहि अनुमोद्या, मन वचन काया करके अथवा अनाज्ञा विषे उद्यम कर्या कराया, अनुमोद्या एक अक्षरके अनंतमें भाग मात्र दूसरा कोई स्वप्न मात्रमें भी श्री भगवंत महाराज आपकी आज्ञामु अधिका ओछा विपरीतपणे प्रवर्त्यो हूं, ते मुझे धिक्कार धिक्कार बारंबार मिच्छामिदुक्कडं ।

—✲✲—

❀ दोहा ❀

श्रद्धा अशुद्ध प्ररूपणा । करी फरसना सोय ॥
जाण अजाण पक्षपातमे । मिच्छामिदुक्कडं मोय ।१।
सूत्र अर्थ जाणू नहीं । अल्पबुद्धि अनजाण ॥
जिन भाषित सब शास्त्रए । अर्थ पाठ परमाण ।२।
देव गुरू धर्म सूत्रकुं । नव तत्वादिक जोय ।
अधिका ओछा जे कह्या, मिच्छामिदुक्कडं मोय ॥३॥
हुं मगसेलियो हो रह्यो । नहीं ज्ञान रस भीज ॥
गुरु सेवा ना करि शकूं । किम मुझ कारज सीझ ॥४॥
जाणे देखे जे सुणे । देवे सेवे मोय ॥
अपराधी उन सबनको । बदला देशूं सोय ॥ ५ ॥
गवन करूं बुगचा रतन । दरब भाव सब कोय ॥
लोकनमें प्रगट करूं । सूई पाई मोय ॥ ६ ॥
जैनधर्म शुद्ध पायके । वरतुं विषय कषाय ॥
एह अचंभा हो रह्या । जलमें लागी लाय ॥ ७ ॥
जितनी वस्तु जगतमें । नीच नीचसें नीच ॥
सबसें मैं पापी बुरो । फसूं मोहके बीच ॥ ८ ॥

एक कनक अरु कामिनी । दो मोटी तरवार ॥
उठ्यां था जिन भजनकूं । बिचमें लीया मार ॥९॥

❀ सवैया ❀

मैं महापापी छांडके संसार छार, छारहीका बिहार करुं, आगला कुछ धोय कीच फेर कीच बीच रहूँ; विषय सुख चाहूँ मन्न प्रभुता बधारी है ।। करत फकीरी ऐसी अमीरीको आस करुं काहेकु धिक्कार शिर पागडी उतारी है ।। १० ॥

❀ दोहा ❀

त्याग न कर संग्रह करूं । विषय वचन जेम आहार।
तुलसीए मुज पतितकुं । बारबार धिक्कार ॥११॥
राग द्वेष दो बीज है। कर्म बंध फल देत ॥
इनकी फांसी में बंध्यो । छूटूं नहीं अचेत ॥ १२ ॥
रतन बंध्यो गठडी विषे। भानु छिप्यो घनमांहि ॥
सिंह पिंजरामें पियो। जोर चले कछु नांहि ॥१३॥
बुरो बुरो सबको कहे। बुरो न दीसे कोय ॥
जो घट शोधुं आपणो तो मोसूं बुरो न कोय।१४।

कामी कपटी लालची । कठिण लोहको दाम ॥
तुम पारस परसंगथी । सुवर्ण थाशुं स्वाम ॥१५॥

❀ श्लोक ❀

मैं जपहीन हूँ तपहीन हूँ प्रभु हीन संवर समगत ॥ हे दयाल कृपाल करुणानिधि, आयो तुम शरणांगत । प्रभु आयो तुम शरणांगत ॥१६॥

❀ दोहा ❀

नहिं विद्या नहिं वचन बल । नहिं धीरज गुण ज्ञान ॥
तुलसीदास गरीबकी । पत राखो भगवान ॥ १७॥
विषय कषाय अनादिको । भरिया रोग असाध ॥
वैद्यराज गुरु शरणथी । पाऊं चित्त समाध ॥१८॥
कहेवामें आवे नहीं । अवगुण भर्यो अनंत ॥
लिखवामें क्युं कर लिखूं । जाणे श्रीभगवंत ॥१९॥
आठ कर्म प्रबल करी । भमियो जीव अनादि ॥
आठ कर्म छेदन करी । पामे मुक्ति समाधि ॥२०॥
पथ कुपथ कारण करी । रोग हीन वृद्धि थाय ॥
इम पुण्य पाप किरिया करी।सुखदुःख जगमें पाय।२१।

एक कनक अरु कामिनी । दो मोटी तरवार॥
उठ्यां था जिन भजनकु । बिचमें लीया मार॥६॥

❀ सवैया ❀

मैं महापापी छाँडके संसार छार छारहीक
बिहार करु, आगला कुछ थोय कीच फेर कीच
बीच रहूँ; विषय सुख चाहूँ मन्न प्रभुता बधारे
है ।। करत फकीरो ऐसी अमीरोको आस करे
काहेकु धिक्कार शिर पागडी उतारी है ॥ १० ॥

❀ दोहा ❀

त्याग न कर संग्रह करु । विषय वचन जेम आहार।
तुलसीए मुज पतितकु । बारबार धिक्कार ॥११॥
राग द्वेष दो बीज है । कर्म बंध फल देत॥
इनकी फांसी में बंध्यो । छूट्ं नहीं अचेत ॥ १२ ॥
रतन बंध्यो गठडी विषे । भानु छिप्यो घनमांहि ॥
सिंह पिंजरामें यियो । जोर चले कछु नांहि ॥१३॥
बुरो बुरो सबको कहे । बुरो न दीसे कोय ॥
जो घट शोधुं आपणो तो मोसूं बुरो न कोय॥१४॥

कामी कपटी लालची । कठिण लोहको दाम ॥
तुम पारस परसंगथी । सुवर्ण थाशु स्वाम ॥१५॥

❊ श्लोक ❊

मैं जपहीन हूं तपहीन हूं प्रभु हीन संव्वर समगत ॥ हे दयाल कृपाल करुणानिधि, आयो तुम शरणांगत । प्रभु आयो तुम शरणांगत ॥१६॥

❊ दोहा ❊

नहि विद्या नहि वचन बल । नहि धीरज गुण ज्ञान ॥
तुलसीदास गरीबकी । पत राखो भगवान ॥ १७॥
विषय कषाय अनादिको । भरिया रोग असाध ॥
वैद्यराज गुरु शरणथी । पाऊं चित्त समाध ॥१८॥
कहेवामें आवे नहीं । अवगुण भर्यो अनंत ॥
लिखवामें क्यु कर लिखूं । जाणे श्रीभगवंत ॥१९॥
आठ कर्म प्रवल करी । भमियो जीव अनादि ॥
आठ कर्म छेदन करी । पामे मुक्ति समाधि ॥२०॥
पथ कुपथ कारण करी । रोग हीन वृद्धि थाय ॥
इम पुण्य पाप किरिया करी।सुखदुःख जगमें पाय।२१।

बांध्या विण मुक्त नही । विण मुक्त्या न छुटाय ।
आपहि करता भोगता । आपहि दूर कराय ॥२२॥
सूसायासे अविवेक हू । आंख मीच अंधियार ।
मकड़ी जाल बिछायके। फसूं आप धिक्कार ॥२३॥
सब भखी जिम अग्नि हूँ । तपियो विषय कषाय ॥
अवछंदा अविनीतमें । धर्मी ठग दुःख दाय ॥२४॥
कहाभयो घर छांडके । तज्यो न माया संग ॥
नागत्यजी जिम कांचली विष नहि तजियो अंग २५।
आलस विषय कषाय वश ।आरंभ परिग्रह काज ॥
योनि चोराशी लख लम्यो। अब तारो महाराज।२६।
आतम निंदा शुद्ध भणी । गुणवंत वंदन भाव ॥
राग द्वेष उपशम करी । सबसें खमत खमाव ॥२७॥
पुत्र कुपात्रज मैं हुओ । अवगुण भर्यो अनंत ॥
मोहित वृद्ध विचारके । माफ करो भगवंत ॥२८॥
शासनपति वर्धमानजी । तुम लग मेरी दौड ॥
जैसे समुद्र जहाज विण । सूझत ओर नठौर ।२९।
भवभ्रमण संसार दुःख । ताका वार न पार ॥

निर्लोभी सतगुरु विना । कवरण उतारे पार ॥३०॥
भवसागर संसारमें । दिया श्री जिनराज ॥
उद्यम करि पहुंचे तिरे । बैठो धरम जहाज ॥३१।
पतित उधारन नाथजी । अपनो विरुद विचार ॥
भूल चूक सब म्हायरी । खमिये वारंवार ॥ ३२ ॥
माफ करो सब म्हायरो । आज तलकना दोष ॥
दीनदयाल दियो मुझे । श्रद्धा शील संतोष ॥३३॥
देव अरिहंत गुरु निर्ग्रंथ । संव्वर निर्ज्जरा धर्म ॥
केवली भाषित शास्त्र ए । यही जैनमतमर्म ॥३४॥
इस अपार संसारमें । शरण नहीं अरु कोय ॥
यातें तुम पद भगतही । भक्त सहाई होय ॥३५॥
छूटूं पिछला पापथी । नवा न बांधू कोय ॥
श्री गुरुदेव प्रसादसों । सफल मनोरथ होय ॥३६॥
आरंभ परिग्रह त्यजि करी । समकित व्रत आराध ।
अंत अवसर आलोयके,अरणसरण चित्त समाध ।३७।
तीन मनोरथ ए कह्या । जे ध्यावे नित्य मन्न ॥
शक्ति सार वरते सही। पामे शिव सुख धन्न ॥३८॥

श्री पंच परमेष्टी भगवंत गुरुदेव महाराजजी आपकी आज्ञा है, सम्यक् ज्ञान दर्शन, सम्यक् चारित्र, तप, संयम, संव्वर, निर्ज्जरा, मुक्ति मार्ग यथाशक्तिये शुद्ध उपयोग सहित आराधने, पालने, फरसने सेवनेकी आज्ञा है, वारंवार शुभ योग संबंधी सद्याय ध्यानादिक अभिग्रह नियम व्रत पच्चक्खाणादि करणे, करावणेकी, समिति गुप्ति प्रमुख सर्व प्रकारे आज्ञा है ॥

❀ दोहा ❀

निश्चल चित्त शुद्ध मुख पढ़त। तीन योग थिर थाय।
दुर्लभ दीसे कायरा। हलु कर्मी चित्त भाय। १॥
अक्षर पद हीणो अधिक। भूल चूक कही होय॥
अरिहंत सिद्ध आतम साखसें मिच्छामिदुक्कडंमोय।२

॥ भूल चूक मिच्छामिदुक्कड ॥

इति श्रावक श्रीलालाजी साहेबरणजीत सिहजीकृत वृहदालोयणा सम्पूर्णम् ॥

—✲✲—

ॐ

पद्यात्मक श्रीवीरस्तुति

पुच्छिसुणं समणा माहणाय, अगारिणोया परितित्थियाय ॥ सेकेई णोगंतहियं धम्ममाहु, अणेलिसं साहु समिक्खयाए ॥ १ ॥ कहं च णाणं कहं दसणंसे, सीलं कहं नाय प्रतस्स आसी ॥ जाणासिणं भिक्खु जहातहेण, अहा-सुतं ब्रूहि जहाणिसंतं ॥ २ ॥ खेयन्नेसे कुसले [सुपन्ने पा०] महेसी, अणंतनाणीय अणंत दंसी, जसंस्सिणो चक्खु पहट्ठियस्स, जाणाहिधम्मं च धिइं चपेहि ॥ ३ ॥ उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु तसाय जे थावर जेह पाणा ॥ सेणिच्चणिच्चे हि समिक्खं पन्ने, दीवेव धम्मं समियं उदाहू ॥ ४ ॥ सेसव्वदंसी अभिभूय नाणी, णिरामगंधे धिइमं ठिअप्पा ॥ अणुत्तरे सव्व जगंसि विज्जं, गंथा अतीते अभए अणाऊ ॥ ५ ॥ समूइपण्णे अणिए

अचारी, ओहंतरे धीरे अणंत चक्खु ॥ अणत्तरे तप्पति सूरिएवा, वइरोयर्णि वेवतमं पगासे ॥६॥ अणुत्तर धम्ममिणं जिणाणं, णोया मुणी कासव आसुपन्ने ॥ इंदेव देवाण महाणुभावे, सहस्स णेता दिविणं विसिट्ठे ॥७॥ से पन्नया अक्खय सागरेवा, महोदहीवावि अणंत पारे । अणाइलेया अकसाई मुक्के (भिक्खु) सक्केव देवाहिव ईज्जुईमं । ८ ॥ से वीरियेणं पडिपुन्न वीरिये, सुदसणेवा णगसव्व सेट्ठे ॥ सुरालएवासि मुदागरेसे, विरायए णेगगुणोववेए ॥ ६ ॥ सयं सहस्साणउ जोयणाणं, तिकंडगे पंडगवेजयंते ॥ से जोयणे णवणवति सहस्से; उद्धस्सितोहेट्ठसहस्समेगं ॥ १० ॥ ॥ पुट्ठेणभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए जं सूरिया अणु परिवट्टयंति ॥ से हेम वन्ने बहु नंदणेय, जंसीरतिं वेदयंती महिन्दा ॥ ११ ॥ से पव्वए सद्द महप्पगासे, विरायती कंचण मट्ठ वन्ने ॥ अणुत्तरे गिरिसुय पव्वदुग्गे, गिरोवरे से

लिएव भोमे ॥ १२ ॥ महोइ मज्झंमि ठिते-
गिदे, पन्नायते सुरिय सुद्धलेसे । एवं सिरी-
उस भूरिवन्ने, मणोरमे जावइ अच्चिमालो
१३ ॥ सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चई
हतो पव्वयस्स ॥ एतोवमे समणेनायपुत्ते,
ातोजसो दंसणनाणसीले ॥ १४ ॥ गिरिवरेवा
नसहोययाणां, रुयएव सेट्ठे वलयायताणं ॥ तउ-
मेसे जगभूइ पन्ने, मुणीण मज्झे तमुदाहुवन्ने
१५ ॥ अणुत्तरं धम्ममुईरइत्ता, अणुतरं झा-
ावरं झिआइ ॥ सुसुक्कसुक्कं अपगंड सुक्कं
ंखिदु एगंतवदातसुक्कं ॥ १६ ॥ अणुत्तरग्गं
रमं महेसी, असेस कम्मं सविसोहइत्ता ॥
सद्धिगते साइमणंतपत्ते, नाणेण सीलेणाय
सणेणा ॥ १७ ॥ रुक्खेसु णाते जह सामलीवा,
सि रति वेययंती सुवन्ना ॥ वणेसु वाणंदण
ाहु सेट्ठं, नाणेण सीलेण य भूतिपन्ने ॥ १८ ॥
णियव सद्दाण अणुत्तरे उ, चन्दोव ताराण

महाणुभावे ॥ गंधेसुवा चंदणमाहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्न माहु ॥ १९ जहा सयंभू उदहीणसेट्ठे, नागेसु वा धरणिंद माहु सेट्ठे ॥ खोउद ए वा रस वेजयंते, तवोवहाणे मुणिवेजयंते ॥ २० ॥ हत्थीसु एरावण माहुणाए सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा । पक्खी सुवा गरुले वेणु देवे निव्वाणवादी णिहणाय पुत्ते ॥ २१ ॥ जोहेसु णाय जह वीससेणे, पुप्फेसु वा जह अरविंद माहु ॥ खत्तीण सेट्ठे जह दंत वक्के इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥ २२ ॥ दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणां, सच्चे सुवा अणवज्जं वयंति ॥ तवेसु वा उत्तम बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नाय पुत्ते ॥ २३ ॥ ठिईण सेट्ठा लवसत्तमावा, सभा सुहम्माव सभाण सेट्ठा ॥ निव्वाण सेट्ठा जह सव्व धम्मा, णणायपुत्ता परमत्थीनाणी ॥ ॥ २४ ॥ पुढोवमे धुणइ विगय गेहि, न सण्णिहि कुव्वति आसुपन्ने ॥ तरिउं समुद्दं च महा-

भवोघं, अभयंकरे वीर अणन्त चक्खू ॥ २५ ॥
कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अ–
ज्झत्थ दोसा ॥ ए आणिवंता अरहा महेसी,
ण कुव्वई पाव ण कारवेइ ॥ २६ ॥ किरिया
किरियं वेण इयाण, वायं, अण्णाणियाणं पडियच्च
ठाणं ॥ से सव्ववायं इति वेयइत्ता, उवट्ठिए
संजम दोहरायं ॥ २७ ॥ से वारिया इत्थि
सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्खखयट्ठमाए ॥
लागं विदित्ता आरं पारंच, सव्वं पभू वारिय
व्व वारं ॥ २८ ॥ सोच्चाय धम्मं अरहंत भा-
यं, समाहितं अट्ठपदापसुद्धं ॥ तं सद्दहाणाय
ा, अणाऊ, इंदाव देवाहिव आगमिस्संति ॥
॥ त्तिवेमि ॥ २९ ॥
ति श्रीवीरत्थुतीनाम षष्टमध्ययन ॥ सम्मत्तं ॥

—✡✡—

॥ कलश ॥

पंच महव्वय सुव्वय मूलं ।
समणा मणाइल साहू सुचिन्नं ॥
वेर वेरामण पजवसाणं ।
सव्व समुद्द महोदधि तित्थं ॥१॥
तित्थंकरेहिं सुदेसिय मग्गं ।
नरग तिरिक्ख विवज्जिय मग्गं ॥
सव्व पवित्र सुनिम्मिय सारं ।
सिद्धि विमाण अवंगुय दारं ॥२॥
देव नरिंद नमंसिय पूय ।
सव्व जुगुत्तम मंगल मग्गं ॥
दुधरो संगुण नायक मेगं ॥
मोक्ख पहस्स वडिसग भूयं ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीवीर स्तुति समाप्तम् ॥

—xx—

व्याख्यानके प्रारम्भ

की

।। जिनवाणी स्तुति ।।

(सवैया)

ीर-हिमाचलसे निकसी, गुरू गौतमके मुख-कण्ड ढरी है ।
ोह-महाचल भेद चली, जगकी जड़तातप दूर करी है ।।
ान-पयानिधि मांहि रली,' बहु भङ्ग तरंगन तें उछरी है ।
ाशुचि शारद-गंग नदी प्रति, मैं अंजली निज शोश धरी है।१।
ान-सुनीर भरी सरिता, सुरधेनु प्रमोद सुखीर निधानी।
मेंज-व्याधि हरन्त सुधा, अघमैल हरन्त शिवाकर मानी ।।
ीर-जिनागम ज्योति बड़ी, सुर वृक्ष समान महासुख दानी।
ोक अलोक प्रकाश भयो, मुनिराज बखानत हैं जिनवानी।२।
ोभित देव विषे मघवा, उडुवृन्दविषै शशि मंगलकारी।
ूप-समूह विषै बलिचक्र, पती प्रगटे बल केशव भारी ।।
ागनमें धरणेन्द्र बड़ो, अमरेण्द्र असुरनमें अधिकारी ।
ों जिन शासन संघविषे, मुनिराज दिपें श्रुतज्ञान भँडारी।३।।

(छन्द)

कैसे करि केतकी कनेर एक कह्यो जात,
श्राक-दूध गाय-दूध श्रन्तर घनेर है॥
रीरी होत पीरी पर होस करे कंचनकी,
कहां कागवानी कहां कोयलकी टेर है।
कहां भानु तेज कहां श्रागियो बिचारो कहां,
पूनम उजारो कहां श्रमावस श्रंधेर है।
पक्ष छोड़ि पारखी निहारो नेक नीके करि,
जैन वैन श्रौर वैन श्रन्तर घनेर है ॥४॥

वीतराग वानी साची मुक्तिकी निसानी जानी,
सुकृतकी खानी ज्ञानी मुखसे बखानी है।
इनको श्राराधके तिरयें हैं श्रनन्त जीव,
ताको हो जहाज जान सरधा मन श्रानी है।
सरधा है सार धार सरधासे खेवो पार,
श्रद्धा बिन जीव ख्वार निश्चै कर मानी है।
वाणी तो घनेरी पर वीतराग तुल्य नाहीं,
इसके सिवाय श्रौर छोरां सी कहानी है॥५॥

ॐ दोहा उपदेशी ॐ

दया सुखानी वेलड़ी, दया सुखानी खाण ।
अनन्ता जीव मुक्ते गया, दया तणाफल जाण ॥१॥
हिंसा दुखानी वेलड़ी, हिंसा दुखानी खाण
अनन्ता जीव नरके गया, हिंसा तणाफल जाण ।२॥
जिम सुणो तिम ही करो, तो पहुँचो निरवाण ।
कई एक हृदय राख जो, थांने सुण्यांरो परमाण ।३॥
साधु भाव समचे कह्यो, मत कोई करजो ताण ।
कई एक हृदय राख जो, थांने सुणयारो परमाण ।४।

षट द्रव्यकी सज्झाय ।

षट द्रव्य ज्यामें कह्यो भिन्न भिन्न, आगम सुणत वखान
पंचास्ति काया नव पदारथ, पांच भाख्या ज्ञान ॥१॥
चारित्र तेरे कह्या जिनवर, ज्ञान दर्शन प्रधान।
जो शास्त्र नित सुणो भवियण आण शुद्ध मनध्यान
चौवीस तिर्थंकर लोक माही, तिरण तारण जहाज ।
नव वासु नव प्रतिवासु देवा, वारे चक्रवर्ती जाण ॥३॥
वलदेव नव सयहुवा त्रेसठ, घणा गुणारी खाण ।

जो शास्त्र नित सुनो भवियण,आण शुद्ध मन ध्यान ४।
च्यार देशना दिवी जिनवर, कियो पर उपकार।
पांच अणुव्रत तीन गुणव्रत च्यार शिक्षा धार ॥५॥
पांच संवर जिनेश्वर भाख्या, दया धर्म प्रधान।
जो शास्त्र नित सुणो भवियण, आण शुद्ध मन ध्यान
और कहां लग करूं वर्णन, तीन लोक प्रमाण।
सुणता पाप विणास जावे, पावे पद निर्वाण ।८॥
देव विमाणिक मांहे पदवी, कही पांच प्रधान।
जो शास्त्र नित सुणो भवियण आण शुद्ध मन ध्यान

इति पट द्रव्यकी सज्झाय समाप्तम्।

॥ नमोक्कार सहियं पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमोक्कार सहियं पच्चक्खामि, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं सहसागरेणं वोसिरामि।

॥ पोरिसियंका पच्चक्खाण ॥

पोरिसिय पच्चक्खामि उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा

भोगेणं सहसागारेणं, पच्छन्न कालेणं, दिसामो-
हेणं, साहुवयणेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं
वोसिरामि ।

॥ एगासणंका पच्चक्खाण ॥

एगासणं पच्चक्खामि तिविहंपि आहारं असणं
खाइमं साइमं, अन्नत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं
सागारियागारेणं आउट्टणपसारेणं, गुरु अब्भु-
ट्ठाणेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेण,
वोसिरामि ।

॥ चउव्विहार उपवासका पच्चक्खाण ॥

सूरे उग्गए अभत्तट्ठं पच्चक्खामि चउव्विहंपि
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं, अन्नत्थणा-
भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमा-
हिवत्तायागारेणं, वोसिरामि ।

॥ रात्रिचउव्विहारका पच्चक्खाण ॥

दिवस चरिमं पच्चक्खामि चउव्विहंपि आहारं
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं,

सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व समाहिव-
त्तियागारेणं वोसिरामि ।

॥ अथ सुक्ति मार्गकी ढाल ॥

मुगतिरो मारग दोहलो जीया चतुर सुजान ।
भजलोनी भगवान, तज दोनी अभिमान ॥मु०टेर॥
पृथवी काया नहीं छेदिये, जाणो निज मात समान।
त्रस थावर वासो बसे, घणा जीवा हुंदो खाण ॥१॥
पाणी विना परजा डुले, आशा करे रे राजन ।
ऊंचो मुखकर जोवता किरपा करो भगवान ॥२॥
वेचेरे फरजन आपरा, तो विण नहीं मिले धान।
धसको खाय धरती पड़े, ऊभा तज दे प्राण॥मु०३॥
तेऊ कायारो शसतर आकरो, वायू देवे रे वधाय।
उड़ता पड़े रे पतंगिया, जीव घणा जल जाय ॥४॥
तेऊ वाऊरो नीसरय्यो, मानव भव नहीं पाय ।
निश्चेरे जावे तिर्यचमें, घणो दुखियारो थाय ॥५॥
वनास्पति दोय जातरो, भाखी थी भगवान ।
सूई अग्रनिगोदमें, जीव अनन्ता वखान॥ मु० ६॥

ये पांचो ही थावर जाणिये, मतिवाओ तरवार ।
जीव गरीब अनाथ छै, मति काटो निरधार ॥मु०७॥
त्रसथावर हणिया बिना, पुद्गल पूजा न होय ।
बिन भुगत्यां छूटे नहीं, मरसी घणो रोय रोय ॥८॥
पुद्गलरी ऋपती करे, परतिख लूटै रे प्राण ।
अनुकम्पा घटमें नहीं, खुलि दुर्गति खाण ॥मु०६॥
रम्मत देखणने गयो। ऊभो रह्यो सारी रात ।
लघुनीत संकाघणी वाहिरनि सरियो नहीं जात।१०।
नाचै वैस्यारो तायफो निरखे रंग सुरंग ।
रमणीरे संगमें रचियो, पोढ्‌ लाल पिलंग ॥मु०११॥
दुख करने सुख मानतो, रूलियो काल अनन्त ।
लख चौरासी जीवा योनीमें, भाख्यो श्रीभगवंत ॥
गल कट्टू मिलिया घणा, भरियो ठगांरो बजार ।
कोई पुत्र जणनी जण्यो, चाले सूत्ररे अनुसार ॥
आ भव सम्पदा कारमो, जाणे वालूडांरो ख्याल ।
निश्चै परभव जावणो, वांधो पाणो पहिला पाल ॥
सुसरारे घरे जीमतो, सखियां गाय रहीं गीत ।

थोड़ा दिनामें पड़सी आंतरो निश्चेजानो यहीरीत।

कायरने चढ़े धूजणी, सूरा सनमुख होय।
नाठा जावे गीदड़ा, मानव भव दियो खोय ॥१६॥

ओ संग्राम कह्यो केवली; सूरा सनमुख थाय।
भूझ रहा अपनी देहसुं गुमान गर्व गंमाय ॥१७॥

जीव दयारो सिर सेहरो; बांध्यो श्रीनेमजिनंद।
गज सुकमाल वनड़ो वण्यो पाम्यां परमानन्द॥१८॥

मेतारज मोटा मुनि, धर्मरुचि अणगार।
हिंसाकुमतिसे डिगा नहीं खोल्या दयाना भंडार ।१९।

सेठ सुदर्शन जीतियो, जीव दयारे परसाद।
इन्द्र देवें परदक्षणा, उभा करे धन्यवाद ।मु०।२०।

गोत्र तिर्थंकर बांधियो, श्रीकृष्ण मुरार।

हुस्यांमें चोरीरी नियमा कही, लूंटे जीवांतणां वृन्द
गुरुरो भरमावियो, हो रह्या अन्धाधुन्ध ।मु०२४
रण मुनिसर इम भणे, पालो वरत अखंड ।
जीवदयारी धर्म आदरो,भाख्यो श्रीभगवन्त।।मु० २५।
॥ इति ॥

अथ श्रीशांतिनाथजी रो (तान) छन्द
लिख्यते ॥

श्रीशांति जिनेश्वर सोलामांजी,जगतारन जगदीश,
विनती म्हारी सांभलो, मैं तो अरज करूं धरि शीश
(आंकड़ी)

प्रभुजी म्हारो प्राण अधारोरे, सर्व जिवां हित कारोरे
साता वरताई सर्व देशमें, प्रभु पेटमें पोढ्या छो आप
जन्मे सेती सावधा थे. तो आया घणारी दाय ।
प्रभुजी मोरा प्राण अधारो रे
सर्व जीवांने हितकारोरे । चक्रवर्ति पदवी थां लीधी
प्रभु कीनो भरतमां राज, सुखभर संजम पालिया,
प्रभु सारिया छै आतम काज ॥ प्रभु० ॥

थोड़ा दिनामें पड़सी आँतरो निश्चेजानो यहीरीत ।
कायरने चढ़े धूजणी, सूरा सनमुख होय ।
नाठा जावे गीदड़ा, मानव भव दियो खोय ॥१६॥
ओ संग्राम कह्यो केवली; सूरा सनमुख थाय ।
झूझ रहा अपनी देहसुं गुमान गर्व गंमाय ॥१७॥
जीव दयारो सिर सेहरो; बांध्यो श्रीनेमजिनंद ।
गज सुकमाल बनड़ो बण्यो पाम्यां परमानन्द ॥१८॥
मेतारज मोटा मुनि, धर्मरुचि अणगार ।
हिंसाकुमतिसे डिगा नहीं खोल्या दयाना भंडार ।१९।
सेठ सुदर्शन जीतियो, जीव दयारे परसाद ।
इन्द्र देवै परदक्षणा। उभा करे धन्यवाद ।मु०॥२०॥
गोत्र तिर्थंकर बांधियो, श्रीकृष्ण मुरार ।
आज्ञा दिधो आणन्दसुं,लेवो संजम भार ।मु०।२१।
साढ़ी बारा बरसां लगै, झूझ्या श्रीवीर जिनन्द ।
जीव दयारो सिर सेहरो बांध्यो त्रिसलारे नंद ।२२।
कालोरे मुख कियो चोरनो, फेरय्यो नगर मंझार ।
समुद्रपाल ते देखनें, लीनों संजम भार ।मु०।२३।

हिंस्यामें चोरीरी नियमा कही, लूंटै जीवांतणां वृन्द
कुगुरुरो भरमावियो, हो रह्या अन्धाधुन्ध ।मु०२४
करण मुनिसर इम भणे, पालो वरत अखंड ।
जीवदयारी धर्म आदरो, भाख्यो श्रीभगवन्त॥मु० २५।
॥ इति ॥

। अथाश्रीशांतिनाथजी रो (तान) छन्द
लिख्यते ॥

श्रीशांति जिनेश्वर सोलामांजी, जगतारन जगदीश,
विनती म्हारी सांभलो, मैं तो अरज करूं धरि शीश
(आंकड़ी)

प्रभुजी म्हारो प्राण अधारोरे, सर्व जिवां हित कारोरे
साता वरताई सर्व देशमें, प्रभु पेटमें पोढ्या छो आप
जन्मे सेतो सायवा थे, तो आया घणारी दाय।
प्रभुजी मोरा प्राण अधारो रे
सर्व जीवांने हितकारोरे। चक्रवर्ति पदवी थां लीधी
प्रभु कीनो भरतमां राज, सुखभर संजम पालिया,
प्रभु सारिया छे आतम काज ॥ प्रभु० ॥

तीर्थनाथ त्रिभुवन धणी प्रभु थाप्या छे तीर्थ चार
समोसरण मेला रह्याजठे सिंघ बकरी इक ठाम।प्र०
सुरनर क्रोड़ सेवा करे प्रभु वरषे छे अमृत धार
अमिझरनिज साहेबा थे तो आया ६०रे दाय।प्र०
देव घणा इमे ध्यावियां प्रभु गरज सरी नहीं कोय
अबके साचा साहबामें तो अराध्या मन मांय।।प्रभु।
लख चोरासी जीवा जोनिमें, प्रभु भटक्यो अनंती वार
सेवक सरणो आवियो म्हारो आवागमन दो निवार।
साताकारी संतजी प्रभु त्रिभुवन तारनहार।
विन्ती म्हारी सांभलो मने भवसागर सूं तार ।।प्र०।
रिख चोथमलजी री विनती, प्रभु सुण जो दुतियाछंद
अविचलपदवीथेपामिया, प्रभुआपअचलाजीरानंद।प्रभु

॥ अथ कर्मोंकी लावणी ॥

करम नचावे ज्युंही नाचे ऊंचो हुवणरे सबी खसता
नकसीहुवणसूं कोईनराजी निंदाविकथाक्युं करता। टेर
ओगणवाद तूं बोले लोकांरा चेतन भूल है तुझमाहीं
थांरे करममें काई लिखी है थारी तुझ सूझे नाहीं

ववदे पूरब च्यार ज्ञान था, कर्मोसे छूटा नाहीं।
ऊंचो चढ़के पड़े कोचड़में, ज्ञानी वचन झूठा नाहीं
पाप उदेमें आवे चेतन, फीर समगतीमें आवे नाहीं
पुण्डरीक गोसालो देख जमाली,खोटी व्यापै घटमाहीं

(उड़ावणी)

मोह छाक मोटो मदपीसे, श्रोगण औरोंका तू क्यों घोंसे। थारा श्रोगण तुझको नहीं दीसै,अनेक श्रोगण या थारी आतमा,ज्ञानी वच पकड़ो रस्ता। नकसी०।
पांच प्रकारे काम भोगतूं, सेवे सेवावं सारा करता
शब्द वरण गन्ध रूद फरसतूं,जहर खायके क्यूं मरता
आछी भूंड़ी कथा लोकांरी,करतां आतम भारी करता
केने रावैं केने विसरावै हरख हरख आनंद धरता
आंव वंछे और वंबूल वावै,आम रस मुख किम पड़ता
रोग सोग दुख कलह दालिदर, दुखमें दुख पैदा करता

(उड़ावणी)

थारी म्हारी करता दिन जावै, आमा सामा भाठा भिड़ावै सुखमें दुख तूं वैर धलावै, ज्यों दीपकमें पड़ै

पतंगा चेतन दुरगति क्यूं पड़ता ॥ नकशी० ॥२॥
हुंतरो तू क्या (काई) सरावै, अणहूँतका क्या विसरात
पुन्य पाप जो बांधा जीवनें वैसा ही फल पाता है
किणने माया दीवी भोगणने, कोई रखवाली करता है
जस अपजस जो लिखा करममें, जैसा कारज सरता है
पाप अठारे सेंधा जीवरे, इणमें सब ही फसता है
स्वादवाद (सुख) और कामभोगमें, कूचा पुन्नों का करत

(उड़ावणी)

रुच २ दाप बांधे तू सोरा उदे आयां भोगंता दोरा
लख चौरासी भुगते फोड़ा, आक थोर और तुंबा
निबोली पाप फल कड़वा लगता ॥ नकशी ॥३॥
विपाक सूत्रमें मिरगा लोढ़ो, देखो पाप उदे आया
हाथ पांव मुख आकार नाहीं, राजा घर बेटा जाया
जीमण पापी एक ही सुरमें झाड़ा नाड़ा उणमें लाया
ज्युं नदीके टोल समाने, इन खाबे उनकी काया
नरक सरीखा दुख जिन भाख्या, मलमूत्रमेंलपट रह्या
अत्यन्त दुर्गन्धजागा गन्धावै, भवरेमांही ढक्या रह्या

(उड़ावणी)

गाड़ो भरयो आहार करावे, उणभवरेमें कोईयन जावें
जो जावै तो मुरछा आवै, विचित्र गति करमोंको
भाखो ज्ञानी वचन पकड़ो रसता ।। नकसो० ।।४।।
क्रोध मान और माया लोभमें, वीर तणी गततेपाई
खाय रगड़ तुझ थुक्यो चेतन पगोंमें ठोकर खाई
विविध प्रकारे साग चौहटे ओडोमें मालण लाई
एक कोडीरे केई भावमें अनन्तीवार तूं विकआयो
च्यार गति छव काया मांही, दड़ी दोटे जूं भमि-
आयो काल अनन्तो वोत्यो हे चेतन, नरक
निगोद झोंको खायो (उड़ावणी)
उठे मान थे क्योंकीनोनी, हणे (अबो) वोले ज्यूं
वोल्यो क्यूं नो
अनन्त जीवांरो तूं जो खूनी, नानुचवाण की इये
उपदेशी चतुर अर्थ हिरदै धरता ।। नकशो० ।।५।।

।। इति पद ।।

—✿✿—

॥ सास उसासको थोकड़ो ॥

मगद देश राजगिरि नगरी जां श्रेणिक राजा राज करे। ज्यां सम्मण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी चउदेह हजार मुनिराजका परिवारसे समोसरिया। जिहां चन्दन बालाजो आदिदेइने छत्तिस हजार आरजांजीका परिवारसे पधारया,तवश्रेणिकराजा चेलणां राणी अभयकुमार अनेक राजपुत्र अंतेवर परिवार सहित भगवन्तने वन्दना करवाने गया।

ॐ दोहा ॐ

ज्यां बारे प्रकारको प्रवखदा, विद्याधरांकी जोड़।
गौतम स्वामी पूछिया, प्रश्न बेकर जोड़ ॥१॥
सुण हो त्रिभुवन धणी, पूंछूं बारे बोल।
तेनो उत्तर दीजिये, शंका दीजे खोल ॥ २ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्ष छमन्छर कितना ?

उत्तर—हो गौतमजी एक सौ ॥ १ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना जुग कितना ?

उ०—हो गौतमजीबीस ॥ २ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्ष की एना कितनी ?

उ०—हो गौतमजी दोय सौ ॥ ३ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना ऋतु कितना ?

उ०—हो गौतमजी छै सौ ॥ ४ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना महीना कितना ?

उ०—हो गौतमजी बारा सौ ॥ ५ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना पखवाड़ा कितना !

उ०—हो गौतमजी चौबीस सौ ॥ ३ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षकी अठवाड़ा कितना ?

उ०—हो गौतमजी अड़तालीस सौ ॥ ७ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना दिन कितना ?

उ०—हो गौतमजी छत्तीस हजार ॥ ८ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षनी पहर कितनी ?

उ०—हो गौतमजी दो लाख अट्ठासी हजार ॥ ९ ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना मुहूरत्त कितना ?

उ०—हो गौतमजी दस लाख ८० हजार ॥ १० ॥

प्र०—हो भगवान सौ वर्षना काच्ची घड़ियां कितनी
उ०—हो गौतमजी २१ लाख ६० हजार ॥११॥
प्र०—हो भगवान सौ वर्षना सास उसास कितना?
उ०—हो गौतमजी ४ अरब ७ करोड ४८ लाख
४० हजार। ॥ इति ॥

प्र०—हो भगवान कोई समदृष्टी जीव राग द्वेष करके रहित दयाधर्म करके सहित, एक उपवास करके अटपोहरको पोसो करे तिणको कांई फल होवे ?
उ०—हो गौतमजी २७ सौ अरब ७७ क्रोड ७७ लाख ७७ हजार ७ सै ७७ पल्योपम झाजेरो नारकीनो आयु तुटे। देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ १ ॥
प्र०—हो भगवान, कोई पोसा रहित पोरसी करे तिणको कांई फल होवे ?
उ०—हो गौतमजी ३४६ क्रोड २२ लाख २२ हजार२२२ पाल्योपम झाजेरो नारकीनो आऊ

षो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥२॥

०—हो भगवान कोई आधा मुहूरतको संवर करे तिणको कांई फल होवे ?

०—हो गौतमजी ४६ करोड २६ लाख ६१ हजार ६ सैं पल्योपम झाजेरो नारकीनों आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥३॥

०—हो भगवान कोई एक समायक करे तिणको कांई फल होवे ?

०- हो गौतमजी ६२क्रोड ५६ लाख २५ हजार ६ सैं२५ पल्योपय झाजेरो नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ४ ॥

०—हो भगवान कोई घड़ी घडीनां पच्चक्खान करे तिणकों कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी २ क्रोड ५३ हजार ४०८ पल्योपम झाजेरो नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ५ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक नवकार मन्त्रको

ध्यान करे तिनको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी १६ लाख ६३ हजार २६३ पाल्योपम भाजेरो नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ६ ॥

प्र०—हो भगवान कोई एक अनापुर्वीगणे तिनको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी जगंन ६० सागरोपम भाजेरो उतकृष्टथ्या पांच सौ सागरोपमभाजेरो नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे

प्र०—हो भगवान कोई एक नवकार सी करे तिणकों कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी सौ वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ८ ॥

प्र०—हो भगवान ! कोई एक पोरसी करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी १ हजार वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥ ९ ॥

प्र०—हो भगवान कोई दो पैरसी करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी १० हजार वर्ष नारकीनो आऊपो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥१०॥

प्र०—हो भगवान कोई तीन पोरसी करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ! एक लाख वर्ष नारकीनो आऊपो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥११॥

प्र०—हो भगवान कोई एक एकासणो करे तिणकों कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी दस लाख वर्ष नारकीनो आयुपो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥१२॥

प्र०—हो भगवान कोई एक एकल ठाणो करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी एक क्रोड वर्ष नारकीनो आऊपो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥१३॥

प्र०—हो भगवान कोई एक नेई करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी दस क्रोड वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥१४॥

प्र०—हो भगवान कोई एक अमल करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी एक अरब वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥१५॥

प्र०—हो भगवान कोई एक उपवास करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ! एक हजार क्रोड वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥१६॥

प्र०—हो भगवान कोई एक अभिग्रह करे तिणको कांई फल होवे ?

उ०—हो गौतमजी ! दस हजार क्रोड वर्ष नारकीनो आऊषो तुटे । देवतानो शुभ आयुष बांधे ॥१७॥ ॥इति॥

एक मुहूरतका ३७७३ सासउसास ॥१॥

एक पहरका १४१४६ सासउसास ॥२॥

एक दिन रातका ११३१६० सासउसास ॥३॥

१५ दिनका—१६६७८५० सासउसास ॥४॥

१ महीनाका—३३६५७०० सास उसास ॥५॥

३ महीनाका—१०१८७१०० सास उसास ॥६॥

६ महीनेका—२०३७४२०० सास उसास ॥७॥

६ महीनेका—३०५६१३०० सास उसास ॥८॥

१२ महीनेका—४०७४८४०० सासउसास जाणवो ६

॥ इति ॥

पृथ्वी-कायका जीव एक मुहूरत में १२८२४ जनम मरण करे ॥१॥

अपकायका जीव एक मुहूरत में १२८२४ जनम मरण करे ॥२॥

तेऊ कायका जीव एक मुहूरत में १२८२४ जनम मरण करे ॥३॥

वायुकायका जीव एक मुहूरत में १२८२४ जनम मरण करे ॥४॥

प्रत्येक वनस्पतिकायका जीव एक मुहूरतमें ३२०० जनम मरण करे ।। ५ ।।

साधारण वनस्पतिकायकाजीव एक मुहूरतमें ६५५३६ जनम मरण करे ।। ६ ।।

बेइन्द्रीजीव एक मुहूरतमें ८० जनम मरण करे ।।७।।

ते इन्द्रीजीव एक मुहूरतमें ६०जनम मरण करे ।।८।।

चऊ इन्द्रीजीव एक मुहूरतमें४० जनम मरण करे।।६।।

असंनी पंचेन्द्री जीव एक मुहूरतमें २४ जनम मरण करे ।। १० ।।

संनी पंचेन्द्री जीव एक भव करे ।

।। इति सासउसासकी थोकडो संपूर्णम् ।।

—☼☼—

।। मोक्ष मार्गनो थोकड़ो प्रारम्भी ए छे ।।

श्रीगौतम स्वामीजी महाराज हाथ जोड़ी मान मोड़ी वन्दणां नमस्कार करके सम्मण भगवंत श्रीमहावीर देवने पूजता हुआ ।।

प्र०—हो भगवान ! जीव कर्मोंके वसकिम रमरयो?

'हो गौतमजी जिम तिलोमें तेल रमरयो'

'जिम सेलड़ीमें रस रमरयो'

'जिम दहोमें मक्खन रमरयो''

'जिम पाषाणमें धातु रमरयो'

'जिम फूलमें वासना रम रही'

'जिम खर पृथ्वीमें हींगलू रमरयो'

'तिम यो जीव कर्मांके वस रमरयोछे ॥

प्र.–हो भगवान यो जीव किम करीने मुगत जावसी?

उ.–हो गौतमजी ! जिम कोई संसारी पुरुष संसार की कला केलवीन जिम तिल्ली सु तेल काढ़े

'सेलडीमेंसे रस काढ़े ।'

'दहीमें सु माखन काढ़े ।'

'फूलमें सु अतर काढ़े ।'

'पाषाणमें सु धातु काढ़े ।''

'खर पृथ्वीमें सु हींगुल काढ़े ।'

तिम यो जीव, ज्ञान 'दर्शन' चारित्र, तप अंगोकार करीने मुगत जावसी ।

प्र.—हो भगवान ! जीव जीव सगला मुगतमें जावेगा अजीव अजीव अठे रह जावेगा ?

उ.—हो गौतमजी नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र.—हो भगवान कांई कारण से ?

उ.—हो गौतमजी ! जीवका दो भेद एक सूक्ष्म दूसरा बादर । ते बादर कु मुगतिछे सूक्ष्म कु नहीं ।

प्र.—हो भगवान ! बादर बादर जीव सगला मुगतमें जावेगा, सूक्ष्म सूक्ष्म जीव सगला अठे रह जावेगा ?

उ.—हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र.—हो भगवान ! कांई कारण से ?

उ.—हो गौतमजी ! बादर दो भेद एक त्रस दूजा स्थावर त्रसकु मुगती छे स्थावरकु मुगत नहीं ।

प्र०-हो भगवान ! त्रस त्रस सगला मुगतमें जावेगा, स्थावर २ सगला अठे रह् जावेगा ?

उ.-हो गोतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र.-हो भगवान कांई कारण से ?

उ.-हो गौतमजी ! त्रसका दो भेद (१) पंचेंद्री ने (२) तीन विकलेन्द्री। पंचेन्द्रीकु मुगत छे तीन विकलेन्द्री कु मुगत नहीं।

प्र.-हो भगवान पञ्चेन्द्री २ सगला मुगत जावेगा तिन विकलेन्द्री २ सगला अठे रह जावेगा ?

उ.-हो गौतमजी ! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र.-हो भगवान कांई कारण से ?

उ.-हो गौतमजी ! पंचेन्द्रीका दो भेद एक सन्नी दूजा असन्नी। सन्नीकु तो मुगत छे असन्नी कु मुगत नहीं।

प्र.-हो भगवान ! सन्नी २ सगला मुगत जावेगा

असन्नी २ सगला अठे रह जावेगा ?

उ.–हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ

समर्थ नहीं।

प्र.–हो भगवान कांई कारणसे ?

उ.–हो गौतमजी ! सन्नीका दो भेद, एक मनु

दूजा तिर्यञ्च, मनुष्य कु तो मुगती छे त्रिय

चकु मुगती नहीं।

प्र.–हो भगवान मनुष्य २ सगला मुगतमें जावेग

त्रियञ्च त्रियञ्च अठे रह जावेगा ?

उ.–हो गौतमजी नो अठे समठे यो अर्थ सम

नहीं।

प्र.–हो भगवान कांई कारणसे ?

उ.–हो गौतमजी ! मनुष्यका दो भेद एक सम

दृष्टि, दूजा मिथ्यादृष्टि। समदृष्टिकु मुग

छे मिथ्यादृष्टीकु मुगत नहीं।

प्र.–हो भगवान ! समदृष्टी २ सगला मुगत

जावेगा मिथ्यादृष्टि २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गोतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान कांई कारणसे ?

उ०—हो गोतमजी ! समदृष्टोका दो भेद एक व्रती दूजा अव्रती; व्रतीकु मुगत छे अव्रतीकु मुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान व्रती व्रती सगला मुगतमें जावेगा, अव्रती २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गोतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! कांई कारणसे ?

उ० हो गोतमजी ! व्रतीका दो भेद एक सर्वव्रती दूजा देशव्रती; सर्वव्रतीकु मुगत छे देशव्रतीकु मुगत नहीं ।

प्र०—हो भगवान ! सर्वव्रती २ सगला मुगत में जावेगा देशव्रती २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांईं कारणसे ?

उ०—हो गौतमजी ! सर्वव्रतीका दो भेद एक प्रमादी दूजा अप्रमादी ; अप्रमादीकुं मुगत छे प्रमादीकुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान ! अप्रमादी अप्रमादी सगला मुगतमें जावेगा, प्रमादी २ अठे रह जावेगा?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांईं कारणसे ?

उ०—हो गौतमजी ! अप्रमादीका दो भेद एक क्रियावादी दूजा अक्रियावादी क्रियावादीकुं मुगत छे अक्रियावादीकुं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान ! क्रियावादी २ सगला मुगतमें जावेगा अक्रियावादी २ सगला अठे रह जावेगा ?

उ.–हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र.–हो भगवान कांई कारणसे ?

उ.–हो गौतमजी ! क्रियावादीका दो भेद एक भवी दूजा अभवी, भवीकू तो मुगत छे अभवीकु मुगत नहीं ।

प्र.–हो भगवान ! भवी भवी सगला मुगतमें जावेगा अभवी २ अठे रह जावेगा ?

उ.–हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं ।

प्र.–हो भगवान कांई कारणसे ?

उ.–हो गौतमजी ! भवीका दो भेद, एक विनीत दूजा अविनीत विनीतकु मुगत छे अविनीत कु मुगत नहीं !

प्र.–हो भगवान ! विनीत २ सगला मुगतमें जावेगा, अविनीत २ अठे रह जावेगा ।

उ.–हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र.–हो भगवान ! कांई कारण से ?

उ.–हो गौतमजी ! विनीतका दो भेद एक सकपाई दूजो अकपाई, अकपाईकु मुगत छे सकपाईकू मुगत नहीं।

प्र.–हो भगवान ! अकपाई अकपाई सगला मुगतमें जावेगा सकपाई २ अठे रह जावेगा ?

उ.–हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र.–हो भगवान ! कांई कारणसे ?

उ.–हो गौतमजी ! अकपाई का दो भेद एक उपशम श्रेणी दूसरा क्षपक श्रेणी, क्षपक श्रेणीवालाकू मुगत छे उपशम श्रेणीवालाकू मुगत नहीं।

प्र.–हो भगवान क्षपकश्रेणी २ वाला सगला मुगतमें जावेगा उपशमश्रेणी २ वाला अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगमान कांई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी ? क्षपक श्रेणीका दो भेद, एक छदमस्त दूसरा केवली; केवली कूं तो मुगत छे छदमस्त कूं मुगत नहीं।

प्र०—हो भगवान केवली २ सगला मुगतमें जावेगा छदमस्त २ अठे रह जावेगा ?

उ०—हो गौतमजी ! नो अठे समठे, यो अर्थ समर्थ नहीं।

प्र०—हो भगवान कांई कारण से ?

उ०—हो गौतमजी ! केवली का दो भेद एक संयोगी केवली दूसरा अयोगी केवली, अयोगी केवलीने मुगत छे संयोगी केवलीने मुगत नहीं; ते अयोगी केवली नी स्थिति, पांच लघु अक्षरकी अः इः उः एः अंः ए पांच लघु अक्षरको स्थिति जाणवी ॥

॥ इति मोक्ष मार्गको थोकड़ो संपूर्णम् ॥

॥ २०बोलकरी जीव तीर्थंकर गोत्र बांधे

१--अरिहन्तजीका गुणग्राम करतो थको जी
कर्मांकी कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आ
तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

२--सिद्ध भगवंतजीका गुणग्राम करतो थको जी
कर्मां की कोड खपावे, उत्कृष्टी रसाण आ
तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

३--आठ प्रवचन दया माताका आराधतो थ
जीव कर्मां की कोड खपावे उत्कृष्टी रसा
आवे तो तीर्थङ्कर गोत्र बांधे।

४--गुणवन्त गुरूजीका गुणग्राम करतो थको जी
कर्मां की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आ
तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

५--थेवरजीना गुणग्राम करतो थको जीव कर्मां
की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो
तीर्थङ्कर गोत्र बांधे।

६--बहुसूत्रीजी का गुण ग्राम करतो थको जीव कर्मांकी कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

७--तपसीजीका गुणग्राम करतो थको जीव कर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

८--भण्यागुण्या ज्ञान चितारतोथको जीवकर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

९--समकित शुद्ध निर्मलीपालतो थकोजीव कर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१०--विनय करतो थको जीव कर्मा की कोड़ खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे

११--दोय वेला पडिक्कमणो करतो थको जीव कर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टी रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे।

१२--लोभाव्रत पच्चक्खाण निरमलापालतो थको जीव कर्माकी कोड खपावे उत्कृष्टो रसान आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

१३--धर्म ध्यान सुक्ल ध्यान ध्यावतो थको जीव आर्त ध्यान रुद्र ध्यान वरजतो थकोजीव कर्माकी कोड खपावे उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

१४--बारह भेदे तपस्या करतो थको जीव कर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

१५--अभयदान सुपात्रदान देवतो थको जीव कर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

१६--व्यावच दस प्रकारकी करतो थको जीव कर्माकी कोड खपावे उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

१७--सर्व जीवाने साता उपजावतो थको जीव

कर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

८–अपूर्वकरण ज्ञान नयो नयो भणतो सीखतो थको जीव कर्मा की कोड खपावे, उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

९–सूत्र सिद्धांतनो विनय भगती उत्कृष्ट भाव से करतो थको जीव कर्मा की कोड खपावे, उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे

१०–ग्राम नगर पुर पाटन विचरता, मिथ्यात उत्थापतां, समगत थापतां जीव कर्मा की कोड खपावे उत्कृष्टो रसाण आवे तो तीर्थंकर गोत्र बांधे ।

। इति संपूर्णम् ॥

—※※—

।। गुरू चेलाको संवाद ।।

गुरू—देख्यो रे चेला बिना रुख छाया, देख्यो रे चेला बिना धन माया। देख्यो रे चेला बिना पास बन्धन, देख्योरे चेला बिना चोरी दंडन ।। १ ।।

चेला—देख्या गुरूजी बिना रुख छाया, देख्या गुरूजी बिना धन माया । देख्या गुरूजीबिना पास बन्धन, देख्या गुरूजी बिना चोरी दंडन ।। २ ।।

गुरू—कहोनो चेला बिना रुख छाया, कहोनी चेला बिना धन माया । कहोनी चेला बिना पास बधन । कहोनी चेला, बिना चोरी दण्डन ।३।

चेला—बादल गुरूजी बिना रुख छाया, विद्या गुरु जो बिना धन माया । मोह गुरुजी बिना पास बंधन । चुगली गुरुजी बिना चोरी दण्डन ।। ४ ।।

गुरू—देख्यो रे चेला बिना रोग गलतां, देख्यो रे

चेला बिना अग्नि जलतां । देख्यो रे चेला बिना प्यार प्यारा, देखो रे चेला बिना खार खारा ॥ १ ॥

चेला—देख्या गुरुजी बिना रोग गलतां, देख्या गुरुजी बिना अग्नि जलतां । देख्या गुरुजी बिना प्यार प्यारा, देख्या गुरुजी बिना खार खारा ॥ २ ॥

गुरु—कहोनी चेला बिना रोग गलतां, कहोनी चेला बिना अग्नि जलतां । कहोनी चेला बिना प्यार प्यारा, कहोनी चेला बिना खार खारा ॥ ३ ॥

चेला—चिन्ता गुरुजी बिना रोग गलतां, क्रोधी गुरुजी बिना अग्नि जलतां । साधू गुरुजी बिना प्यार प्यारा, हिंसा गुरुजी बिना खार खारा ॥ ४ ॥

गुरु—देख्यारे चेला बिना पाल सरवर, देख्यारे चेला बिना पान तरुवर । देख्यारे चेला बिना पांख

सूवा, देख्या रे चेला विना मौत मूवा ॥१॥

चेला—देख्या गुरुजी विना पाल सरवर, देख्या गुरूजी विना पान तरवर। देख्या गुरूजी बिना पंख सूवो, देख्या गुरूजी बिना मौत मूवो ॥ २ ॥

गुरु—कहोनी चेला विना पाल सरवर, कहोनी विना पान तरुवर। कहोनी चेला बिना पांख सूवा, कहोनी चेला विना मौत मूवा ॥३॥

चेला—तृष्णा गुरूजी बिना पाल सरवर, नेत्र गुरूजी विना पान तरवर। मन गुरूजी बिना पांख सूवा, निद्रा गुरूजो बिना मौत मूवा ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

।※※—

॥ गुरु दर्शन विनती ॥

मूल मत जावोजी गुरु म्हांने, बिछड़ मत जाओजो गुरु म्हाने ॥ म्हे अरज करोछों थाने ॥ मूल मत जाओजी ॥ टेर ॥ सदगुरु प्रेम हिया सों जडिया, प्रगट कहूँ क्या छाने । जो मुझसे अपराध हुए तो, करम दोष गुरु म्हांने ॥मू०॥१॥ भवसागर जलसे भरियो, जीव तिरण नहि जाने । जीरण नाव जोजरी डूबे, पार करो गुरु म्हांने॥मू०॥२॥ मैं चाकरसे चूक पड़ी तो, गुरु अवगुण नहि माने । मैं बाल गुनाह किया बहुतेरा, पिता विरद इस जाने ॥ मू० ॥३॥ मेरी दौड जहां लग सद्गुरुजी, नमस्कार चरणामें । भैरुंलाल कर जोड़ बोलवे, धन धन है संताने ॥ मू० ॥४॥

—☆☆—

॥ देव गुरू धर्म विषे स्तवन ॥

(देशी ख्यालकी)

गुरु ज्ञान नगीना, भलोरे बतायो मारग मोक्षको ॥ टेर ॥ अरिहंत देवने ओलख्या सरे, होवे परम कल्याण ॥ द्वादश गुणेकरी शोभता सरे, ते श्री अरिहंत जाण हो ॥गुरु०॥१॥ निरलोभी निरलालची सरे, ते गुरु लीजें धार । आप तरे पर तारसो सरे, ते साचा अणगार हो ॥गु०॥ ॥२॥ भेख धारी छोड देवो सरे, देखो अन्तरज्ञान। भेख देख भूलो मती सरे, करजोहिये पेछान हो ॥ गु० ॥३॥ वीतरागका वचनमें सरे, हिंसा न परवी मूल । हिंसा माहीं धर्म गरूपे, ज्यांके मुंडे धूल हो ॥ गु० ॥ ४ ॥ देव गुरु धर्म कारने सरे, हिंसा करसोकोय । ते रूलसी संसारमें सरे, लीजो सूत्रमें जोय हो ॥ गु० ॥ ५ ॥ समकित दीधी मुझ गुरुसरे, जीव अजीव ओलखाय । त्रस थावर जाण्या विना सरे, कहो समकित किम थाय हो

॥गु० ६॥ दया दान उथापने बोले, वीर गया छे चूक । ते मर दुरगत जावसी सरे, करसी कूंका कूक हो ॥गु० ७॥ धर्म २ सब कोई कहे सरे, नहीं जाणे छे काय । धर्म होवे किण रीतसुं सरे, जोवो आगमके मांय हो ॥गु० ८॥ गुरु प्रसादे समकित मिली सरे, गुरु सम और नहीं कोय । गुरु विमुख जे होय सो सरे, जेहुने समकित किम होय हो ॥गु ९॥ कषाय परगत ओलखी सरे, लीजो समकित सार । राम कहे पाम्यां नहीं सरे, विन समकित कोइ पार हो ॥गु० १०॥ समत उगणीसे असाढ़में सरे, नागौर शहर चौमास । कार्तिक वदी पंचमी सरे, सामी विरधीचन्दजी प्रसाद हो ॥गुरु॥ ११॥

— इति पदम् —

—✿✿—

जंबू कुमारजीरी सज्झाय

राजगृहीना वासीयाजी, जंबू नाम कवार,
ऋषभदत्त रा डोकराजी भद्राज्यांरी माय, जंबू
कह्यो मान लेजाया मत ले संजम भार ॥१॥ सुधर्मा
स्वामी पधारियाजी राजगृही रे माय । कोणक
वंदण चालियोजी, जंबू बांदण जाय ॥जंबू०॥२॥
भगवतबाणी बागरीजी, वरसे अमृत धार । वाणी
सुणी वैरागियाजी, जाण्यो अथिर संसार॥जंबू०॥३॥
घर आया माता कनेजी, वंदे बारम्बार । अनुमत
दीजे म्हारी मातजी माता लेसु संजम भार ॥जंबू॥
॥४॥ माता मोरी सांभलो जननी लेसु संजम
भार ॥जंबू०॥ ये आठुहीं कामिणी, जंबू अपछरे
उणीहार । परणीनें किम परिहरो, ज्यांरो किम
निकले जमवार ॥जंबू०॥५॥ ये आठूहीं कामिणी,
जंबू तुझ विन बिलखी थाय । रमिणी ठमियां मु
नीसरे ज्यांरो वदन कमल चिसलाय ॥जंबू०॥ ६॥
मति हीणो कोइ मानयो माता मिथ्यामत भरपूर ।

रुप रमणीसूं राचिया ज्यांरा नहीं हुवा दुरगत दूर। माता मोरी सांभलो जननी लेसूं संजम भार ॥ जंबू० ॥ ७ ॥ पालपोस मोटो कियो, जंबू इम किम दे छिटकाय। मात पिता मेले झूरता, थानें दया नहिं आवे मांय ॥ ज० ॥८॥ एक लोटो पानी पियो, माता मायर बाप अनेक, सगलारी दया पाल सुं माता आणीने चित्त विवेक। माता मोरी सां०॥६॥ ज्युं आंधारे लाकड़ो जंबू तूं म्हारे प्राण आधार। तुझ बिन म्हारे जग सूनो जाया जननी जीत वराल ॥जंबू०॥१०॥ रतन जड़ित रो पींजरो, माता सूवो जाणे सही फंद, काम भोग संसारना,माता ज्ञानी जाने झूठा फंद ॥जंबू०॥११॥ पांच महाव्रत पालणो जबू, पांचोही मेरु समान दोष बयालिस, टालणो जंबू, लेणो सुजतो आहार॥जं०॥१२॥ पंच महाव्रत पालसुं माता पांचुंही सुख समान, दोष बयालिस टालसुं. माता लेसूं सुजतो आहार ॥ माता० ॥ १३ ॥

संजम मारग दोहिलो जंबू चलणो खांडेरी धार। नदी किनारे रुखड़ो जम्बू जद तद होय विनाश ॥जम्बू०॥ ॥१४॥ चाँद बिना किसी चांदणी जंइ तारा विना किसी रात ! वीर बिना किसो बैनड़ी, जम्बू झुरसी वारतिवार ॥जंवू०॥१५॥ दीपक बिना मन्दिर सूनो कंता, पुत्र बिना परिवार। कंत बिना किसी कामणी, कता झुरसी बारोही मास। बातमजी कह्यो मान लो, थेतो मत लो संजम भार॥ जं०॥१६॥ मात पिता मैलो मिल्यो, गोरो मिल्यो अनंती बार। तारण समरथ कोई नहीं गोरो, पुत्र पिता परिवार ! सुन्दर कह्यो सांभलो, म्हे लेसुं संजम भार॥जं०॥१७॥ मोह मत करो मोरी मातजी माता मोह किया बंधे कर्म ? हालर हूलर क्यों करो, माता मोह कीया बंधे कर्म ॥मा० ॥ १८॥ ये आठूंही कामिणी जंबू, सुख बिलसो संसार। दिन पाछो पड़िया पछे थे तो लीजो संजम भार॥ जं० ॥ १९ ॥ ए आठूंही कामिणी माता, समझाई

एकण रात जिन जीरो धर्म पिछाणियो, माता संजम लेसी म्हारे साथ ॥मा०॥२०॥ मात पिताने तारिया, जंबू तारी छे आठुंहिनार सासु ससुरा ने तारिया जंबू पांचसे प्रभव परिवार। जंबू भलो चेतियो थेतोलीजो संजम भार ॥ मा० ॥ २१ ॥ पांचसैं ने सत्ताइस जणासु, जंबू लीनो संजम भार। इग्यारे जीव मुगते गया, साधूवाकी स्वर्ग मझार जंबू० ॥ २२ ॥

॥ इति पदम् ॥

पूज्य श्रीलालजी महर्षिकी लावणी।

श्रीहुकम मुनि महाराज हुवे वड़भागी। महाराज क्रिया उद्धार कराया जी। शिवलाल उदय मुनि पाट चौथ श्रीलाल दिपायाजी॥ टेर ॥ उगणी सैं छव्वीसे टोंक सहरके माहीं। महाराज पूज्यका जनम जो थाया जी। है ओस बंश वंब जिन कुल धन २ कहलायाजी चुनीलालजी पिता हरख बहु

अमृत सम रस भीनो । चारो संघ सन्मुख भीला-
वण बहु दीनो, महाराज चौथ पूज्य स्वर्ग सिधा-
याजी ॥ शिवला० ॥ ४ ॥ मुनि सम भाव शांति
मूरत है प्यारी । महाराज सम्पगुण अधको पाया-
जी । ये भक्तवच्छल मुनिराज सबकों अधिक सुहा-
याजी । रतलाम शहर चौमासो पूरण करके महा-
राज फिर इन्दौर सिधायाजी । कई ग्राम नगर पुर
विचर बहु उपकार करायाजी (उडावणी) मुनि
जहां जावे तहां लागे सबको प्यारे । बया अमृत
वाणी मूरति मोहन गारे । मुनि जहां विचरे वहां
करें बहुत उपकारे । तपस्या सामाइक पोसध व्रत
बहुधारे, महाराज भव्य मन बहु हुलसायाजी ॥
शिव० ॥५॥ फेर साल अठावन नये शहर पधारया
महाराज जहांमें दरसण पायाजी, कोई रोम रो
हरसाय, हिया मेरा ऊमटायाजी । उस वखत बी
मेरे मनमें गुणकय गाऊं महाराज चित्त मेरा सर
चायाजी विण थिरता नहीं थी, जिसमें नहीं कुछ

गुणकथ गायाजी (उड़ावणी) अब दीनदयाल
दया निधि तुम हो मेरे, अब रखो हमारी लाज
शरण हूँ तेरे। कृपाकर काटो लख चौरासी फेरे।
दरशण कर पीछा आया फिर अजमेरे महाराज
मनमें बहु पछतायाजी ॥ शिव० ॥ ६ ॥ अठावने
साल जोधाणे चौमासो कीनो, महाराज धर्मका
ठाठ लगायाजी, उमराव मुसद्दी लोग वचन सुण
बहु हरषायाजी, जहां बहु त्याग पच्चक्खाण खन्ध
हुवा भारी महाराज जैनका धर्म दिपायाजी।
अमृत सम वाणी सुणकें बहु जीव सरधालायाजी
(उड़ावणी) फिर साल एक कम साठ बीकाणे
चौमासो। श्रावक श्राविका धर्म्म ध्यान किया
खासो, तपस्याका नहीं था, पार, झूठ नहीं मासो
स्वमति परमति सुण वचन हुवा हुलासो, महाराज
भव्य जीव केइ समझायाजी ॥ शिवला० ॥ ७ ॥
फिर साल साठके उदयपुर चौमासो, महाराज
मुलक मेवाड़ कहायाजी, जहां लगन धर्मकी बहुत

जिन वचना चितलाया। जहां राज मुसद्दी
अहलकार केई आये, महाराज दरशनकर आन
थायाजी। फिर दिया खूब उपदेश जैन भगत
फररायाजी (उड़ावणी) फिर साल इकाण्ठे शेर
चौमासो ठायो। जहां हुआ बहुत उपकार के
आनंद पायो। सब श्रावक श्राविका धर्मकरण
हुलसायो। बहु हुआ त्याग पच्चक्खाण सर्व मन
भायो। महाराज जन्म भूमि कहलायाजी॥ शिव॰
॥८॥ फिर साल बासठे जोधाणं चौमासो, महाराज
दूसरी वार करायोजी यह वचन अमोलख सुनके
भव्य जीव बहु हरपायोजी। जहां दया सामायक
हुआ बहुत सा पोसा महाराज खंध कितना ही
उठायोजी। तपस्या सम्बर नहीं पार भविक मन
बहु लोभायोजी (उड़ावणी) फेर स्वमति परमति
प्रश्न पूछणकूं आवै। यह हेत जुगत भिन्न२ करके
समझावै। वलिनय निक्षेप प्रमाण जो खूब बतावै
नहीं पक्षपातका काम है सरल सावै। महाराज

वचन सुण सब हुलसायाजी ॥ शिवलाल० ॥६॥
फिर साल तेसठे रतलाम आप पधारे महाराज,
श्रावक श्राविका मनभायाजी। ये वचन पूज्यका
अरज पूज्यसें आण मनायाजी। की चौमासे की
अमृत सम नित वरसें, महाराज सुणन सहु मन
ललचायाजी। दीवान मुसद्दी और राज अहलकार
केई आयाजी (उड़ावणी) जहां मुसलमान केई
वखाण सुणवा आये। उपदेश पूज्यका सुणकर
बहु हरषाये। जहां मद्य मांसका त्याग किया शुद्ध
भावें। फिर ठाकुर पचेडे काकूं शिकार छुडाये
महाराज जैन पर भावक थायाजी॥शिवला०॥१०॥
फिर कर चौमासो भाण पुरे पधारे। महाराज
भव्य जीव बहु हरषायाजी। एक ठाकुरकों समझाय
वदद सेरा चचायाजी। फिर केई जाल मछ०ांका
बन्द करवाये। महाराज अतिसय गुण अधिका
पायाजी। कांई सूरत देख दिलमस्त हुवै धर्म चित
लायाजी। (उडावणी) जो वखाण सुणवा एक

बार कोई जावे । फिर नहीं कल्याणका काम, गुरु चल आवें । उपदेश सुणके दिल उनका हुलसावें करें आपमुं पच्चखाण त्याग मन भावे। महाराज आपका गुण बहु छायाजी !! शिवला० ॥ ११ ॥ फिर कोटेसे अजमेर जो आप पधारे महाराज नर-टाणें से आगाजी । बहु हाव भावके साथ चौमासो जाण मनायाजी । अजमेर पधारया सुणके ... आया । महाराज दरशणकर प्रश्न थायाजी । हुवो हरख हिये उल्लास जोड़ कथ गुणमें गायाजी (उठा-वणी) कहे लाल कन्हैया बीकानेरका वासी । अज-मेर लावणी जोड़के गाई खासी । चौसठ साल आसाढ़ एकम सुदी भासी । सब श्रावक श्राविका सुणके हुआ हुलासी । महाराज पूज्यका जस सवा-याजी । शिवलाल उदय मुनि पाट चौथ श्रीलाल दिपायाजी ॥१२॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

—:o:—

॥ चौबीस तीर्थंकरका तवन ॥

जै जिन ओंकारा, प्रभु रट जिन ओंकारा, जामण मरण मिटावो प्रभुजी, कर भवोदधि पारा ॥ जै जिन ओंकारा० ॥ केवल लोक अलोकं, प्रभु तीर्थंकर पद धारा । प्रभुती०॥ तिलोक दयालं, जग प्रति-पालं, गंभीरं भारा ॥ जै जिन ओं०॥१॥ कर्म्मदल खण्डण, सिव मग मण्डण, चन्दण जिम शीलं ॥ प्रभु चं० ॥ छवकायाना रक्षण, मनरूपी भक्षण, ततक्षण अमीलं ॥ जय जि० ॥ २ ॥ श्रीऋषभ अजित शंभव अभिनन्दन, शांती करतारा ॥ प्रभु शांति क०॥ सुमति पदम सुपास चन्दा प्रभु चन्दर जत हारा ॥ जै जिन० ॥३॥ सुविध शीतल श्रेयांस वासु पूज्य स्वामी । प्रभु वासु पूज्य स्वामी । विमल अनन्त श्री धरम शांतजी, सायर गंभीरा ॥ जैन जिन० ॥४॥ कुंथु अरि मल्ली मुनि सुव्रतजी तीन भवन स्वामी । प्रभु तीन भ० ॥ नमि नेम पारस महावीरजी, पञ्चम गति गामी ॥ जै जिन ओं ।५।

गौतमादिक गणधर, गणधर मुनि सेवा ॥ प्रभु गण० ॥ वखाण सुणन्ता मन आनन्दा, जो नर ते मेवा ॥ जे जिन० ॥६॥ जीव अराधे जिनमत सांचे, पामे सुख ठामं ॥ प्रभु पामे० ॥ नन्दलाल तेहो गुणगावे, जो जिन लें नामं ॥ जो जिन० ॥७॥

॥ इति पदम् ॥

— ✲✲ —

श्री सीमन्धर जीरो स्तवन

श्री श्री सीमंधर सांम; इकचित वंदू होवेकर जोड़ने, पूरव देसे हो प्रभुजी परवस्या, नगरी पुण्ड-रपुर सुखठाम वेकर जोड़ी हो, श्रावक वीनवे, श्री सीमंधर स्वाम ॥ इकचित वंदूहो वेकर जोड़ने ॥१॥ चौतीस अतिशय हो प्रभुजी शोभता, वाणीपनरे ऊपर बीस, एक सहस लक्षण हो प्रभुजी आगला जाता रागनेरीत ॥ इक० ॥ २॥ काया धारी हो धनुष पांचसे, आउखो पूर्व चौरासी लाख निरवद

घणी हो श्रीवीतरागनी, ज्ञानी श्रगम गया छे साख ॥इक०॥३॥ सेवा सारे हो थारी देवता, सुरपति थोड़ा तो एक करोड़ मुझ मन माहें हो, होस बसे घणी, वन्दू बेकर जोड़ ॥ इक० ॥ ४ ॥ श्राड़ा परबत हो नदियां श्रति घणी, बिचमें विकव विद्याधर ग्राम, इणभव मांहे हो श्राय सकूं नहीं, लेसुं नित्त उठ थारो नाम ॥इक०॥५। कागद लिखूं हो प्रभु थांने बिनतीं, वन्दना बारम्बार। कुन्दन सागर हो कृपा कीजिये, बीनतडी श्रवधार ॥इक०॥६॥

॥ इति पदम् ॥

—¤¤—

श्री १००८ श्रीपूज्य श्रीजवाहिरलालजी महाराजका स्तवन

भज भज ले प्यारे पूजने, मोहे जाल हटाया ॥ टेर

पंच महाव्रत पाल श्रापने, श्रात्म श्रपनी तारी ॥ तारी रे तारी, हां, तारी रे तारी ॥ भज० ॥ १ ॥

षट कायाके पीहर श्राप हैं, पर उपकारी भारी।

भारी रे भारी हां, भारी रे भारी ॥ भज० ॥२॥
शीतलचन्द्र समान सोभते, गुण रत्नोंके धारी।
धारीरे धारी, हां, धारीरे धारी ॥ भज० ॥ ३ ॥
पाखण्ड खंडन जिन मत मंडन भवजीवनका तारी
तारीरे तारी हां तारीरे तारी ॥ भज० ॥ ४ ॥
दयाधर्म प्रचार आपन करदीना है जारी
जारीरे जारी, हां जारी रे जारी ॥ भज० ॥५॥
समत उन्नीसे साल पच्चासी, अगहन मासके माई
माई रे माई, हां माई रे माई ॥ भज० ॥ ६ ॥
मङ्गल अरज करे पूज्य थाने, शहर पधारत ताई
ताई रे ताई हां, ताई रे ताई ॥ भज० ॥ ७ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

—☼—

❋ दोहा ❋

सासणपति श्रीवीर जिन, त्रिभुवन दीपक जान
भवउदधीतारणतरण, वाहण सम भगवान ॥१॥
चरण कमल युग तेहना, वन्दे इन्द्र दिनेश

चन्द नरिन्द फनिन्द सुर, सेवें सुर नर वृन्द ॥२॥
तासु कृपासों उद्धर्या, जीव असंख्य सुज्ञान।
लहि शिव पद भव उदधि तरि, अजर अमर सुख धान॥
तस मुख थी बाणी खरी, जिम श्रावण वरसात।
अनंत आतमज्ञान थी भवि जन दुःख मिटात॥४॥
ते बाणी सद्गुरु मुखे, ते भवि हृदय धरन्त।
स्वपर भेद विज्ञान रस, अनुभव ज्ञान लहन्त॥५॥
उत्तम नर भव पायकर, शुद्ध सामग्री पाय।
जो न सुणे जिण वचनरस, अफल जमारो जाय॥६॥
ते माटे भवि जीव कूं, अवश उचित ए काज।
जिनवाणी प्रथमहि श्रवण, अनुक्रम ज्ञान समाज॥७
जिनवाणीके श्रवण बिन, शुद्ध सम्यक् न होय।
सम्यक बिण आतमदरश, चारित्र गुण नहि होय॥८
शुद्ध सम्यक् साधन बिना, करणी फल शुभ बन्ध।
सम्यक रत्न साधन थकी, मिटे तिमिर सविधन्ध॥९
सम्यक्त भेद जिन वचनमें, भेद पर्य्याय विशेष।
विण मुख दोय प्रकार है, ताको भेद अलेख॥१०॥

भारी रे भारी हां, भारी रे भारी ॥ भज० ॥२॥
शीतलचन्द्र समान सोभते, गुण रत्नोंके धारी।
धारीरे धारी, हां, धारीरे धारी ॥ भज० ॥३॥
पाखण्ड खंडन जिन मत मंडन भवजीवनका तारी।
तारीरे तारी हां तारीरे तारी ॥ भज० ॥४॥
दयाधर्म प्रचार आपन करदीना है जारी।
जारीरे जारी, हां जारी रे जारी ॥ भज० ॥५॥
समन उन्नोसे साल पच्चासी, अगहन मासके माईं।
माईं रे माईं, हां माईं रे माईं ॥ भज० ॥६॥
मङ्गल अरज करे पूज्य थाने, शहर पधारन ताईं
ताईं रे ताईं हां, ताईं रे ताईं ॥ भज० ॥७॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

—०—

* दोहा *

सासणपति श्रीवीर जिन, त्रिभुवन दीपक जाण
भवउदधीतारणतरण, वाहण सम भगवान ॥१॥
चरण कमल युग तेहना, वन्दे इन्द दिनेन्द।

न्द नरिन्द फनिन्द सुर, सेवें सुर नर वृन्द ॥२॥
ासु कृपासों उद्धर्या, जीव असंख्य सुज्ञान।
हि शिव पद भव उदधि तरि, अजर अमर सुख थान॥
स मुख थी बाणी खरी, जिम श्रावण वरसात।
ानंत आतमज्ञान थी भवि जन दुःख मिटात॥४॥
बाणी सद्गुरु मुखे, ते भवि हृदय धरन्त।
वपर भेद विज्ञान रस, अनुभव ज्ञान लहन्त॥५॥
त्तम नर भव पायकर, शुद्ध सामग्री पाय।
ो न सुणे जिण वचनरस, अफल जमारो जाय॥६॥
ा माटे भवि जीव कूं, अवश उचित ए काज।
जनवाणी प्रथमहि श्रवण, अनुक्रम ज्ञान समाज॥७
जनवाणीके श्रवण बिन, शुद्ध सम्यक् न होय।
म्यक बिण आतमदरश, चारित्र गुण नहि होय॥८
ुद्ध सम्यक् साधन बिना, करणी फल शुभ बन्ध।
म्यक रत्न साधन थकी, मिटे तिमिर सविधन्ध॥९
म्यक्त भेद जिन वचनमें, भेद पर्याय विशेष।
विण मुख दोय प्रकार है, ताको भेद अलेख॥१०॥

शेर–सम्बत उनीसे पच्यासिमें चौमास चुरु ठाविया
दरशन करवाआपकामें, शहर बीकाणेसे आविया
मंगल अरज करे गुरु तारो मुझे ॥स्वामी०॥५॥
॥ इति पदम् ॥

—△—

॥ पूज्य श्री १००८ श्री श्री जवाहिरलालजी
॥ महाराजका स्तवन ॥

पूज्य श्री ने ध्यावियेजी, नाम जवाहिरलालजी शांति मुद्रा देखनेजी. हरष हुआ नरनार जिनन्द-राय कोधा हो, दर्शन मार ॥ टेर ॥

देश मालवे मांयनेजी, शहर थांदल गुलजार ओसवंश में ऊपनाजी, जात कुवाड विख्यात ॥जि०॥ ॥१॥ पिता जीव राजजी माता है नाथी नाम। धन्य जिनोरी कूख अवतर्‌या, ऐसे बाल गोपाल ॥ जि० ॥ २ ॥ सम्बत बत्तीसमें जन्मीयाजी, दीक्षा अड़त्रासे मांय । चढ़ता भावासु आदरीजी मगन मुनीपे आय ॥ जि० ॥ ३ ॥ दस छवकी वयमेंजी,

कीनो ज्ञान उद्योत । पंचमहाव्रत निरमलाजी पाल रहा दिनरात ॥ जि० ॥ ४ ॥ तेज सूर्य सम है सही जी, शीतल चन्द्र समान । मुख देखो सुख उपजेजो, रटता जय जयकार ॥ जि० ॥५॥ धर्म बुद्धि थारी देखनेजी; पाखण्ड जीव कंपाय । अमृतवाणी सुणनेजी, मिथ्या दैने निवार ॥ जि० ॥६॥ भवि जीवांने तारतां जी आय बीकाणे पास । नवीलेनने तारनेजी, कीजो मेहर महाराज ॥ जि० ॥ ७ ॥ आशा करे सहु शहरमेंजो जैसे पपीहो मेघ । कल्प वृक्ष सम सोवताजी मेहर कीजो महाराज जि० ॥ ८ ॥ सम्वत उगनीसे मांयनेजी, साल चौरासी जाण । मंगलचन्द थ ने बीनवेजो त्रिविध शीश नमाय ॥ जि० ॥ ९ ॥

॥ पूज्य श्री १००८ श्री श्रीजवाहिरलालज
॥ महाराज का स्तवन ॥

(तर्ज—सियाराम बुलालो अयोध्या मुझे)

पूज्य ज्ञान तुम्हारा सिखा दो मुझे।
अपने चरणोंका दास बनालो मुझे ॥पुल॥१॥
शेर–पंच महाव्रत पालते, करते तो उग्र विहार हैं।
षट जीवोंके लिये, करते फिरे उपकार हैं॥
आया तोरी शरण प्रभु तारो मुझे ॥पु०॥२॥
शेर–पंच सुमति पालते और तीन गुप्ति धारके।
शिष्य मण्डली को लिये भवि जीव तुम हो तारते
ऐसे पूज्य गुरू अब तारो मुझे ॥ पु० ३ ॥
शेर–दोष बयालिस टाल पूज्य, आहार सूजतलात हैं
आत्माको तार अपनी, शिष्यको सिखलात हैं॥
धन्ये ! पाप कर्मोसे बचावो मुझे ॥पु०॥४॥
शेर–शहर बीकाणेकी है अरजी, मेहर जल्दी कीजिये
आशा करे सब संघ स्वामी, दर्श जल्दी दीजिये॥
अपनी भक्तिकी लौ में लगालो मुझे ॥पु०॥५॥

शेर-कर्मको काटो प्रभू, इस धर्मरूपी तेगसे ।

संघ तो इच्छा करै, जैसे पपीहा मेघ से ॥

डूबे जाता हूँ नाथ बचालो मुझे ॥ पु० ॥६॥

शेर-विनती करे करजोडके यह दास मंगलचंद है।

हुक्म जल्दी दीजिये,मुखसेजो अवतक बन्द है।

जिससे बहुत खुशी अब होय मुझे ॥पु०॥७॥

इति सम्पूर्णम्

॥ पूज्य श्री जवाहिरलालजी का स्तवन॥

पूज्य जवाहिरलालजी स्वामी,अन्तर्यामी शिव मुख गामी, तारो दीनानाथ ॥ टेर ॥

अरज करूं मैं थाने पूज्यजी, हरष हुवो है अपार । सम्वत वत्तीसमें जन्म लियोथे,शहर थांदले मांय हो ॥ पू० ॥१॥ पञ्च महाव्रत सोहे पूज्यजी, करता उग्रविहार । दोष बयालिस टाल मुनीश्वर। लावो सुजतो, आहार॥ पू० ॥ २ ॥ कामधेनु सम आप पूज्यजी, सर्वभणी सुखदाय । दरशन करके प्रसन्न होवे, सारोलोक संसार हो ॥ पू० ॥ ३ ॥

ठाणावारेसु सोवो पूज्यजी गुण रतनोंकी माल। महिमा आपकी कहांतक कहूँ कहत न आवे पार हो ।।पू० ।४।। प्रश्न पूछै थांने पूज्यजी स्वमती अन्य मति कोय। शान्ति पणेसु जवाब देवोथे, सामलो शीतल थाय हो ।। पू० ।। ५ ।। सम्वत उगनीसे मांय पूज्यजो, साज सतीन्तर थाय। दूजा श्रावण बदी दशमी कांई मगलचन्द्र जस गायहो ।।पूज्य।। ।। ६ ।।   ।। इति सम्पूर्णम् ।।

—✿✿—

। अथ सर्व सिद्धप्रद स्तोत्रम्।

विमल सयल मणोहरं, नमि ऊणं चरणं जिन वराणं।। वइस्सं तणुताणुत्तं, सुहसिद्धियं भवि हिय ट्ठाए ।। १ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं उसभोसिर—मवउ ॐ ए श्रीं वि अजिओ भालं, ॐ श्रीं संभवो नेत्तं पाउ सया सव्व सम्मदोय ।। २ ।। धाणिदियं सव्व या, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिरि अभिनन्दणो ।। वच्छ-

अं पाउ सुमई ॐ कण्णं ॐ ह्लों च पउ मप्प
हो।। ३ ।। कंठसंधितु रक्खउ, ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं
सुपास जिणवरो मे ।। खंधं पुण पाउ मज्झ, ॐ
ह्लीं श्रीं जिणचंदप्प हो । ४ ।। ॐ क्रों सुविधि
बुद्धि, अवउ सिज्जंस वासु पुज्जो करजं ।। विमल
जिणो उयरंमें ॐ ह्लीं श्रींवण्ण संकलिवो ।।५।। ॐ
ह्लीं धम्मो जंघं पिट्ठं मल्लि मल्लि कुसुमकोमलो ।।
सदय मुणिसुव्वयोहियं,कुंथू करेगोवं अरो श्रीं ।।६।
ॐ श्रां श्री नमो कक्ख ना सा रोग हरउ ह्लीं श्रीं
नेमो ।। अणंत पासो गुज्झ रोगं ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं
सुकलियो ।। ७ ।। ॐ श्रीं तिल्लोक वसं कुरु कुरु
वद्धमाणा महावीरो ।। सव्व मंगल सुह करो
चितामणि सुरतरुव्व फलाओ ।। ८ ।। सव्वे जिण
गण हरा, अंगरोमाई मज्झ रक्खंतु ।। ॐ ह्लीं श्रीं
सीयल पहु, सव्व सत्तु सिढिल कुरु ।। ९ ।।
ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं ह्लीं, संती सु य संपयं मज्झ
कुणउ समिद्धि ।। ॐ ह्लीं ऐं मंदर पमुहा होंतु

कामधेणुव्व ॥ १० ॥ पुज्ज जवाहिरलालो गुण विसालो गणप्पट्ट गरिमोय ॥ तउ सव्व सिव मंगल भवउ मज्झाणं जिणगुरू चंदो ॥ ११ ॥

यह स्तोत्र १०८ अथवा २७ वार प्रातः काल निरंतर जपना चाहिये ।

पूज्य श्री १००८ श्री श्री श्रीलालजी महाराजका गुण स्तवन

पूज्य श्रीलाल गुणधारी । सितारे हिन्दमें दीपे जपो नरनार तन मनसे । सितारे हिन्दमें दीपे टेर ॥ तजा संसार जान असार । लिया संयम भार महाव्रत में धार चले संजमखाडा धार । सितारे हिन्दमें दीपे ॥ १ ॥ धन्य आचार्य पद पाये चतुर्विधि संघ दीपाये । पञ्चमें पाट । सितारे हिन्दमें दीपे ॥ २ ॥ आत्मा रूप तपस्याग्निमें शुद्ध करके । अतिशय धारि सितारे हिन्दमें ॥ देश करके । श्रीसंघ को । ज्ञान

ालसे सींच । सितारे हिन्दमें दीपे ॥ ४॥ जहां
ाते वहां लगती धूम । जय २ धर्मको होती ।
वचर कर आये जेतारन । सितारे हिन्दमें दीपे
। ५ ॥ अंतिम वाणी अमी देकर । आषाढ़ सुदि
ीज दिन आया । सिधाये स्वर्ग पूज्य श्रीलाल ।
सतारे हिन्दमें दीपे । जपो श्रीलाल गुणमाला ।
ापका मुख होवे काला । दुर्गतिके लगे ताला ।
सतारे हिन्दमें दीपे ॥ ७॥ कल्पतरु स्थान कल्प-
रु हो । हीरेकी खानमें हीरा । छट्टे पाट पूज्य
नवाहिरलाल सितारे हिन्दमें दीपे ॥ ८ ॥ उन्नीसे
ाल चौरासी । मास आसाढ़ शनिचर तीज ।
ुनी घासीलाल बीकानेर । सितारे हिन्दमें दीपे॥६।

महावीर स्वामीका स्तवन

श्रीमहावीर स्वामीको सदा जय हो, सदा
नय हो, सदाजय । टेर ।

पवित्र पावन जिनेश्वरकी सदा जय हो सदा
नय हो, तुम्हीं हो देव देवनके तुम्हीं हो पीर पंग–

श्वर, तुम्हीं ब्रह्मा तुम्हीं विष्णु । स० १ ॥ तुम्हारे ज्ञान खजाने को महिमा बहुत भारी है लुटाते बड़े हरदम ॥ स० २ ॥ तुम्हारी ध्यान मुद्राते, अलौकिक शांति झरती हैं, सिंह भी गोद पर सोते ॥ स० ३ ॥ तुम्हारी नाम महिमासे जागती वीरता भारी हटाते कर्म लश्करको ॥ स० ४ ॥ तुम्हारा संघ सदा जय हो, मुनि मोतीलाल सदा जय हो ॥ जवाहिरलाल पूज्य गुरुराय, सदा जय ॥ स० ५ ॥ इति

पार्श्व प्रभुका स्तवन

मंगल छायाजी म्हारे पार्श्व प्रभुजी मनमें आयाजी ॥ टेर ॥ फटिक सिंहासन आप विराजे, देव दुन्दुभी बाजेजो ॥ इन्द्राणियां मिल मंगल गावे, यश जिन गाजेजी । मं० ॥१॥ चामर छत्र पुष्पकी वृष्टि, भूमण्डल चमकावेजी ॥ अशोक वृक्ष शीतल छाया तल भवी सुख पावेजी ॥ मं० ॥ ॥ २ ॥ सागर क्षीरका नीर मधुर अति, रसायन

अधिक सुहावेजी ॥ अमृतसे अति मधुर वाणी, प्रभु बरसावेजी ॥ मं० ३ ॥ नत्र नेवता मुकुट हरित मणि, किरण चरण जिन छावेजी ॥ अजिव छटा मृग तृणहि समज, जिन चरणे लुभावेजो॥मं० ॥४॥ सिंहनाद करे यदि योद्धा वृन्द, सुन हस्ती घबरावेजी ॥ सिंहाकार नर पीठ लिखित, हस्ती रोग मिटावेजी ॥ मं० ५ ॥ तैसे प्रभुके नामको सुन मेरे, विघ्न सभी भग जावेजो, रिद्धि सिद्धि नव निधि संपदा। मुझ घर आवेजी ॥ मं० ६ ॥ आप नाम मेरे घरमें मंगल, वाहिर मंगल बरतेजी सदाकाल मेरा सुखमें वीते वांछित करतेजी ॥मं० ॥ ७ ॥ कामधेनु मुझे अमृत पिलाती, सुख सिद्धि प्रगटावेजी, चिन्तामणी मुज हाथ चढ़ा है। चिन्ता जावेजी ॥ मं० ८ ॥ बालसूर्य तम अंकुर कल्पतरु, सब दारिद्रय्य मिट जावेजो। वैसे आपके नाम मात्रसे दुख टल जावेजी ॥ मं० ९ ॥ ओं ह्रीं श्रीं कामराज वर्लो जगमें सब सुख पायाजी। मोतीलाल

मुनि जवाहिरलाल पूज्य, चित्त सुहायाजी ॥ मं०
॥ १० ॥ उगणीसे अण्टोत्तर सालमें तास गांवमें
आयाजी ॥ घासीलाल मुनि गूढ़ी पडिवा दिन,
मंगल पायाजी ॥ मं० ११ ॥

गौतम स्वामी का स्तवन

मंगल वरतेजी म्हारे गौतम गणधर, मनमें
वसतेजी ॥ टेर १ । धन्नाशालिभद्रकी ऋद्धि,
और अष्ट महा सिद्धीजी, गौतम नामसे प्रगटे
म्हारे, नव विध निधिजी ॥ मं० २ ॥ लब्धिके
भण्डार ज्ञानके गौतम है आगारजी, आप नाम
म्हारे सब सुख वरते मंगला चारेजी ॥ मं० ३ ॥
आप नाम अति आनन्दकारी, चिन्ता दुख भट
भाजेजी, सुख संपतका मंगल बाजा मुझ घर
वाजेजी ॥ मं० ४ । नाम कल्पतरु म्हारे आंगण,
दारिद्रय भग जावेजी, मन वांछित म्हारे रिद्धि
सम्पदा घरमें आवेजी ॥ मं० ५ ॥ अमृत कुंभ मैं
पाया चिन्तामणी, दुख गया सब भागीजी, अमृत

सम मीठे गौतम तुम, मनशा लागोजी ॥ ६ ॥ मन कमल तुम नाम हंस हैं, बैठा अति सुखकारेजी, हर्षित प्राण हुवे सब मेरे, अपरंपारेजी ॥७॥ किसी बातकी कमी न मेरे,गौतम गणधर पायाजी, तीन लोककी लक्षमी मुझ घर, वास वसायाजी ॥ मं० ८ ॥ मोतीलाल मुनि पूज्य श्री०श्री० जवाहिरलालजी मन भायाजी छठे पाट पर आपविराजे मंगल छायाजी ॥ मं० ९ ॥ समत उगनीसे साल सितहत्तर शहर सतारे आयाजो, घासीलाल मुनि सप्तमी सावण, गुरु शुभ पायाजी ॥ १० ॥

शांतिनाथ प्रभुका स्तवन ॥

शान्ति जिनेश्वर शाताकारी, मुझ तन मन हितधारी ॥ टेर ॥ शांतिनाम मुझ तनमें अमृत रस सम है सुखकारी, तनकी वेदना गई सब मेरी मुझ तन है अविकारी ॥ शांति १ ॥ रोम रोममें हर्ष भरा मेरे, जो चाहूँ घर द्वारो, फला कल्पतरु निज आंगन प्रभु, खुली मुझ सुख गुल क्यारी

।। शा० २ ।। आतम ध्यान प्रगटा मुझ तनमें मिटी दशा अंधियारी, गगन चन्द्र संयोग मिटाता, निरगत तम जिमि भारी ।।शांति ३।। ओं ह्रीं त्रैलोक्य वशं कुरु कुरु शान्ति सुखकारी, इम विध जाप जपे जिनवरका कोटी विघ्न निवारी ।। शांति ४ ।। डाकिनी शाकिनी तस्कर आदि, भागत भय पर पारी, पिशुन मान मर्दन मेरे प्रभुजी, सेवक नव-निध धारी ।।शान्ति ।।५।।पूज्य ज्वाहिरलाल विराजे छट्टे पाट सुखकारी, घासीलाल गुरुवार ज्येष्ठमें, पारनेर किया त्यारी ।। शांति ६ ।।

—※※—

शांतिनाथ प्रभुका स्तवन

संपति पायाजी म्हारे शांति नामसे सब सुख छायाजी लक्ष्मी पायाजी, म्हारे शांति नाम नव निध घर आयाजी ।। टेर ।। आप पधारे गर्भवास तीनों लोकमें बहु सुख छायाजी, माता महल चढ़ी निरखे नाथ, मृगि मार मिटाया जी ।।सं०१।

शांति करो सब शांति नाम प्रभु, महावीरजीने गायाजी ।। अमृत सम भावे हृदय कमलमें, आप सुहायाजी ।। सं० २ । शांति नाम चिन्तामणी मुझ घर, वांछित सब सुख करतेजी ।। लक्ष्मीसे भण्डार प्रभूजी मुझ घर, भरते जी ।। सं० ३ ।। गरुड़पक्षा सम शांति नाम, मुझ घर हृदय वसतेजो, दुःख रोग सम भुजंग भागते मंगल वरतेजी ।। सं० ४ ।। शांति नाम मैं पाया तभीसे, मुझ घर अमृत वरसेजी, मंगल बाजा मुझ घर बाजे मुझ मन हरषेजी ।। सं० ५ ।। चिन्तामणी पुनि काम धेनु मुझ, आंगन दूध पिलावेजी, मुझ घर नवनिध पारस प्रगटे संपत आवेजी ।। सं० ६ ।। ॐ ह्रीं त्रैलोक्य वशं कुरु कुरु मुझ कमला आवेजी दिन दिन मुझ घर सब सुख वरते दुश्मन जावेजी ।। सं०७।। शांति नामसे ही जहां जाता मैं काम सिद्ध कर आताजी, सुख ही सुखमें देखूं निश दिन शाता पाताजी ।।सं०८।। शांति नामको

जो नर गावे रोग शोक मिट जावेजी, राज लोक
महिमा मन्त्र जप सुख घर पावेजी।।सं० ६।। मोती
लाल मुनि पूज्य जवाहिरलाल मुनिमन भावेजी
सदाकाल दीवाली मुझ घर, सब सुख आवे
।।सं० १०।। संवत उगणीसे साल अष्टोत्तर, चा
लो सुख पा०जी घासीलाल मुनि दीवाली
मन हर्षावाजी।। सं० ११ ।।

—❀❀—

चौदह स्वप्न

दसमां स्वर्ग थकी च्यव्याजा चौवीसवां जि
राज चौदह सपना देखियाजी त्रिशला देवी
माय, जिनन्द माय दीठा हो सुपना सार ।।टेर।
पहिले गयवर देखियाजी, सुण्डा दण्ड प्रचण्ड
दूजे वृषभ देखियाजी धोरा धोरी सण्ड ।।जि०।।२
तीजो सिंह सुलक्षणोंजी करतो मुख आवास
चोथो लक्ष्मी देवताजी, कर रह्यो लील विलास
।।जि०।।३।। पंच वर्ण कुसमा तणोंजी मोटो देखा

लमाल। छट्ठो चन्द उजासियोजी अमिय झरंत
साल ॥४॥ सूरज उग्यो तेज स्युन्जी, किरणा
झांक झमाल ॥फरकती देखी ध्वजाजी ऊंची अति
सराल ॥ जि० ॥ ५ ॥ कुम्भ कलश रत्नां जड़-
तेजी, उदग भरय्यो सुविशाल। कमल फूलांको
ढंकनोजी नवमो स्वप्न रसाल ॥ जि० ॥ ६ ॥ पद्म
सरोवर जल भरय्योजी, कमल करी शोभाय।
देव देवी रंगमें रमेजी दीटा ही आवे दाय ॥ जि०
॥७॥ क्षीर समुद्र जल भरयोजी तेनो मीठोवार।
देव जिस्यो पानी भरयोजी, जेह नो छेह न पार
॥जि०॥८॥ मोत्यां केरा झूमकाजी,दीठोदेव विमान
देव देवी रंगमें रमेजी, आवंता असमान ॥जि०॥९॥
रतनां री राशी निर्मलीजी दीठो सुपन उदार।
दीठो सुपनो तेरहवोंजी, हिये हरष अपार ॥जि०
॥१०॥ ज्वाला देखी दीपतीजी, अग्नि शिखा बहु
तेज। जितरे जाग्या पद्मनीजी, कर सपना सूं हेज
॥जि० ॥११॥ गज गति चाले मलकतीजी पहुंता

राजन पास। भद्रासन आसनदीयोजो, दीनो छे आद-
सन मान सुकारण तुम आविया जी को थोरे [illegible]
वात ॥ जि० ॥१२॥ आज मारे आंगन सुर [illegible]
पड़या जी पड़यो छे वंछित काज चोवह सुपना
दीठाजी ज्योंरो अर्थ करोनो पृथ्वीनाथ ।जि०॥१३॥
सुपना सुण राय हरखियोजो कीनो स्वप्न विचार।
तीर्थंकर तुम जनमस्योजी, हम कुलनो आधार।जि०
॥१४॥परभाते पंडित तेड़ियाजी कीनो स्वप्न विचार
तीर्थंकर चक्रवर्ती होसीजी, तीन लोकनो आधार।जि०
॥१५॥पंडिताने बहुधन दियोजी। बसतरने फूलमाल।
गर्भ मास पूरा थयाजी। जन्मा है पुण्यवन्त बाल ।जि०
१६॥ चौसठ इन्द्र आवियाजी। छप्पन दिसाकुमार
अशुचि कर्म निवारनेजो. गावे मगलाचार ।जि०
१७॥ प्रतिबिम्ब घरमें धरियोजी माताजीने विश्वास
शक्रेन्द्र लियो हाथमेंजी, पंचरूप प्रकाश ।जि०॥१८॥
एक शक्रेन्द्र लियो हाथमेंजी, दोय पासे चंवर
ढुलाय । एक वज्र लई हाथमेंजी। एक छत्र [illegible]
॥जि० ॥१९॥ मेरु शिखर नव रावियाजी, तेनो
बहु विस्तार । इन्द्रादिक सुर नाचियाजी, नाचो है

प्रपसरा नार ॥जि०॥२०॥ अठाई महोत्सव सुर
करेजी, द्वीप नंदीश्वर जाय। गुण गावे प्रभुजी
तणाजी, हिये हर्ष अपार ॥जि०॥ २१॥ सिद्धार्थका
नन्द है जी, त्रशला देवीना कुमार। कर्म खपाई
मुक्ति गयाजी वरत्या हैं जय जयकार ॥जि०॥२२॥
परभाते सुपना जे भणेजी, भणता हो आनन्द
थाय। रोग शोक दूराटलेजी, अशुभ कर्म्म सवि-
नाय ॥ जि० ॥ २२ ॥ इति सम्पूर्ण ॥

पूज्य श्री १००८ श्री श्री जवाहिरलालजी ॥
॥ महाराजका स्तवन ॥

पूज्य श्रीने वन्दियेजी, नाम जवाहिरलाल।
शांति मुद्रा देखनेजी, हरष हुआ नर नार॥ जिनन्द
राय कीधा हो दर्शन सार ॥टेर॥ देश मालवे मायने
जी। शहर थांदल गुलजार। ओस वंशमें ऊपनाजी
नात कुवाड़ विख्यात ॥ जि० ॥ १ ॥ पिता जीव-
राजजी, माता है नाथी नाम। धन्य जिनोरी कूख
अवतरिया ऐसे दास गोपाल ॥ जि०॥ २॥ सम्वत

बत्तीसमें जन्मीयाजी, दीक्षा अड़चासे मांय ! चढ़ता भावसु आदरीजी, मगन मुनि पै आय । जि० ॥३॥ दस छवकी वयमेंजी, कीनो ज्ञान उद्योत । पञ्च महाव्रत निरमलाजी पाल रहा दिन रात ॥जि०॥४॥ तेज सूर्य सम है सहीजो, शीतल चन्द समान मुख देखा सुख उपजेजी, रटता जै जैकार ॥जि० ॥ ५ ॥ धर्म बुद्धि थारो देखनेजो पाखंड जाव दंदाय। अमृत वाणी सुणनेजी मिथ्या देवे निवार ॥ जि० ॥ ६ ॥ भवी जीवांनि तारतांजी, आया विकाणे पास । नवीलेन ने तारनेजी, कीजो मेहर महाराज ॥ जि० ॥७॥ आशा करे सहु शहरमेंजी जैसे पपैयो मेघ । कल्प वृक्ष सम सोवताजी, मेहर कीजो महाराज ॥जि०॥८॥ सम्वत उन्नीसे मांयनेजी, साल चौरासी जाण । मंगलचन्द थाने वीनवेजी, त्रिविध शीश नवाय ॥ जि० ॥ ९ ॥

— ∆ —

॥ शान्तिनाथ स्वाध्याय ॥

प्रात उठ श्री संत जिणंदको, समरण कीजे घड़ी घड़ी ॥ संकट कोटि कटे भव संचित, जो ध्यावै मन भाव धरी ॥प्रा०॥ ए आंकड़ी॥ जनमत पाए जगत दुख टलियो, गलियो रोग असाधमरी॥ घट-घट अंतर आनंद प्रगटयो, हुलस्यो हिवड़ो हरष धरी ॥ प्रा० ॥१॥ आपद विघ्र विषम भय भाजै, जैसे पेखत मृगहरी ॥ एकण चितसु सुध बुध ध्याता, प्रगटे परिचय परम सिरी ॥प्रा०॥२॥ गये विलाय भरमके बादल, परमार्थ पद पवन करी ॥ अवर देव एरंड कुण रोपे, जो निज मंदिर केलफली, प्रा० ॥ ३ ॥ प्रभु तुम नाम जग्यो घट अन्तर, तो सु करिये कर्म अरी ॥ रतन चन्द शीतलता व्यापी, पापी लाय कषाय टली ॥ प्रा०॥४॥इति॥

—※※—

॥ शांतिनाथ स्तवन ॥

तुं धन तुं धन तुं धन तुं धन, शांति जिणेश्वर स्वामी॥ मिरगी मार निवार कियो प्रभु सर्व भणी सुख गामी॥ तुं धन ॥१॥ ए आंकड़ो॥ अवतरिया अचलादे उदरे, माता साता पामी संत ही साथ जगत बरताई, सर्व कहे सिरनामी ॥ तुं धन ॥२॥ तुम प्रसाद जगत सुख पायो भूते मूढ़ हरामी ॥ कचन डार कांच चित देवे, वाकी बुद्धिमें खामी ॥ तुं धन ।४॥ अलख निरंजन मुनि मन रंजन, भय भंजन विसरामी ॥ शिवदायक नायक गुण गायक, पाव कहे शिवगामी ॥ तुं धन ॥४॥ रतनचन्द प्रभु कछुअन मांगे, सुणतूं अन्त-रजामी ॥ तुम रहेवानो ठौर बतावो, तो हूं सहु भरपामी ॥ तुं धन । ५ ॥ इति ॥

—०००—

॥ अष्ट जिन स्तवन ॥

(श्रीनवकार जपो मनरंगे । एहनी देशी)

पह ऊठी परभाते वंदु, श्री पदम प्रभुजीरा पायरी माई ॥ वासु पूज्यजी तो म्हारे मनवसिया कमोयन राखो कायरी माई ॥ उपजे आनन्द आठ जिन जपता, आठु कर्म जाय तूटरी माई ॥उ०॥१॥ सुख संपदने लोला लाधे, रहे भरिया भण्डार अखूट री माई ॥ उ० । २ ॥ दोनु जिनवर जोड़ बिराजे, हिंगुल वरण लालरी माई । तीर्थ थापीने करमाने कापो, पाप किया पय माटरी माई ।उ०।॥३॥ चन्दा प्रभुजीने सुबुधि जिनेश्वर. दोय हुवा सुपेतरी माई ।। मोत्या वरणी देही दीपे, मुज देखण अधिक उम्मेदरी माई॥उ०॥४॥ मल्लिनाथ जिन पारस प्रभु, ए नीला मोरनी पांखरी माई ॥ निरखंतारा नयन नधाये,अमिय ठरे ज्यांरी आंखरी माई ॥उ०॥५॥ मुनिय सुव्रत जिन नेमि जिणेश्वर सांवल वरण शरीररी माई॥ इन्द्रासु वली अंबिका

दीपे,दीठां हरषे हिवड़ो हीररी माई ॥उ०॥६॥ग्र
अनूपम आवल विराजै, ज्युं हीरा जड़िया हेमरी माई
अत्तर सुं अधिकी खुसबोई, मुज कहेता न आवै
केम री माई ॥ उ० ॥ ७ ॥ शिवपुर माहि सा-
हेब सोवे, हुँ नवी जाणुं दूर री माई ॥ मुज
चित्त माहे वस्या परमेश्वर, वन्दू उगते सूर री
माई ॥ उ० ॥ ८ ॥ ए आठुं अरिहंतारे आ-
गल, अरज करूं कर जोड़ी री माई ॥ रिख
रायचन्दजी कहे ज्ञानी म्हारा, पूरोनी सपना
कोडरी माई ॥ उ० ॥ ९ ॥ संवत अठाराने बरत
छत्तीसे, कियो नागोर शहर चौमासरी माई ॥
प्रसाद पूज्य जेमलजी केरो, कियो ज्ञान तणो
अभ्यासरी माई ॥ उ० ॥ १० ॥

—❋—

महावीर स्वामीका स्तवन

श्री महावीर सासण धणी, जिन त्रिभुवन
स्वामी ॥ ज्यांरे चरण कमल नित चित धरूं,

गणमु सिरनामी ।। सुरथित नगरी पिता मात,
लक्षण अवगेहणा ।। वरस आउपो कंवर पदे,
तपस्या परिमाणा । चारित्र तप प्रभु गुण भणिये;
छदमस्त केवल नाणी ।। तीरथ गणधर केवली,
जिन सासण परिमाण ।। १ ।। देवलोक दसमें
बीससागर, पूरण स्थित पाया ।। कुण्डणपूर नगरी
चौवीस, श्री जिनवर आया ।। पिता सिद्धारथ पुत्र,
मात त्रशलादे नन्दा ।। ज्यारी कुक्षे अवतरया,
स्वामी वीरजिणन्दा ।। ज्यांरे चरण लक्षण छे सिंघ-
नीए, अवगेहणा कर साथ ।। तनु कंचन सम
शोभति, ते प्रणमुं जगनाथ ।। २ ।। वोहोत्तर
वरसनो आउपो, पाया सुख कारी ।। तीस वरस
प्रभु कुंवर पदे, रहया अभिग्रह धारी।। सुमेर गिरि
पर इन्द्र चौसठे, मिल महोच्छव कीनो ।। अनंत
वली अरिहंत जाणी, नाम प्रभुनो दीनो ।। ज्यांरी
मात पिता सुरगति ले आये, पछे लीनो संयम
भार ।। तपस्या कीनी निरमली, प्रभुसाढे बारे

वगस मझार ॥ ३ ॥ नव चौमासी तप कियउ प्रभु एक छमासी ॥ पांच दिन उणो अभिग्रह एक छमास विमासी ॥ एक एक मासी तप किया प्रभु द्वादस विरिया॥ बोहोत्तर पक्ष दोय दोय मास छविरिया गिणिया ॥ दोय अढ़ाई तीन दोय, दो दिडमासी दोय । भद्र महा भद्र शिव भद्र तप तप्या, इम सोले दिन होय॥ ४ ॥ भिखुनी पडिम अष्ट भगवतिनो द्वादश कीनी ॥ दोय सौ गुणत्तीस छठ्ठम तप गिणती लीनी ॥ इग्यारे वरस छ मास, पच्चीस दिन तपस्या केरा ॥ इग्यारे मास उगणीस दिवस, पारणा भलेरा॥ इण विधि स्वामी जी तप तप्याए, पछे लीनो केवल नाण ॥ तीन वरस उण विचारिया, ते प्रणमुं वर्धमान ॥ ५ ॥ प्रथम अस्ती दूजो चम्पापुरी पीस्ट चम्पा दोय कहिए वाणिए विशालापुर, चेहु मिलीस द्वादश लहिए ॥ चतुर्दश मालंदोवाद, छ मिथिला गिणिए ॥ भद्दिल पुरो दोय सब मिली, बयालीस भणिए ॥ एक आलं

वया एक सावथिए, एक अनारज जाण ।। चरम चौमासो पावापुरी, जठे प्रभु पहुंता निरवाण ।।६।। मुनिवर चवदे सहेस, सहस छत्रीस अरजका ।। एक लक्ष गुणसठ सहेस श्रावक, तीन लाख श्राविका ।। अधिक अठारे सहस इग्यारे गणधरनी माला ।। गौतम स्वामी वडा शिष्य, सती चंदनबाला।। ज्यांरे केवल ज्ञानी सात सोए, प्रभु पहुंता निरवाण ।। सासण वरते स्वामीनो, एक वीस सहेस वर्ष प्रमाण ।। ७ ।। पूरब तीनसौ धार, तेरासे अवधि ज्ञानी ।। मन प्रजव पांचसौ जाण, सातसौ केवल नाणी ।। वेक्रिय लभधिना धार, सातसौ मुनिवर कहिए ।। वादी चारसौ जाण, भिन्न२ चरचा लहिये ।। एका-एक चारित्र लियोए प्रभु एकाएक निरवाण ।। चौसठ वर्ष लग चालियो, दरसण केवल नाण ।८। वारा नरबल वृषभ २ दस एक जिमि हैवर ।।वारा हैवर महिष,महिष पांचसें एक गैवर ।। पांचसे गज हरी एक, सहस दोय हरी । अष्टापद दस

लाभ बलदेव वासदेव, अरदोय दोय चक्री॥ कोड चक्री एक सुर कहूयोवे, कोड सुरा एक इन्द्र ॥ इन्द्र अनन्ता मुननमें, चिटी अंगुली अग्र जिनन्द ॥ ९ ॥ आपतणा प्रभु गुण अनन्त कोई पार न पावे ॥ लब्ध प्रभावे कोड़ पावे कोड़ गुणसिर वणावे । सीर सीर कोड़ा कोड़ वदन जस करेसु ज्ञानी ॥ जिव्या जिव्याग कोड़ फोड़ गुण करेसु ज्ञानी ॥ कोड़ा कोड़ सागर सदैव करे ज्ञान गुणसार ॥ आप तणा प्रभु गुण अनन्ता कहेता न आवेजो पार ॥ १० ॥ चवदेई राजु-लोक, भरिया वालुन्दा कणिया । सर्व जीवना रोमराय, नहि आवे गिणिया ॥ एक एक वालु गुण करेस प्रभु अणंता अणंता ॥ पूज्य प्रसादविण लालचन्दजी, नहीं आवे कहेता ॥ समत अठारे यासष्टेए मास मिगसर छन्द ॥ सामपुरे गुण गाइया पन श्रीवीर जिणंद ॥ ११ ॥ इति ॥

—:o:—

।। अथ कालरी सज्झाय लिख्यते ।।

इण कालरो भरोसो भाईरे को नहीं, ओ किण विरिया माहे आवे ए ।। बाल जवान गिणे नहीं, ओ सर्व भणी गटकावे ए ।। इण०।।१।। बाप दादो बैठा रहे, पोता उठ चल जावे ए ।। तो पिण धेठा जीवने, धर्मरी बात न सुहावे ए ।। इण० ।। २ ।। महेल मंदिरने मालिया, नदीय निवाणने नालो ए सरगने मृत्यु पातालमें, कठियन छोड़े कालोए ।। इण० ।।३।। घर नायक जाणो करी, रिख्या करी मन गमती ए ।। काल अचानक ले चल्यो, चौवया रह गई झिलती ए । इण०।।४।। रोगी उपचारण कारणे, वेद विचक्षण आवे ए । रोगीने ताजो करे आपरी खबर न पावे ए ।। इण०।।५।। सुन्दर जोड़ी सारखी, मनोहर महेल रसालो ए।। पोढ्या ढोलिए प्रेमसुं, जठे आण पहुंतो कालोए।।इण०।।६।। राज करे रलियामणो, इन्द्र अनूपम दिसे ए ।। बैरी पकड़ पछाडियो, टांग पकड़ने घीसे ए ।। इण० ।। ७ ।।

वल्लभ बालक देखने, माड़ी मोटी घालो ए। छिनक माहे चलतो रह्यो,होय गई निरांमो ए। इण०॥८॥ नार निरखने परणियो,प्रपछरांने जीं हारे ए ॥ सूल ऊठ चलतो रह्यो, आ अभी हेल मारे ए ॥ इण०॥९। चेजारे चित्त चुपसुं, इमारत मोटो ए॥ पावडी ए चढतो पड़्यो खाय न सकियो रोटो ए ॥ इण० ॥ १०॥ सुरनर इन्द्र किन्नरा, कोई न रहे निशंको ए॥ मुनिवर कालने जीतिया, जिण दिया मुक्त मांहे डंको ए ॥ इण० ॥ ११ ॥ किसनगढ़ माहे सिटसठे प्रायो सेखे कालोए ॥ रतन कहे भव जीवने, कीजो धर्म रसालो ऐ ॥ इण० ॥ १२ ॥ इति ॥

—✿✿—

॥ धर्म रुचीनी सज्झाय ॥

चम्पानगर निरोपम सुन्दर, जठे धर्म रुचि रिख आया ॥ मास पारणे गुरु आज्ञा ले गोचरिया सिधाया हो ॥ मुनिवर धर्म रुची रिख बंदू

॥१॥ ए आंकड़ी ॥ भव भव पाप निकाचत संचत दुष्कृत दूर निकंदू हो ॥मु०॥२॥ नीची दृष्टि धरण सिर सोहे। मुनीश्वर गुण भण्डारे ॥ भिक्षा अटन करता आया, नाग श्रीधर द्वारे हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ खारो तुंबो जेहर हलाहल मुनिवर वेहराव्यो ॥ सहेज उखरडो आई अमघर, कहो बाहेर कुण जावे हो ॥ मु० ॥४॥ पूरण जाणी पाछा वलिया, गुरु आगे आवी धरियो ॥ कोण दातार मिल्यो रिख तोने, पूरण पातर भरियो हो ॥ मु० ॥५॥ ना ना करतो मोने बहिराव्यो, भाव उलट मन आणो ॥ चाखीने गुरु निरणय कीधो,जेहर हलाहल जाणी हो ॥ मु० ॥६॥ अखज अभोज कटुक सम खारो, जो मुनिवर तुं खासो, निरबल कोठे जहेर हलाहल अकाले मर जासो हो ॥ मु० ॥७॥ आज्ञा ले परठणने चाल्या, निरवध ठोर मुनि आया ॥ बिन्दु एक परठेव्या ऊपर, किडिया बहु मर जाया हो ॥ मु० ॥ ८ ॥ अल्प आहार थी, एहवी

हिंसा, सर्व थी अनरथ जाणी ॥ परम अभय रस भाव उलट धर, किडियारी करुणा आणी हो ॥ मु० ॥ ६ ॥ देह पडंता दया निपजे, तो मोटा उपकारे ॥ खीर खांड समझाणी हो मुनिवर, तत्क्षण कर गया अहारे हो ॥ मु० ॥ १० ॥ प्रबल पीर शरीरमें व्यापी, श्रावण सक्तज थाको । पाछु गमन कियो संथारो, समता दृढ़ता राखो हो ॥ मु० ॥ ११ ॥ स्वारथ सिद्ध पहुँता शुभ जोगे, महा रमणीक विमाणं ॥ चौसठ मणरो मोती सदरे, करणोर परमाणे हो । मु०॥ १२ ॥ खबर करणने मुनिवर आया, रिखजी कालज किधो ॥ धूग धूग इन नागश्राने, मुनिवरने विष दीधो हो ॥ मु०॥ १३॥ हुई पापोनी करम बहु बांध्या, पहुँतो नरक दुवारे॥ धन धन इण धर्म रुचीने, कर गया खेवो पारे हो॥ म ० ॥१४॥ पेंसट साल जोधाणा माहे सुखे किदो चोमासो ॥ रत्नचन्दजी कहे एह मुनिवरना, नाम थको शिव वासो हो ॥ मुनि० १५ ॥ इति॥

श्री ढ ढण मुनिनी सज्झाय ।

ढंढण रिखजीने वंदणा हूँवारी उत्कृष्टो अण-
गारे हूँवारी लाल ।। अविग्रह किधो एहवो हूँवारी
लब्वे लेशु आहाररे हूँवारी लाल ।।ढं० ।।१।। दिन
प्रति जावे गोचरी हूँवारी, न मिले सुजतो भातरे
हूँवारी लाल ।। मूलन लीजे असुजतो हूँवारी,
पंजर हुय गया गात रे हूँवारी लाल ।। ढं० ।।२।।
हरी पूछे श्रीनेमने हूँवारी,मुनिवर सहँस आठार रे
हूँवारी लाल ।। उत्कृष्टो कुण एहमें हूँवारी,मुजने
कहो किरतारे हूँवारी लाल ।। ढं० ।। ३ ।। ढंडण
अधिको दाखोयो हूँवारी, श्रीमुख नेम जिणदरे
हूँवारी लाल ।। कृष्ण उमायो बांदवा हूँवारी, धन
यादव कुलचन्दरे हूँवारी लाल ।।ढं०।।४।। गलियारे
मुनिवर मिल्या हूँवारी,वांद्या कृष्ण नरेशरे हूँवारी
लाल ।। कोईक गाथा पति देखने हूँवारी ।।
अपनो भाव विशेष रे हूँवारी लाल ।। ढं० ।।
। ५ ।। मुज घर आवो साधुजी हूँवारी, वहोरो

मोदिक अभिलापरे हूं वारी लाल ॥ वेहरीने पाछा फिरव्या हूं वारी,आवा प्रभुजीने पासरे हूं वारी लाल। ढं० ॥ ६ ॥ मुझ लव्वे मोदक किम मिल्या हूं वारी मुझने कहो किरपालरे हूं वारी लाल ॥ लब्ध नहीं थो वच्छ ताहूयरी हूं वारी लाल ॥ लब्ध निहालरं हूं वारीलाल ।ढं०।७। तो मुझने कलपे नहीं हूं वारी, चाल्या परठण ठोररे हूं वारी लाल ॥ ईट निहाले जायने हूं वारो, चुरय्या करम कठोररे हूं वारी लाल ढं० ॥८॥ आई सुधी भावना हूंवारी, उपनी केवल ज्ञानरे हूंवारी लाल ॥ ढढण रिख मुक्ते गया हूं वारी, कहे जिन हर्ष सुजाणरे हूं वारी लाल ॥ ढं० ॥ ६ ॥ इति ॥

—✿✿—

नव घाटीको स्तवन ।

नव घाटी माहे भटकत आयो पाम्यो नर भव सार ॥ जेहने वंछे देवता जीवा ते किम जावो हार॥ ते किम जावो हार, जीवाजी ते किम जावो

हार ॥ दुर्लभ तो मानव भव पायो, ते किम जावो हार ॥ १ ॥ धन दौलत रिद्ध संपदा पाई, पाम्यो भोग रसाल ॥ मोहो माया माहे भुल रह्यो, जीवा नहीं लियो सुरत संभाल ॥ नहि लियो सुरत संभाल, जीवाजी नहि लियो सुरत संभाल ॥ दु० ॥ २ ॥ काया तो थांरी कारमो दिसे, दिसे जिन धर्म सार ॥ आऊषो जाता वार न लागे, चेतो क्योंनो गवांर ॥ चेतो क्यों नो गवांर, जीवाजी चेतो क्यों नो गवांर ॥ दु० ॥३॥ यौवन वय माहे धंदो लगो, लागो हे रमणीरे लार ॥ धन कमायने दौलत जोड़ी, नहि कोनो धर्म लिगार ॥ नहीं कीनो धर्म लिगार, जीवाजी नहि कीनो धर्म लिगार ॥ दु० ॥ ४ ॥ जरा आवेने यौवन जावे जावे इन्द्रिय विकार ॥ धर्म किया विना हाथ घसोला, परभव खासो मार, परभव खासो मार जीवाजी परभव खासो मार ।दु०।५। हाथोंमें कड़ाने कानोंमें मोती, गले सोवनको माल ॥ धर्म किया विन एह जीवाजो

अभरण छे सहुभार जोवाजो, अभरण छे सहुभार ।।दु०।१६।। ए जग है सब स्वारथ केरा तेरो नहीं लिगार ।। वार वार सतगुरु समझावें, ल्यो तुम सयम भार ।। ल्यो तुम संयम भार, जोवाजो ल्यो तुम संयम भार ।दु०।१७। संयम लेईने कर्म खपावो पामो केवल ज्ञान ।। निरमल हुयने मोक्ष सिधावो श्रोछे साचोज्ञान । श्रोछे साचो ज्ञान जोवाजो श्रोछे साचो ज्ञान ।दू०।१८।संमत अठारेने वरस गुणचासी हरकेन सिघजी उल्लास ।। चैत वदी सातम साय-पुरमें, कीनो ज्ञान प्रकाश । कीनो ज्ञान प्रकाश जोवाजो। कोनो ज्ञान प्रकाश ।।दुर्लभतो०।१६।इति।।

—꙳꙳—

श्री धन्नाजीरी सज्झाय ।

धन्नाजी रिसमन चितवै, तप करतां तुटी हम तणी कायके ।। श्रीवीर जिनंदने पूछने, आसा से संथारो दियो ठायके ।। १ ।। धन करणी हो धन राजरी ।। ए आंकड़ी ।। पह उठीने वांद्या श्रीवीरने

श्रीजी आज्ञा दिवी फुरमायके ।। विमल गिरी थेवर संगे, चाल्या समसथ साव खमायके ।। धन० ।।२।। ठायो संथारो एक मासनो । थैवर आया प्रभुजीरे पासके ।। भंडउपगरण जिन वीरने, गौतम पूछे वेकर जोड़के ।।ध०।। ३ ।। तप तपीया वहु आकरा कहो स्वामी वासो किहां लोधके । सागर त्रेतीसारे आउपो, नव महीनामें सर्वारथ सिद्धके ।।ध०।।४।। महा विदेह क्षेत्र माहे सिद्ध हूशी, विस्तार नवमा अंगरे माह यके। शिव सुख साघ पदवी लही आसकरणजी मुनिगुण गायके ।।ध०।।५।। संवत अठारे वरस गुणसठे, वैसाख बद पक्षरे माह यके ।। विसलपुरमें गुण गाइया, पूज्य रायचन्दजीरे प्रसादके ।ध०।६।।ओछोजी इधकोमें कह्यो तो मुज मिच्छामि दुक्कडं होयके ।। बुद्धि अनुसारे गुण गाइया, सूत्रनो सार जोयके ।। ध० ।। ७ ।। इति ।।

—∆—

॥ श्री पद्मावती आराधना ॥

होवे राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जाणपणुं जग दोहिलो, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुझ मिच्छामी दुक्कड ॥ अरिहन्तनी साख, जे मैं जीव विराधिया, चौराशी लाख ॥ ते मुझ० ॥ २ ॥ सात लाख पृथिवी तणा, साते अपकाय ॥ सात लाख तेउकायना, साते वलिवाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येक वनस्पति, चौदे साधारण, बीती चौरिंद्रि जीवना, वे वे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी ॥ चौदे लाख मनुष्यना, ए लाख चौरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इण भव परभवे सेविया, जे मैं पाप अठार । त्रिविध त्रिविध करि परिहरुं, दुर्गतिना दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्ता दानना, मैथुनने उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो, किधो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोभ मैं किया, वली रागने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥

लहकाी जीव दुहव्या, दिधा कुडा कलंक ॥
निन्दा कीधी पारको रति अरति निशंक ॥ ते० ॥
॥ ६ ॥ चाड़ी कीधी चोतरे, कीधो थापण मोसो ।
कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो ॥ते०॥
॥१० ॥ खटिकने भवे मैं किया, जीव नाना विध
घात॥ चिडि मारने भवे चिडकला ॥ मारव्या दिनने
रात ॥ ते० ॥११॥ काजी मुल्लाने भवे, पढ़ी मन्त्र
कठोर॥ जीव अनेक जबे किया, कोधा पाप अघोर ॥
॥ते०॥ १२ ॥ मच्छी मारने भवे माछला, जाल्या
चल वास ॥ धीवर भील कोली भवे, मृग पाड्या
पास ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने भवे जे किया ।
आकराकर दंड ॥ बन्दोवान मारावित्रा, कारेड़ा
छडी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधा
नारकी दुःख ॥ छेदन भेदन वेदना ॥ ताडण अति
तिख ॥ ते० ॥१५॥ कुंभारने भवेमें किया, नीमा-
हपचाव्या ॥ तेली भवे तिल पेलिया, पापे पिंड
भराव्या ॥ते० ॥ १६ ॥ हाली भवे हल खेडिया,

॥ श्री पद्मावती आराधना ॥

हीवे राणी पद्मवती, जीवरास खमावे ॥ जाणपए जग दोहिलो, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुज मिच्छामी दुक्कड ॥ अरिहन्तनी साख, जे मैं जी विराधिया, चौराशी लाख ॥ ते मुज० ॥ २ ॥ सात लाख पृथिवी तणा, साते अपकाय ॥ सात लाख तेउकायना, साते वलिवाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येक वनस्पति, चौदे साधारण, बीती चौरिंद्री जीवना, बे बे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी ॥ चौदे लाख मनुष्यना, ए लाख चौरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इण भव परभवे सेविया, जे मैं पाप अठार। त्रिविध त्रिविध करि परिहरूं, दुर्गतिना दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्ता दानना, मैथुनने उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो, किधो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोभ मैं किया, वली रागने द्वेष ॥ ते० ॥ ८

कलहकारी जीव दुहव्या, दिधा कुडा कलंक ॥ निन्दा कीधी पारकी रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ॥ ६ ॥ चाड़ी कीधी चोतरे, कीधो थापण मोसो । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो ॥ते०॥ ॥१० ॥ खटिकने भवे में किया, जीव नाना विध घात॥ चिडि मारने भवे चिडकला ॥ मारव्या दिनने रात ॥ ते० ॥११॥ काजी मुल्लाने भवे, पढ़ी मन्त्र कठोर॥ जीव अनेक जबे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ॥ते०॥ १२ ॥ मच्छी मारने भवे माछला, जाल्या चल वास ॥ धीवर भील कोली भवे, मृग पाडया पास ॥ ते० । १३ ॥ कोटवालने भवे जे किया। आकरा कर दंड ॥ वन्दीवान मारा विया, कारेड़ा छडी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे,दीधा नारकी दुःख ॥ छेदन भेदन वेदना ॥ ताडण अति तिख ॥ ते० ।१५। कुंभारने भवेमें किया, नीमाहपचाव्या ॥ तेली भवे तिल पेलिया, पापे पिंड भराव्या ॥ते०॥ १६ ॥ हाली भवे हल खेडिया,

फाडया पृथ्वीना पेट । सूडने दान घणा किया,दीधे बदल चपेट । ते० । १७ । मालीने भवे रोपिया, नाना विध वृक्ष । मूल पत्रफल फूलना, लागा पाप ते लक्ष । ते० । १८ । अद्धोवाइयाने भवे, भरया अधिका भार ॥ पोठी पुठे कीड़ा पडया दया नाणी लिगार । ते० । १९ । छोपाने भवे छेतरया कोया रंगण पास । अग्नि आरम्भ कीधा घणा, धातुर्वाद अन्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सुरपणे रण भुंभता, मारया माणस वृन्द ॥मदिरा मांस माखण भख्या, खादा मूलने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उलंच्या ॥ आरम्भ किया अति घणा, पोते पापज संच्या ॥ ते० । २२ ॥ करम अंगारे किया वली, घरने दव दीधा । सम खाधा वीतरागना, कुडा कोलज कीधा ॥ ते० । २३ ॥ बिल्ला भवे उंदर लिया, गिरोली हत्यारी । मूढ़ गमार तणे भवे, मैं जुआ लीखा मारी । ते० । २४ । भडभुंजा तणे भवे, एकेंद्री जीव ॥ जुआरी चणा

नहु शेकिया, पाडंता रोव । ते० ॥ २५ ॥ खांडण पीसण गारना, आरम्भ अनेक ॥ रांधण इंधण अग्निना, कीधा पाप अनेक ॥ ते० ॥ २६॥ विकथा चार कीधावली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पाडया किया, रूदनने विखवाद ॥ ते० ।२७ ।साधु अने श्रावक तणा, व्रत लहीने भाग्या ॥ मूल अने उत्तर तणा, मुझ दूषण लाग्या ॥ ते० ॥ २८ ॥ सांप विच्छु सिंह चीतरा, सिकराने सामलि ॥ हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० ॥२९॥ सुआवड़ी दूषण घणा, वली गरभगलाव्या जीवाणी ढोल्या घणी शीलव्रत भंगव्या ॥ते०।३०॥ भव अनन्ता भमता थका, कीधा देह सम्बन्ध त्रिविध त्रिविध करी वोसरूं, तिणसु प्रतिबन्ध ॥ते०।३१॥ भवअनन्त भमता थका, कीधा कुटुम्ब सम्बन्ध ॥ त्रिविध त्रिविध करी वोसरूं, तिणसु प्रतिबन्ध ।ते०। ।३२। इण परे इह भवे पर भवे, कीधा पाप अक्षत्र त्रिविधत्रिविध करी वोसरूं, करू जन्म पवित्र ।ते०।

॥ ३३ ॥ इणविध ए आराधना भावे करसे जेह ॥ समय सुन्दर कहे पाप थी, इह भव छुटसे तेह ॥ ते° ॥ ३४ ॥ राग वैराडी जे सुणे यह त्रिजो ढाल ॥ समय सुन्दर कहे पाप थी, छुटे भव तत्काल ॥ ते० ॥ ३५ ॥ इति ॥

श्रीसुखविपाक-सूत्रम्

अर्हं

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सोहम्मे समोसढे जंबु जाव पज्जुवासमाणे एव वयासो—जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं श्रयमट्ठे पण्णत्ते सुहविवागाणं भन्ते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? तत्तेणंसे सुहम्मे अणगारे जंबू अणगारं एवं वयासी-एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता । . तंजहा-सुबाहू १ भद्दनंदीय २, सुजाएय ३, सुवासवे ४, तहेव

जिणदासे ५, धणपतीय ६, महब्बले ७ ॥ १ ॥
भद्दनंदो ८, महचंदे ६, वरदत्ते १० ॥

जइणं भन्ते ! समणेण जावचंपत्तेणं सुह-
विवागाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्सणं
भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं जाव के अट्ठे
पण्णत्ते ? ततेणंसे सुहम्मे अणगारे जंबू अण-
गारं एवं वयासी–एवं खलु–जंबू ! तेणं कालेणं
तेणं समएणं हत्थिसीसे णामं णयरे होत्था रिद्धि-
त्थिमियसमिद्धे, तस्स णं हत्थिसीसस्स णगरस्स
वहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थणं पुप्फ-
करंडए णामं उज्जाणे होत्था सव्वो उय० तत्थणं
कयवण माल पियस्स जक्खस्स जयखाययणे होत्था
दिव्वे० तत्थणं हत्थिसीसे णयरे अदीणसत्तू
णामं राया होत्था महया० वण्णओ, तस्स णं
अदीणसत्तुस्स रण्णो धारिणीपामुक्खं देवीसह-
स्सं ओरोहेयावि होत्था । ततेणं सा धारिणी
देवी अण्णया कयाइ तंसि तारिसगंसि वास

घरंसि जाव सीहं सुमिणे पासइ जहा मेहस्स जम्मणं तहा भाणियव्वं । सुबाहुकुमारे जाव अलंभोग समत्थे यावि जाणति, जाणित्ता अम्मापियरो पंच पासायवडिंसगसयाइं करावेंति, अब्भुग्गय० भवणं एवं जहामहाबलस्स रण्णो, णवरं पुप्फचूलापामोक्खाणं पंचण्हंराय वर कण्णयसयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेंति तहेव पंचसइओ दाओ जाव उप्पि पासाय वर-गए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे परिसा निग्गया, अदीणसत्तू जहाकूणिओ तहेव निग्गओ सुबाहू वि-जहा जमाली तहा रहेणं निग्गए जाव धम्मो कहिओ राया परिसा पडिगया । तएणं से सुबाहु कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ तुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेति जाव एवं वयासि-सद्दहामिणं भन्ते ! णिग्गंथं पावयणं०

जहाणं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राइसर जाव सत्यवाहप्पभिइओ मुण्डे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया नो खलु अहण्णं तहा संचाएमि मुंडे भवित्ता आगाराओ अण-गारियं पव्वइत्तए अहण्णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालस-विहं गिहिधमं पडिवज्जिस्सामि, अहासुहं देवाणु-प्पिया ! मा पडिबंधं करेह । ततेणं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणु-व्वइयं सत्तासिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जति पडिवज्जिता तमेव चाउग्घंटं आस-रहं दुरुहति जामेव दिसं पाउब्भूए तामेवदिसं पडिगए। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे जावएवंवयासी-अहोणंभंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंत २ पिए २ मणुण्णे २ मणामे २ सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे बहुजणस्स णियणं

भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे ५ सोमे ४ साहुजणस्स वियणं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे ५ जाव सुरूवे। सुबाहुणा भन्ते ! कुमारेणं इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धी किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमन्नागया ? केवा एस आसी पुव्वभवे ? एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जबुद्दीवेदीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं णगरे होत्था रिद्धित्थिमिय समिद्धे तथण हत्थिणाउरे णगरे सुमुहे नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे० तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा-णामं थेरा जाति सम्पन्ना जाव पंचहिं समणस-एहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणु गामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे णगरे जेणेव सहस्संबवणेउज्जाणेतेणेवउवागच्छइ उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहंउग्गिण्हित्तासंयमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति। तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसाणं थेराणं अन्तेवासी

सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव लेस्से मासं मासेण खममाणे विहरति । तए णं से सुदत्ते अणगारे मासक्खमणपारणगंसि पढमाये पोरिसीये सज्झायं करेति जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसे (सुधम्मं) थेरे आपुच्छति जाव अडमाणे उच्चनीय मज्झिमाइं कुलाइं सुमुहस्स गाहावतिस्स गेहे अणुप्पविट्ठे त एणं से सुमुहे गाहावती सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासति २ त्ता हट्ठतुट्ठे चित्तमाणंदिया आसणातो अब्भुट्ठेति २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति २ त्ता पाउयाओ ओमुयति २ त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेति २ त्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छति २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंदति णमंसति २ त्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छति २ त्ता सयहत्थेणं विउलेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं पडिलाभेस्सामोति तुट्ठे पडिलाभे माणे वि तुट्ठे पडिलाभिएवि तुट्ठे । ततेणं तस्स सुमुहस्स गाहा

वइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगा-
हगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेण सुदत्ते अण-
गारे पड़िलाभिए समाणे संसारे परित्तीकए
मणुस्साउए निबद्धे गेहंसि य से इमाइं पंच
दिव्वाइं पाउब्भूयाइं तंजहा-वसुहारा वुट्ठा १
दसद्धवन्ने कुसुमे निवातिते २ चेलुक्खेवे कए
३ आहयाओ देवदुंदुहीओ ४ अंतराविय णं
आगासंसि अहो दाणं महोदाणं घुट्ठे य ५ ।
हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो
अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४- धन्नेणं देवाणुप्पि
या ! सुमुहे गाहावई सुकयपुन्ने कयलक्खणे
सुलद्धे णं मणुस्सजम्मे सुकयरिद्धी य जाव तं
न्ने णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई । तत्ते-
से सुमुहे गाहावई बहूइं वाससयाइं आउयं
लइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थि-
रे णगरे अदीणसत्तुस्स रन्नो धारिणीए दे-
कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने । ततेणं सा-

धारिणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहो-
रमाणी २ सीह पासति सेस त चेव जाव उप्प
पासाए विहरति तं एयं खलु गोयमा । सुबा-
हुणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता
अभिसमन्नागया । पभूणं भंते ! सुबाहुकुमारे
देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइत्तये ? हंता पभू णं से
भगवं गोयमे समाणं भगवं महावीरं वंदति नमं
सति २ त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे
विहरति । ततेणं से समणे भगवं महावीरे अ-
न्नया कयाइ हत्थिसीसाओ णगराओ पुप्फक-
रंडाओ उज्जाणाओ कयवणमालपियस्स जक्खस्स
जक्खायणाओ पडिणिक्खमति २ त्ता बहिया
जणवयविहारं विहरति । ततेणं से सुबाहुकुमारे
समणो वासये जाते अभिगय जीवाजीवे जाव
पडिलाभेमाणे विहरति । ततेणं से सुबाहुकु-
मारे अन्नया कयाइं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासि-

णीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छति २ त्ता पोसहसाल पमज्जति २ त्ता उच्चारपासवण भूमि पडिलेहति २ त्ता दब्भ संथार संथरेइ २ त्ता दब्भसंथारं दुरूहइ २ त्ता अट्ठमभत्तं पगिण्हइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिये अट्ठमभत्तिये पोसहं पडिजागरमाणे विहरति। तए णं तस्स सुबाहुस्स कुमारस्स पुव्वरत्ता वरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्सइमे एयारूवे अज्झत्थिये चितीए पत्थीए मणोगए संकप्पे समुप्पने धण्णा णं ते गामागरणगर जाव सन्निवेसा जत्थणां समणे भगवं महावीरे जाव विहरित, धन्नाणं ते राईसर तलवर० जेणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडा जाव पव्वयंति धन्नाणं ते राईसर तलवर० जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जंति, धन्ना णं ते राईसर जाव जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए

धम्मं सुणेति तं जत्तिणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणु पुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमा गच्छिज्जा जाव विहरिज्जा ततेणं अहं समणस्स भगवश्रो महावीरस्स श्रंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइएज्जा। ततेणं समणे भगवं महावीरे सुवाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अ- ज्झत्थिय जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गमाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णगरे जेणेव पुप्फकरंडे उज्जाणे जेणेव कयवणमाल पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उगिण्हित्ता संजमेणं तवसा श्रप्पाणं भावेमाणे विहरित परिसा राया निग्गया ततेणं तस्स सुवाहुस्स कुमारस्स तं म- हया जहा पढमं तहा निग्गश्रो धम्मो कहिश्रो परिसा राया पडिगया। तते णं से सुवाहुकु- मारे समणस्स भगवश्रो महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ तुट्ठ जहा मेहे तहा

अम्मापियरो आपुच्छति, णिक्खमणाभिसओ तहेव जाव अणगारे जाते ईरियासमिये जाव बंभयारी, ततेणं से सुबाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अं-तिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अ-हिज्जति २ त्ता बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम० तवोवि-हाणेहिं अप्पाणं भावित्ता बहूइं वासाइं साम-न्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमा से कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने, से णं ततो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्ख-एणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति २ त्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति त्ता तहारूवाणं थेराणं अंतिए मुंडे जाव व्वइस्सति, से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्ण रियागं पाउणिहिति आलोइयपडिक्कंते समा-

हिपत्ते कालं करिहिति सणंकुमारे कप्पे देवताए उववज्जिहिति, से णं तओ देवलोगाओ माणुस्स पव्वज्जा बभलोए ततो माणुस्स महासुक्के ततो माणुस्सं आणते देवे ततो माणुस्सं ततो-आरणे देवे ततो माणुस्सं सव्वट्ठसिद्धे, से ण ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे जाव अड्ढाइं जहा दढपइन्ने सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परीनिव्वाहिति सव्व दुक्खाणं मन्तं करेहिति एवं खलु जबू ! समणेणं जाव-सपत्तेणं सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ।। पढमं अज्झयणं समत्तं ।।१।।

वितियस्स णं एवखेवो—एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं उसभपुरे णगरे थूभ करंड उज्जाणे धन्नो जवखो धणावहो राया सरस्सई देवी सुमिणदसण कहणं जम्मण बाल त्तणं कलाओ य जुव्वणे पाणिग्गणं दाओ पासाद० भोगाय जहा सुबाहुस्स नवरंभद्दनंदी

कुमारे सिरिदेवि पामोक्खा णं पञ्चसया सामी समोसरणं सावगधम्मं पुव्वभवपुच्छा महाविदेहे वासे पुण्डरीकिणी णगरी विजयते कुमारे जुगबाहू तित्थियरे पडिलाभिए माणुस्साउए निबद्ध इहं उप्पन्ने, सेसं जहा सुबाहुस्स जाव महाविदेहे वासे सिज्झहित बुज्झहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंत करेहिति

॥ बितियं अज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

तच्चस्स उक्खेवो — वीरपुरं णगरं मणोरमं उज्जाण वीरकण्हे जक्खे मित्तेराया सिरी देवी सुजाए कुमारे बलसिरिपामोक्खा पच्चसयकन्ना सामी समोसरण पुव्वभवपुच्छा उसुयारे नयरे उसभदत्ते गाहावई पुप्फदत्ते अणगारे पडिला भिए मणुस्साउए निबद्धे इहं उप्पन्ने जाव महा विदेहे वासे सिज्झहिति बुज्झहिति मुच्चिहिति परीनिव्वाहिति सव्व दुक्खाण मन्त करेहिति ॥

॥ तइयं अंज्झयण समत्त ॥ ३ ॥

धम्मघोसे गाहावती धम्मसीहे अणगारं पडिला भिए जाव सिद्धे ॥

॥ अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥ ८ ॥

णवमस्स उक्खेवो—चंपा णगरी पुन्नभद्दं उज्जाणे पुन्नभद्दो जक्खो दत्ते राया रत्तवईदेवं महचंदे कुमारे जुवराया सिरिकंतापामोक्खाण पञ्चसयाकन्ना जाव पुव्वभवा तिगिच्छी णगरं जियसत्तू राया धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जावं सिद्धे ॥

॥ नवमं अज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

जतिणंदसमस्स उक्खेवो—एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं साएयं नामं नयर होत्था उत्तरकुरु उज्जाणे पासमिओ जक्खो मित्तनंदो राया सिरिकंता देवो वरपत्ते कुमारे वर सेणापामोक्खा णं पञ्चदेवीसया तित्थयरागमणे सावगधम्मं पुव्वभवो पुच्छा सत्तदुवारे नगरे विमलवाहणे राया धम्मरुई अणगारे पडिला-

भिए संसारे परित्तीकए मणुस्साउए निबद्धे इहं उप्पन्ने सेसं जहा सुबाहुस्स कुमारस्स चिंता जाव पवज्जा कप्पंतरिओ जाव सव्वठ्ठसिद्धे ततो महाविदेहे जहा दढपइन्नो जाव सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥ एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्तेसेवं भंते ! सेवं भंते ! सुहविवागा ॥

॥ दसमं अज्झयणं समत्तं ॥ १० ॥

नमो सुयदेवयाए—विवागसुयस्स दो सुय क्खंधा दुहविवागो य सुहविवागो य, तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एकसरगा दससु चेव दिवसेसु उदिसिज्जन्ति, एवं सुहविवागो वि सेसं जहा आयारस्स ॥

॥ इति एक्कारसमं अंगंसमत्तं ॥

॥ इअ सुखविपाकसुत्तं समत्तं ॥

क्षेत्र विदेह सदा सुखकन्द । कर जोड़ी प्रणमुं तस पाय, भारत विघन सहु टली जाय । २ ॥ सिद्ध अनन्ता जे पनरे भेद, ते प्रणमुं मन धरी उमेद । आचारज प्रणमुं नगणधार, श्री उवज्झाय सदा सुखकार ॥ ३ ॥ साधु सहु प्रणमुं केवली, काल अनादि अनन्तावली । जे हिवड़ां वरते गुणवन्त, साधु साधवी सहु भगवन्त ॥ ४ ॥ ते सहु प्रणमुं मन उल्लास, अरिहन्त सिद्धने साधु प्रकास । (वार अनन्तो अनन्त विचार) साधु वन्दना करसुं हितकार, ते सांभलज्यो सहु नर नार ॥ ५ ॥

दोहा ।

इण हिज जंबूद्वीपवर, भरत नाम यहां क्षेत्र ।
जिनवर वचन सही करो, निर्मल कीधा नेत्र ॥१॥
यहां चोवीसे जिन हुवा, ऋषभादिक महावीर ।
पूरव भव कहि प्रणमये, पामीजे भव तीर ॥ २ ॥
पूरव भव चक्री (वर्त्ति) थया, ऋषभदेव निरभीक
अजितादिक तेवीसजिन, राजा सहु मण्डलीक ॥३॥

व्रत लहि पूरव चौदे, ऋषभ भण्या मन रंग ।
पूरब भव तेवीस जिन, भण्या इग्यारे अंग ॥४॥
बीस स्थानक तिहां सेवियां, बीजे भवे सुरराय ।
तिहांथी चवी चोवीस जिन,हुवा ते प्रणमुं पाय ।५।

॥ ढाल दूजी चौपाईनी देशी ॥

चक्रवर्त्ति पूरव भव जाण, वइरनाभ तिहां नाम वखाण । ऋषभदेव प्रणमुं जगभाण, गुण गावतां हुवे जन्म प्रमाण ॥ १ ॥ विमलराय पूरव भव नाम, अजित जिनेसर करुं प्रणाम । विमल बाहन पूरव भव राय, श्रीसंभव जिन प्रणमुं पाय ॥ २ ॥ पूरव भव धर्मसिंह राजान, अभिनन्दन प्रणमुं शुभ ध्यान । पूरव भव सुमति प्रसीध, सुमति जिनेसर प्रणमुं सीध॥३॥ पूरब भव राजा धर्म मित्त, पद्मप्रभुजाने वांदुनित्त । पूरव भव जे सुन्दर बाहू, तेह सुपास प्रणमुं जगनाहू ॥ ४ ॥ पूरव भव दीहबाहु मुनीस, चंदा प्रभु प्रणमुं निश-दीस । जुगबाहु पूरब भव जीव, प्रणमुं सुविध

जिणंद सदीव ॥ ५॥ लट्ठबाहु पूरव भव जास, श्रीशीतल जिन प्रणमुं उल्लास। दत्त (दिण्ण) राय कुल तिलक समान, प्रणमुं श्री श्रेयांस प्रधान ॥ ६ ॥ इन्द्रदत्त मुनिवर गुणवन्त। वास पूरव प्रणमुं भगवन्त ॥ पूरव भव सुन्दर बड़ भाग, वंदु विमल धरी मन राग ॥ ७ ॥ पूरव भव जे राय महिन्द, तेह अनन्तजिन प्रणमुं सुखकन्द। साधु शिरोमणि सिहरथ राय, धरमनाथ प्रणमुं चित्त लाय ॥ ८ ॥ पूरव भव मेघरथ गुण गाऊं, शांति नाथ चरणे चित्त लाऊं ॥ पहले भव रूपी मुनि कहिये, कुन्थनाथ प्रणम्यां सुख लहियें ॥६॥ राय सुदंसण मुनि विख्यात, वन्दु अरिजिन त्रिभुवन तात। पहले भव नन्दन मुनि चन्द, ते प्रणमुं श्रीमल्लि जिणंद ॥ १० ॥ सिंहगिरि पूरव भव सार, मुनिसुव्रत जिण जगदाधार। अदीण शत्रु मुनिवर शिव साथ, कर जोड़ी प्रणमुं नमिनाथ ।११। संख नरेसर साधु सुजाण अरिट्ठनेमि प्रणमुं

गुणखाण । राय सुदंसण जेह मुनीस, पार्श्वनाथ प्रणमुं निशदीस ॥ १२ ॥ छट्ठे भवे पोटिल मुनि राण, क्रोड वरस चारित्र प्रमाण । तीजे भवें नदन राजान कर जोड़ी प्रणमुं वर्द्धमान ।१३। चौवीसे जिनवर भगवन्त, ज्ञान दरसण चारित्र अनन्त । वार अनन्त करू परणाम, दुष्ट कर्म क्षय करसु साम ॥१४॥

दोहा

मेरु थकी उत्तर दिसें इणहिज जम्बूद्वीप ।
ऐरवत क्षेत्र सुहावणो, जिणविध मोती सीप ।१॥
तिहां चोवीसे जिण थया, चंद्रानन वारिषेण ।
एहिज चोवीसी सही, ते प्रणमुं समभेण ॥२॥

॥ ढाल ३ जी राग बेलावलो ॥ ए देशी ॥

चन्द्रानन जिण प्रथम, जिणेसर, बीजा श्री सुचंद भगवंतके । अग्गिसेण तीजा तीर्थंकर, चौथा श्री नदिसेण अरिहंत के । त्रिकरण शुद्ध सदा जिण प्रणमुं ॥ १ ॥ एरवय क्षेत्र तणा रे

चोवीस, ऋषभादिक स्वामी अनुक्रम हुवा, एक समय जनम्या सुजगीसके ॥ त्रि० ॥ २ ॥ पदमा इसिदिण्ण थुणीजे, ववहारी छठा जिणरायके। सामीचन्द सातमा जिन समरु, जुत्तिसेण आठमा सुख सायके ॥ त्रि० ॥ ३ ॥ नवमा अजिय सेण जिण प्रणमु, दसमा श्री सिवसेण उदारक। देव सम्म इग्यारमा गाउं, वारमा निक्खित्त सत्य सुखकारक ॥ त्रि० ॥ ४ ॥ तेरमा असजल जिन तारक, चोदमा श्री जिणनाय अनंतक। पनरमा उवसंत नमिजे, सोलमा श्री गुत्तिसेण महंतक ॥ त्रि० ॥ ५ ॥ सत्तरमा अति पास थुणीजे, प्रणमु अठारमा श्री सुपासक। उगणीसमा मेरुदेव मनोहर, वीसमा श्रीधर प्रणमु हुल्लासक ॥ त्रि० ॥६॥ इकवीसमा सामीकोट्ठ सुहंकर, बावीसमा प्रणमु अग्गिसेणक। तेवीसमा अग्गिपुत्त अनोपम चोवीसमा प्रणमु वारिषेणक ॥ त्रि० ॥ ७ ॥ चोथे अंग थकी ए भाख्या, अडतालीस जिणे-

सर नामक । छठे अंग कह्या मुनिसुव्रत, सुख-विपाक जगबाहु स्वामक ॥ त्रि० ॥ ८ ॥ जिण-पचास ए प्रवचने, इम अनंत हूवा अरिहंतक । विहरमान वलि जे जिन बहु, केवली साधु सहु भगवंतक ॥ त्रि० ॥ ६ ॥ सिद्ध थवा वलि सं-प्रति वरते, कर जोड़ी प्रणमुं तस पायक । हवे जे आगम थुणीजे, ते मुनिवर कहस्युं चित्त-लायक ॥ त्रि०॥ १० ॥ जिनवर प्रथम जे गणधर समणि, चक्रवर्ति हलधर वली जेहक । पूरव भव तसु नाम जे तस गुरु, गाइस्युं चौथा अंगथी तेहक ॥ त्रि० ॥ ११ ॥ चोवीसे जिन तीर्थ अंतर, कोड़ असंख्य हुआ मुनि सिद्धक । कर जोड़ी प्रणमुं ते अहसमें, नाम कहुं हवे जे परसिद्धक ॥ ॥ त्रि० ॥ १२ ॥

॥ ढाल चौथी ॥ राग धन्या श्री नी देशी ॥

अहसमें प्रणमुं ऋषभ जिनेसरु, श्री मेरु-देवी सोध सुहंकरु । चौरासी गणधर शीरोमणी

उसभसेन मुनिवर प्रणमुं सुखभणी ॥ उलाली॥ सुखभणी प्रणमुं बाहुबल मुनि सहस चौरासो मुनि, बीस सहस प्रणमुं केवली वली सिद्ध थया त्रिभुवन धणी । तीन लाख श्रमणी धूर नमुं नित्य नमुं ब्राह्मी सुन्दरी, चालीस सहस प्रणमुं केवली नमुं श्रमणी चित्त धरी ॥ १ ॥ घर आरिसा भरत नरेसरु, ध्यानदले वरी केवल लहिवरु। सहस दस संघाते नरपति, व्रत लई शिव गया प्रणमुं शुभमति ॥ शुभमति जम्बूद्वीप वन्नतो वली वखाणीये, भरतनी परे केवली वली क्षेत्र ऐरवय जाणीये । वदीये चक्री एरवयमुनि भावसुं नित मनरली, हुये भरत पाटे आठ अनुक्रमें वंदीये नृप केवली ॥ २ ॥ श्री आइच्चजस महाजस केवली अतिवल महावल ते जवीरियवसी । कीरतिवीरिय दंदवीरिय ध्याइये, जलवोरिय मुनि नित्य गुण गाइये ॥ गाइये ठाणांगे मुनिवर एह भाख्या संजति श्री ऋषभने वली अजित अन्तर हुवे कहुं सुणो

सुभमति । पचास लाख कोड सागर तिहां असं–
ख्यात केवली, जेह थया मुनिवर तेह प्रणमुं
अशुभ दुरमति निरदली ॥ ३ ॥ अजित जिणेसर
नेऊ गणधरू, धुर प्रणमुं सिहसेण सुहंकरू। प्रह
सने प्रणमुं फग्गुसाहूणी, हरखसुं वंदु सागर महा
मुनि ॥ महामुनि सागर तीस लाखे कोड अंतरे
जे थया, केवली मुनिवर तेह प्रणमुं वोयकर जोडी
सया। श्रीसंभव चारु मुनिवर चित्तसोमा गुण
रमुं, लाख दस ही कोडसागर अंतरे सिद्ध सहुं
नमुं ॥ ४ ॥ श्री अभिनन्दन प्रणमुं गणपति, वइ
रनाभ मुनि अतिराणी सती। सागर लाखे नव
कोड अंतरे, केवली जे थया वंदिये शुभपरे ॥
शुभपरे सुमति जिणेसर गणधर चमरकासवि
अजीया, नेऊं सहस कोड सागर विचे नमुं जे
सिद्ध थया। स्वामि पउमपहे सुसीसए नामे सुव्वय
वंदिये, साहुणी गुणरती नामे प्रणम्यां दुःख दूर
निकंदिये ॥ ५ ॥ कोड सहस नवसागर वाच वनो

उसभसेन मुनिवर प्रणमुं सुखभरणी ।। उलालो।। सुखभरणी प्रणमुं बाहुबल मुनि सहस चौरासी मुनि वीस सहस प्रणमुं केवलो यलो सिद्ध थया त्रिभुवन धणी । तीन लाख श्रमणी धूर नमुं नित्य नमुं ब्राह्मी सुन्दरी, चालीस सहस प्रणमुं केवली नमुं श्रमणी चित्त धरी ।। १ ।। घर आरिसा भरत नरेसरु, ध्यानदले करी केवल लहिवरु। सहस दस संघाते नरपति, व्रत लई शिव गया प्रणमुं शुभमति ।। शुभमति जम्बूद्वीप वन्नती वली बखाणीये, भरतनी परे केवली वली क्षेत्र ऐरवय जाणीये । वदीये चक्री एरवयमुनि भावसुं नित मनरली, हवे भरत पाटे आठ अनुक्रमें वंदीये नृप केवली ।। २ ।। श्री आइच्चजस महाजस केवली अतिवल महावल ते जवीरियवसी । कीरतिवीरिय दंदवीरिय ध्याइये, जलवीरिय मुनि नित्य गुण गाइये ।। गाइये ठाणांगे मुनिवर एह भाख्या संजति श्री ऋषभने वली अजित अन्तर हवे कहु सुणो

सुभमति । पचास लाख कोड सागर तिहां असं-
ख्यात केवली, जेह थया मुनिवर तेह प्रणमु
अशुभ दुरमति निरदली ॥ ३ ॥ अजित जिणेसर
नेऊ गणधरू, धुर प्रणमुं सिहसेण सुहंकरू । प्रह
सने प्रणमुं फग्गुसाहूणी, हरखसुं वंदु सागर महा
मुनि ॥ महामुनि सागर तीस लाखे कोड अंतरे
जे थया, केवली मुनिवर तेह प्रणमुं वोयकर जोडी
सया । श्रीसंभव चारु मुनिवर चित्तसोमा गुण
रमुं, लाख दस ही कोडसागर अंतरे सिद्ध सहुँ
नमुं ॥ ४ ॥ श्री अभिनन्दन प्रणमुं गणपति, वइ
रनाभ मुनि अतिराणी सती । सागर लाखे नव
कोड अंतरे, केवली जे थया वंदिये शुभपरे ॥
शुभपरे सुमति जिणेसर गणधर चमरकासवि
अजीया, नेऊं सहस कोड सागर विचे नमुं जे
सिद्ध थया । स्वामि पउमपहे सुसीसए नामे सुव्वय
वंदिये, साहुणी गुणरती नामे प्रणम्यां दुःख दूर
निकंदिये ॥ ५ ॥ कोड सहस नवसागर वांच वनी

प्रणमु मुनिवर जे थया केवली । श्री सुपास विदर्भ,गुणदधि प्रणमु, सोमा समणो गुणनिधि ॥ गुणनिधि नवसे क्रोड सागर अंतरे जे केवली, तेह प्रणमु भावस्यु ए, दुःख जावे सहु टली । श्रीचन्द्र प्रभु दीनगणधर सती समणा ध्याइये, नेऊ सागर क्रोड अंतरे केवली गुण गाइये ॥६॥

ढाल ५ मी ।

सफल संसार अवतार ए हुं गिणूं ॥ ए देशी ॥

सुविधि जिणेसर मुनि वाराहए, वारुणी वंदिये चित्त उच्छाहए । अंतर कोड नव सागर सहु जिहां, कालिकसूत्र तणो विरह भाख्यो इहां ॥ १ ॥ स्वामि शितलजिन साधु आणंद ए, सती सुलसा नमु चित्त आणंदए । एक सागर तणो कोड अन्तर कह्यो, एकसो सागर ऊणो करि संग्रह्यो ॥२॥ सहस छवीस लख छासठ उपरे, कालिकसूत्र तणो छेद इण अन्तरे । श्री श्रेयांस मुनि गोथुभ ध्याइये, धारिणी साहुणी चरण चित्त

लाइये ।। ३ ।। पूर्वभव गुरु कहूँ साधु सभूत ए, विश्वनन्दी वली श्रमण संजुत्तए । अचल मुनिवर नमुं पढम हलधारए, वंधन त्रिपृष्ट केशव सिरदार ए ।। ४ ।। चोपन सागर वीच थया केवली, वंदिये सूत्र तणो विरह भाष्यो वली । इम विच्छेद बिच सात जिए अन्तरे, जाणिये शांति जिनवर लग इणि परे ।। ५ ।। स्वामी वासुपूज्य जिन साधु सुधर्म धरे, साहुणी वली जिहां धरणी आपदा हरे । सुगुरु सुभद्र सुवन्धु वखाणिये, विजय मुनि बंधव द्विपृष्ट हरि जाणिये ।।६।। तीस सागर वीच अन्तरे जे थया, केवली वंदिये भाव भगते सया । विमल जिन वंदिये साधु मन्दर वली, समणी धरणीधरा आगमे सांभली ।।७।। गुरु सुदरिसण मुनि सागर-दत्त ए, स्वयंभू हरि वंधव भद्र शिवपत्तए । अन्तर सागर नव बीच केवली, वंदिये जे थया ते सहु-वली वली ।। ८ ।। स्वामी अनन्त जिन प्रणमिये जसगणी, समणी पउमा नमुं सुगुरु श्रेयांस मुनि

सीस अशोक भव बीये सुप्रभ जति । भ्रात पुरुषोत्तम केशव नरपति ॥६॥ सागर चारनो अन्तरो भाखिये, केवली वंदि ने शिवसुख चाखिये । जिणवर धर्म अरिष्ट गणधर कहुं, सतो श्रमणी शिवा वांदो शिवसुख लहुँ ॥ १० ॥ पूर्वभव कृष्णगुरु ललित सुसीसए, प्रणमुं राम सुदंसण निसदीसए । बंधव पुरुषसिह केशव थयो, पांच आश्रव सेवी निरय पुढवी गयो ॥ ११ ॥ सागर तीन बीचं आंतर भाखियो पल्य पऊणो करो ऊणो ते दाखियो तिहां कणे रायरिसी मघव मुनिवर थयो तिणे नवनिधि तजी शुद्ध संयम ग्रह्यो ॥ १२ ॥चोथो चक्रीसर सनतकुमार ए, वंदिये अंतकिरिया अधिकारए । इम इण अंतर मुनि मुक्ति पहूंता जिके, केवली वदिये भाव भगते तिके ॥ १३ ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

उत्तम हिवसिवरायऋषि महा सतीय जयन्ती एदेशी।

सोलहमा श्रीशान्ति पद चक्रीजिनराण, चक्रा-

युधगणि समणी सुई प्रणम्यां सुखपाया । पूर्व भव गंगदत्त गुरु तसु शिष्य वाराह, बंधव पुरुप पुण्ड-रीक राम आणंद उच्छाह ।। १ ।। अर्द्ध पल्योपम अंतरे ए, सिद्धा बहु भेद तेह मुनिवर वंदता, नहीं तीरथे छेद । चक्री श्री कुंथ नमु शाम्ब गणधार, अजुअज्जा वंदतां, हुवे जय-जय कार ।।२।। सागर गुरु धर्मसेन, सिस नन्दन हलधार, बंधव केसवदत्त नमूं, समवायांग प्रकार । कोड़ सहस बरसे करी, ऊणो पलिये चौभाग, इण अन्तर हुवा सिद्ध, बहु वांदु धरि राग ।। ३ ।। अर्जुन चक्री सातमा ए, कुम्भ गणधर गाउं, रक्खिया समणी वंदता ए, सिव संपत्त पाउं, कोड सहस वर्ष अंतरे ए, सिद्धा मुनि वृन्द, सातमो नरक सुभूम चक्री, पहुल्यो मतिमन्द ।।४।। मल्लि जिनेसर वंदिये, वले भिसय मुणिंद, गुरुणी वंदु बंधुमति, चरण कमल सुख-कन्द । सहस पंचावन साधवी ए, साधु सहस चालीस, बत्तीस सो मुनि केवली ए, प्रणमुं निस-

दीस ।।५।। मल्लि जिनेसर पूर्वभव, महावल अण-गार, तात वलि तस वंदिए, वल मुनिअनवार। अचल जीव पडिवुध थयो ए, धरण चन्द्रछाय, पूरण जीव ते संख वस रूपी कहाय ।।६।। वेसमण ते अदीनशत्रु, अभिचन्द्र जितशत्रु, लहि केवल मुगते गया, पूर्वभव मित्रु । मुनिवर नंदने नंदमित्र सुमित्र वखाणु, वलमित्र वली भानुमित्र, अमर-पति आणु ।।७।। अमरसेण महासेण, आठे नाय-कुमार, मिलि संगाते साधु थया अंग छठ्ठे विचार अन्तर वलि इहां जाणीये, लाख चोपन्न वास, फेवली तिहां वह वंदिये, धरी हर्ष उल्लास ।। ८ ।। वंदु चिणेसर वीसमा, मुनिसुव्रत स्वामी, गणधर इन्द्रने पुप्फमती प्रणमु शीरनामी सुरवर सातमे कप्प थयो, मुनिवर गंगदत्त, कत्तिय सोहम इन्द्र पणे, सुरश्रीय संपत्त ।। ६ ।। रायरिसि महापउम चक्री, वांदु कर जोडी, समुद्रगुरु अपराजित ए गाउं मदमोडी। रामऋषीश्वर वंदिये ए, नाम पउम

जेह, केशव नारायण तणो ए, बांधव कहुँ तेह ॥
॥ १० ॥ केवल लही मुक्ते गया, आठ बलदेव,
नवमो सुरसुख अनुभवो ए, लेहसे शिव हेव । मुनि-
सुव्रत नमि अन्तरो ए, वर्ष लाख छ होई, केवली
सिद्धा ते सहु प्रणमुं सूत्रजोई ॥ १ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥

नवकार जपो मन रंगे ॥ ए देशी ॥

एक वीसमा श्रीनमिजिन वंदु, गणधर कुम्भपर–
धान री माई । समणी अनिला ना गुण गावता ॥
सफल हुवे निज ज्ञान री माई ॥ १ ॥ श्रीजिनशा-
सन मुनिवर वंदु, भक्ते निज शिर नाम री माई ॥
॥ ए आं० ॥ कर्म हणीने केवल पाम्या, पहुत्या
शिवपुर ठामरी माई ॥ २ ॥ नवनिध चौदे रयण
रिध त्यागी, चक्री श्री हरिसेणरी माई ॥ आश्रव
छण्डी संवर मंडी, वेगे वरी शिव जेणरी माई ॥
श्रीजिन० ॥ ३ ॥ वरस वलीइहां दश लख अन्तर,
तिहां चक्री जयरायरी माई । वली अनेरा मुक्ति

पहोत्या, ते वंदु मन लायरी माई ।। श्रीजिन०।४।। प्रह ऊठी प्रणमु नेमीश्वर, समण ते सहस अठार- री माई । वरदत्त आदि मुनि पनरेसे, वंदु केवल धाररी माई ।। श्री० ।। ५ ।। गोतम समुंद्रने सागर गाउ, गंभीर थिमिति उदाररी माई।अचल कंपिल्ल अक्षोभ पसेणई, दशमो विष्णुकुमाररी माई ।। श्री० ।। ६ ।। अक्षोभ सागर समुद्र वंदु, हिमवंत अचल सुचंगरी माई । धरण पूरण अभिचंद आठमो, भण्या इग्यारे अंगरी माई ।। श्री० ।।७।। अंधक वृष्णि सुत धारणी अंगज, मुनिवर एह अठाररी माई ।। आठ आठ अंतेउर छंडी, पाम्या भवजल पाररी माई ।। श्री० ।। ८ ।। वसुदेव देवकी अंगज छऊ अणीयसे अणंतसेणरी माई । अजित सेणने अणिहतरिपु, देवसेण सत्रु तेणरी माई ।। श्री०।।६।। सुलसानाग घरे सुर जोगे वधिया रमणी बत्तोसरी माई । छंडो छट्ठ तप चौदस पूर्वी, संयम वरसे वीसरी माई ।। श्री० ।।१० ।। वसुदेव देवकी

अंगज आठमो मुनिवर गजसुकुमालरो माई । सही उपसर्गने शिवपुर पहोता, वंदु ते त्रिकालरी माई ॥ ॥ श्री० ॥ ११ ॥ सारण दारुय कुमर अणा हिट्ठी चौदे पूरव धाररी माई :संयम वच्छर वीस आराधी, कीधो कर्म संहाररी माई ।श्री०।१२।जाली मयालीने उवयाली पुरिससेण वारिसेणरी माई । बारे अंगी सोला वरसे, पाल्लो संयम तेणरी माई ।।श्री०।१३। वसुदेव धारणी अंगज आठे रमणी तजी पचासरी माई । समता भावे शिवपुर पोहत्या, प्रणमुं तेह उल्लासरी माई ।।श्री०।।१४ ।। सुमह दुमुहने कूवय ए वंदु, बलदेव धारणी पुत्ररी माई । वीस वरस संयम धर सोख्या, चौदे पूरव सूत्ररी माई ।। श्री० ।।१५।। रुकमणी कृष्ण कुमर कहुं पज्जुन्न, जंबूवती सुत सांबरो माई । पज्जुन्नसुत अनिरुद्ध अनोपम जास वेदर्भी अंबरी माई '। श्री०' ।। १६ ।। समुद्र बिजय शिवादेवीरा नंदन, सत्यनेमी दृढ़नेमरी माई। बारे अंगी सोला बरसे व्रत, रमणी पचासे तेमरी

माई° ॥ श्री० ॥ १७ ॥ समुद्रविजयसुत मुनि रह नेमि, ए एहु राजकुमाररी माई । केवल पामी मुक्ते पहोत्या, ते प्रणमुं बहुवाररी माई ॥ श्री० ॥ ॥ १८ ॥ आरज्यां जक्खणी आददे सिक्खणी, समणी सहस चालीसरी माई । साधव्यां सिद्धि तीन सहस ते, वन्दु कुमति टालीसरी माई ॥ श्री° ॥ १६ ॥ पउमावई गोरी गंधारी, लखमणा सुसीमा नामरी माई । जम्बूवती सतभामा रुकमणी, हरि रमणी अभिराम री माई ॥श्री०॥२०॥ मूल सिरी मूलदत्ता वेहुं संवकुमररी नाररी माई । अन्तगड अंगे ए सहु भाषी, पामी भवजल पाररी माई ॥ श्री०॥ ॥ २१ ॥ उत्तराध्ययन राजेमती सती, संयम सील निहालरी माई । प्रतिबोधी रहनेमी पाम्मो, सासता सुख निरवाणरी माई ॥ श्री० ॥ २२ ॥

॥ ढाल ८ मी ॥

गोतमसमुद्र सागर गम्भीरा ॥ ए देशी ॥

थायच्चासुत सुक सेलग आद, पंथक प्रमुख

मुनि पांचसे ए । मास संलेषणा करी तप अति-
घणां, पुण्डरीकगिरी शिवपुर वसेए ॥ राय युधि-
ष्ठिर भीम अतुलबली, अर्जुन नकुल सहदेवजी ए ।
राय श्री परिहरी सुध संयम धरी, साधुजी शिव-
पदवी वरीए।१। चौद पूरवधरी थीवर धर्मघोष धर्म
रुचि सीस सहु गुण भर्या ए॥ नाग श्री माहणी, दत्त
विष जे हणी, तुंबानो मास पारणो करायो ए ॥
सर्वार्थसिद्ध अवतरी तद नरभव करी, क्षेत्रविदेहमें
शिवगयो ए । ते मुनी वंदता कर्मवली नंदतां,
जन्म जीवित सफलो थयो ए ॥ २ ॥ समभी
गोवालियां जेण सुकुमालिया, दाखिया तास सहु
गुण थुणुं ए । तेव वली सुव्रता द्रौपदी संयता,
नेमशासन नित गुण भणुं ए ॥ विमल अनन्तजिन
अन्तरे राय, महाबल देवी पद्मावती ए । तास ते
अंगय कुमर वीरंगय, तरुण बत्तीस तरुणीपती
ए ॥ ३ ॥ ताम सिद्धत्य गुरु पास संयम वरु,
ब्रह्मलोके सुर उपनो ए । चवी बलदेव घर रेवती

उवरवर, निसढ नाम सुत संपनो ए ।। नेमपाय अनुसरी अथिरधन परिहरी, रमणो पच्चास तजो व्रत ग्रह्यो ए । करी बहु सम दम वरस नव संयम पालीने सर्वार्थसिद्ध सुख लह्यो ए ।।४।। क्षेत्र विदेहमें केवल संयम, सिद्ध होसी वली ते मुनि ए। इणपरिअनि✠ वह वेहप्रगति सहु, जुत्ति कहुं गुण थूणुए । दसरह दढरह महाधनु तेह, सतधनु गुण गुज मन वस्या ए। नवधनु दसधनु सयधनु मुनि एह, भाषिया सूत्र वण्हिदशाए ।।५।। पूरब भव हरिगुरु नाम द्रुमसेण, ललित*तेराम**पूरब भवे ए। राम बलदेव वलो नवमो हलधर ब्रह्मलोक सुख अनुभवे ए । चविजिण तेरमो नाम निकसाय, थायसी जिन सूरतरु समोए । बंधव केशव एक अवतार, अमम

✠ बारमा उपांग "वह्निदशा" के तेरह अध्ययनोंमें 'निसढ' से 'सयधणु' पर्यन्त १३ नाम कहे हैं।

* नवमा बलदेवका पूर्वभव रायललिय (राजललित) नाम से प्रसिद्ध है (समवायांग सूत्र १५८)।

** राम अर्थात् बलराम नामका नवमा बलदेव।

होसी जिन बारमोए ।।६।। सहस त्यांसिया सातसे भाखिया, बरस पच्चास इहां अन्तरोए। तिहां किए चित्त मुनि सिद्धसंपत तास, पा० वंदी कीरत करू ए ।। पूर्वभव बंधव चक्री ब्रह्मदत्त सातमी नरकमें संचर्या ए। इण अन्तरे वली नमुं बहु केवली, वेगे शिव सुन्दरी जे वर्याए ।। ७ ।।

।। ढाल ६ मी ।।

रामचन्द्रके बागमें चम्पो मोरी रह्यो री ।।ए देशी।

तेवीसमा जिन तारक, पुरिसादाणीय पास। मुनिवर सोले सहस वर गणधर आठ हुल्लास ।। (अज्जदिन्न*) शुभ अज्जघोष, वांदु वसिट्टनाम।

* पार्श्वनाथ स्वामीके प्रथम गणधर 'अज्जदिन्न' (आर्यदत्त) ये ऐसा शास्त्रोंसे स्पष्ट ज्ञात होता है परन्तु स्थानांग-सूत्रमें 'शुभ' से 'जस' पर्यन्त आठ गणधरोंके नाम उपलब्ध होते हैं किन्तु इस सूत्रका टीकाकार अपनी टीकामें ऐसा लिखते हैं "आवश्यक सूत्रमें पार्श्वनाथ स्वामीके गण तथा गणधर दश सुने जाते हैं, यथा "दस नवगं गणाण माणं जिणिंदाणं" (तेवीसमे जिनके दस और चौवीसमे जिनके नवगुण हुए हैं) किन्तु अल्पायुष आदि कारणोंसे उन दो गणधरों की यहां विवक्षा नहीं की गई ऐसी सम्भावना है" ऐसी टीकाका भाव देख कर आठ गणधरों की गिनतीमें "अज्जदिन्न" का नाम न मिलनेपर यहां पुरानी छपी हुई तेरह ढाल की पुस्तकके अनुसार यह नाम कोष्टकमें यथास्थित रखा गया है।

वली ब्रह्मचारी सोमने, श्रीधर करु प्रणाम ॥१॥ वीरभद्र जस आदि सिद्धा सहस प्रमाण। तेह मुनिवर वंदता, होवे परम कल्याण। साध्वी संख्या सहु अडतीस सहस वखाणु ॥ पुष्पचूलादिक सहस दो सिद्धि ते मन आणु ॥ २ ॥ समणी सुपासा* सोभसोभागी, धर्म चौजाम। ए अधिकार कह्यो श्रीठाणांग सुठाम। चौदश पूर्वी वली, चौनाणी मुनि केसीकुमार। परदेशी प्रतिबोधियो कीधो बहु उपकार ॥ ३ ॥ वरस अठाईसो अन्तरो सिद्धा साधु अनेक। तेह सहु विनयसे वंदिये, आणि चित्त विवेक ॥ मुनिवर चौदे सहस गुरु, प्रणमु श्रीमहावीर। सातसो केवली वंदिये, एकादश गणधर धीर ॥ ४ ॥ इन्द्रभूति अग्निभूति, तीजा वांदु वाउभूई। वियत्त सुधर्मा वंदता, मुझ मति निर्मल होई ॥ मंडिय मोरियपुत्त, अकंपित नित सिव्वास, अचलभूई मेतारिय वंदु श्रीप्रभास

* सुपासाका अधिकार स्थानाङ्ग ठा ६ मे कहा है।

॥ ५ ॥ बीरंगय* वीरजसनृप, संजय एणेयक राय । सेय सिव उदायण, नरपति सोल कहाय ॥ वीर जिनेसर आठेइ, दीक्षा रायसुजाण । मुनि-वर पोटिल बांध्या गोत्र तीर्थंकरठाण ॥ ६ ॥ पालक श्रावकपुत्र ते, वांदु समुद्रपाल । पुन्यने पाप विहुंक्षय करो, सिद्धा साधु दयाल ॥ न-यरी सावत्थी बिहुं मिल्या, केशी गौतम स्वामी सिस्स संदेह परिहरी, पंच महाव्रत लिया शिर नामी ॥ ७ ॥

॥ ढाल १० मी ॥

श्ररणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

माहनकुण्ड नयरीनो अधिपति. माहणकुल नभ-चंदोजी । बीर जिनेसर तात सुगुण नीलो, ऋषभ-दत्त मुणींदोजी ॥ नि० ॥ १ ॥ नित नित वांदु मुनिवर ए सहु,त्रिकरण शुद्ध त्रिकालोजी । विधि सु

* वीरंगय (वीराङ्गद) प्रमुख आठराजा श्रीमहावीर स्वामीके पास दीक्षा ली । (स्थानाङ्ग सूत्र, ठाणा ८) ।

देई रे तीन प्रदक्षिणा, कर अंजलीनिज भालोजी॥
॥ नि० । २ ॥ राय उदायण* सिधु सो वीरनो,
निरमल संजम धारोजी। सेठ सुदर्शन मुनि मुगते
गया, सुणी महाबल अधिकारोजी।नि०।३। काला-
सवेसियपुत्त गंगेयमुणी पोग्गलने शिवराजीजी।
कालोदाई अइमुत्तमुनि, वंदता सीजे काजोजी।नि०
।४। मंकाई मुनिवर किश्म वदिये, अर्जुनमाली
हुल्लासोजी। कासव सेमने धृतिहर जाणिये, केवल
रूप फैलासोजी ।। नि० ॥५॥ मुनि हरिचंदण वार-
त्तय वली, सुदर्शन पूर्णभद्दोजी। साध सुमणभद्र
समता आदरे, सुपइट्ठ समय सयंदोजी ॥ नि०।६॥
मेघमुनीश्वर अइमुत्त मुनि, रायऋषि अलक्खोजी
श्रीजिनसोस ए सहु मुगते गया सेवे सुरनर सक्कोजी

* उदायणका अधिकार भागवती, श० १, उ० ६ में कहा है।
कालासवेसियपुत्त (कालास्यवैसिक पुत्र) (भगवती,श० १उ० ६
पोग्गलका अधिकार (भगवती, श० ११ उ० १२ में कहा है
"मकाई" से 'अलक्खो' पर्यंत १६ मुनियोंका चरित्र अ
न्तगड वर्ग ६ मे कहा है।

॥ नि० ॥ ७ ॥ सहस छत्तीसे समणी चंदणा, आदे चौदसे सिधो जी, देवानंदा जननी वीरनी केवल-ज्ञाने संबंधोजो ।नि०।८।। समणी जयवंती पढमसि-ज्यातरी, सिद्धी केवल पामीजी । नंदा❁ नंदवती नंदोत्तरा, वली नंदसेणिया नामोजी ॥ नि० ॥९॥ मरुता सुमरुता महामरुता नमु मरुदेवा वली जाणो-जी । भद्रा सुभद्रा स्जाया जिनतणी, पाली निर्मल आणीजी ।नि०।१०। सुमणा समणी भूपदिन्ना नमु, राणी श्रेणिकरायजी । मास संलेषणा तेरे सिद्ध थई,प्रणम्यां पातक जायजी ।।नि०।।११।। काली❁❁ सुकाली महाकाली नमु, कण्हा सुकण्हा तेमोजी। महाकण्हा वीरकण्हा साहूणी, राम कण्हा सुद्धनेमो जी ॥ नि० । १२ ॥ पिउसेणकण्हा महासेणकण्हा ए दश श्रेणिकनारोजी निज निज नंदन कालसुणे

❁ 'नन्दा' से 'भुयदिन्ना' पर्यन्त १३ महासतियोंका चरित्र-अन्त कृदशा वर्ग ७ में कहा है ।

❁❁ 'काली' से महासेणकण्हा' पर्यन्त १० महासतियोंका चरित्र अन्तकृदशा वर्ग ८ में कहा हैं ।

फरी लीधो संजम भारोजी ॥ नि० ॥१३॥ एवम
समणी तप रयणावली, आदे दस प्रकारोजी । तई
केवल ए सहु मुगते गई,ते वंदु यहु वारोजी।नि०॥१४

॥ ढाल ११ मी ॥

सुखकारण भवियण समरो नित्य नवकार ।ए देशी
धर्मघोषमुनीश्वर, महावल गुरु सुतधार। जिन
पूछ्यो रोहे, लोकालोकविचार ॥१॥ वेमालियसा
वच, पिंगल नाम नियंठ। पडिवायक पुछ्या,संघर
समय पियंठ ॥२॥ कालियपुत्ता ● महेल, आणंदर
विख्य ज्ञानी । वली कासव चौथे, थिवरां पास
संतानी ॥३॥ मुनि तीसग ❋ कुरुदत्तपुत्र नियंठीपुत्र
धननारदपुत्र-मुनि ❋, सामहत्थी संजुत्त ।४। सुण
खत्त ❋ सव्वाणुभूई, खपकआणंद ❋ । जिन श्रीवप

● भगवती श० २ उ० ५ । ❋ भगवती श० ३ उ० १
❋ भगवती श० ५ उ० ७ ।
❋ भगवती, श० १५ उ० १ । ❋ खपक आणंद (तपस्वी
दर्वाई आणंद नामना तपस्वी साधु

प्राण्यो धन धन सिहमुणिंद ।। ५ ।। वली पूछ्या जिनने लेश्यादिक बहुभेद । गुण गाउं महामुनि माकंदो पुत्र उमेद ।६।। हवे श्रेणिकसुत कहुं, जाली● कुंवर मयाली । उवयाली पुरिससेण, वारिसेण आपदा टाली ।। ७ ।। दीहदंतने लट्ठदंत, धारणी नंदण होय । वेहलने विहायस, चेलणा अंगज दोय ।। ८ ।। ईक नंदा नंदन, मुनिवर अभय महंत । दीहसेणने❋ महासेण, लट्ठदतने गूढदंत ।। ।। ९ ।। सुधदंत कुमर हल, द्रमने वली द्रमसेण । गुण गाउं महाद्रुमसेण। सिंहने सिंह सेण ।। १० ।। मुनिवर महासेन पुण्यसेन पर धान । ए धारणी अंगज, तेजे तरणि समान ।। ।।११। सहुश्रेणिकनंदन, इयदस तेरे कुमार । आठ आठ रमणी तजी, अनुत्तरसुर अवतार ।।१२।।

● 'जाली' से 'अभय' पर्यन्त दश मुनियोंका अधिकार अनुत्तरोपपातिक वर्ग १ में कया है । ❋ 'दीहसेण' से 'पुण्यसेन' पर्यन्त तेरह मुनियोंका अधिकार अनुत्तरोपपातिक वर्ग २ में कहा है ।

तिण अवसर नयरी काकंदी अभिराम।
तिहां परिवसे भद्रा, सारथवाही नाम ॥ १३ ॥
तस नन्दन धन्नो * सुन्दर रूपनिधान।
तिण परणी तरुणी, बत्तीस रंभा समान ॥ १४ ॥
जिनवयण सुणीने, लीधो संजम जोग। मुनि
तरुण पणेमें सहु, छण्डया रसना भोग ॥ १५ ॥
नित छठ तप पारणो, आंबीले उज्झित भात।
जस समण वणीमग, कोई न वंछे भात ॥ १६ ॥
अति दुक्कर संयम, आराध्यो नवमास। करी
मास संलेषणा, सर्वार्थसिद्ध मांही वास ॥ १७ ॥
काकंदी, सुणनखत्त, राजगृही इसिदास। पेलक
ए बेउ, एकण नगर हुल्लास ॥ १८ ॥ राम पु-
त्रने चन्द्रमा साकेतपुर वर ठाम। पिट्ठिमाइया
वेढाल-पुत्त वाणियाग्राम ॥ १९ ॥ हत्थिणापुर
पोट्टिल, सहु ए धन्ना समान। तरुणी तप

---

* 'धन्ना' से 'वेहल्ल' पर्यन्त दस मुनियोंका अधिकार अनुत्तरोपपातिक वर्ग ३ में कहा है।

जननो, संयम वरसी मान ॥ २० ॥ हवे वेहल्ल कुमर कहुँ, राजगृही आवास । सर्वार्थ सिद्ध पहुँतो, घर संयम छई मास ॥ २१ ॥ ए एक भवे शिव-गामी जिनवर सीस । सहु नवमे अंगे भाख्या मुनि तेतीस ॥ २२ ॥ हवे पउम महापउम, भद्र सुभद्र वखाण । पउमभद्दने पउमसेण, पउमगुम्म मन आण ॥ २३ ॥ नलिणीगुम्म आणंद, नंदन एह मुनि जान । कालादिक दस सुत, कप्पवडंसिया ❋ ठाण ॥ २४ ॥ मुनि उदये पुच्छय्या, गौतमने पच्चखाण । चउजाम थकी कीयो, पंचजाम परिमाण ॥ २५ ॥ जिणें जिन-मत मंडी, खंडी कुमत अनेक । ते आर्द्र कुमार मुनि, धन तसु बुद्ध विवेक ॥ २६ ॥ गद्दभालि✡ बोहिय, संजय नृप अणगार । मुनि क्षत्री भा–

❋ कप्पवडंसिया (कल्पावतंसिका) अर्थात् नवमा उपांगमे 'पउम' में 'नन्दण' पर्यन्त १० मुनियोंके नाम कहे हैं ।

✡ गर्दभलि मुनिसे प्रतिबोध पाया संजय नृप, उत्तराध्ययन, अ० १८

ण्या, बहुविध अर्थ प्रकार ॥ २७ ॥ महीमंडल विचरे, विगत मोह अनाथ☼ । गुणगावंता अह-नीस, संपजे शिवपुर साथ ॥ २८ ॥ नृप श्रेणि-कनंदन, मुनिवर मेघ सुजाण । तजी आठ अंते-उर, उपन्यो विजय विमाण ॥ २९ ॥ अपमानी रयणा✻, आदर्यो संयम जेह । जिनपालित✹ मुनिवर, सोहम सुरथयो तेह ॥ ३० ॥ हरि चोर चीलातो, सुसमा तात ते धन्नो । आराधी संयम सोहम सुर उववन्नो ॥ ३१ ॥ श्री वीर जिनेसर, सासण मुनिवर नाम । नित भक्ते गाउं तेह तणा गुणग्राम ॥ ३२ ॥

॥ ढाल १२ ॥

॥ वेसालियसावय पिंगल० ॥ एदेशी ॥

धर्मघोष गुरु शिष्य सुदत्त, मासने पारणे तेह

☼ अनाथ मुनि, उत्तराध्ययन अ० २०

✻ रयणा रत्नद्वीपमें रहने वाली देवी ।

✹ जिनपालितका अधिकार ज्ञाता १ श्रु० ९ अध्ययनमें कहा है ।

सुपत्त, प्रतिलाभ्यो सुभचित्त । सुमुख थयो भव बिय सुबाहु, सुर थयो संजम ग्रही साहु, गुण तसु गाऊं नित्त ॥ १ ॥ श्रीजुगबाहु जिणवर आवे बिजय कुमार प्रतिलाभे भावे, बीजे भवे भद्रनंद । भोग तजो थयो साधु मुणीन्द, करी सलेपणा लह्यो सुखवृन्द, गुण तसु गात आणंद ॥ २ ॥ ऋषभदत्त पहले भव संत, तिण प्रतिलाभ्यो मुनि पुष्पदंत, तिहांथी थयो सुजात । तृण सम जाणी सहु रिद्धिजात, आदरी आठे प्रवचन मात, भवियण तसु गुण गात ॥ ३ ॥ पहले भव नृपति धनपाल, वेसमणभद्रने दान रसाल, देई सुवासव थाय, । संयम लेई ते मुनिराय, लहि केवल वलो शिवपुर जाय, ते वंदु मन लाय ॥४॥ पूर्वभव मेघरथ राजान, सुधर्म मुनिने देई दान बीजे भव जिनदास । संवर पालो जे थयो सिद्ध केवल दर्शन ज्ञान समिद्ध, वांदु तेह उल्लास ॥५॥ मित्ररायो पूर्वभव जाण, संभूतिविजय मुनि

दान वखाण, कुमरते धनपति होई। वीर समीपे संयम लीधो, ततक्षण कर्महणीने शोधा, दिन प्रति वंदु सोई ॥ ६ ॥ पूर्वभव नागदत्त धनीसर प्रतिलाभ्यो इन्द्रपुर मुनीसर, महाबल नाम कुमार। संयम लेई कारज साख्या, भवसागरथी आतम तारया, ते वंदु बहु वार ॥ ७ ॥ गृहपति पहले भव धर्मघोष, तिन प्रतिलाभ्यो अति संतोष, नाम मुनि धर्मसिंह। बीजे भव थयो भद्र-नंदी, मुक्ति गयो भव बंधन छंदी, ते वंदु निस-दीह ॥ ८ ॥ पहले भवजित शत्रु नरेश, प्रतिला-भ्यो धर्मवीर्य सुलेस, थयो महचन्द नाम कुमार। तिण छंडी बहु राजकुमारी पांचसे अपछराने उर्णा-हारी, ते वंदु केवलधारी। ६ ॥ विमल वाहन राजापूर्वभव, धर्मरुचि पडिलाभ्यो गुणस्तववरदत्त हुवो भवबीजे। संयम लेई गुरथी पामी। करपंत-रियो जे शिवगामी, कीरति तेहनो कीजे ॥ १० ॥ पूर्वभव देई दान उदार, बीजे भव थया राजकुमार

त्यां तजी पांच पांचसे नारी। सहु थया वीर जिनेश्वरशिष्य, सुखविपाके एह मुनीस, पंचमहा-व्रतधारी ॥ ११ ॥ नमि ❀ मातंगने सो मिल गाऊं, रामगुत्त सुदर्शन ध्याउं, नमुं जमाली भगाली। किकम पेल्लक फाल यतीजी, अंतगढ़ अंगे वायणा बीजी, ठाणा अंग संभाली ॥१२॥ पूर्व भव महापउम ते बीजे,तेतलीपुत्र✠ मुनि प्रण मीजे, महापउम✖ पुण्डरीक तात। वली वन्दु जित शत्रु सुबुद्धो, कर्म हणी तिण करी विशुद्धो ते मुनो वन्दु विख्यात ॥ १३ ॥ मुनि जयघोष विजय-घोष वांदु, बलश्री❀ नाम मृगापुत्र वांदु, कमला

❀ 'नमि' से 'फाल' (अंवडपुत्र) पर्यन्त दश नाम ठाणांग ठा० १० में कहे हैं।

✠ तेतलीपुत्रका अधिकार ज्ञाता १ श्रु० १४ अध्ययनमें कहा है।

✖ महापउम जो पुण्डरीक कडरीकका पिता था उसका अधि-कार ज्ञाता १ श्रु० १९ अध्ययनमें कहा है ॥

❀ सुग्रीव नगरके राजा बलभद्र रानी मृगावतीका पुत्र बलश्री जो कि मृगापुत्र इस नामसे प्रसिद्ध था इसका अधिकार उत-राध्ययन अध्ययन १९ में कहा है।

वती✻ इषुकार पुत्र पुरोहित वली तस नारी,नाम जसा संवेगे सारो.वंदता नित्य जयजयकार ॥१४॥

॥ ढाल १३ मी ॥

चतुर विचारिये रे ॥ ए देशी ॥

मुनि इसिदास☼ने धन्नो वली वखाणीये रे, सुणखत्त कत्तिय संजुत्त । सट्ठाण शालिभद्र आणंद तेतली रे, दशार्णभद्र अइमुत्त ॥ १ ॥ मुनिगुण गाइये रे, गावंता परमाणंद । शिवसुख साध गुणे करी अहोनिस संपजे रे, भाजे भव भय दंद । मुनि० ॥२॥ अणुत्तर अंग नो एहीज बीजो वाचना रे, ए दश मुनिवर नाम । नन्दीसूत्रमें साधु सुवुद्धि पणे कह्या रे, नन्दीसेण अभिराम ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ विषम नन्दी फल अधि-

---

✻ इषुकारपुर नगर इषुकार राजा कमलावती रानी भृगु पुरोहित वाशिष्ठ गोत्रवाली यशा नाम भार्या और इनके दो पुत्र ये अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १४ में कहा है ।

☼ 'इसिदास' से 'अइमुत्त' पर्यन्त दश मुनियोंके नाम ठाणा-ङ्गसूत्र ठा० १० में कहे हैं ।

मांही जे हुवा रे, ते मुनि गाऊं सर्वद ॥ मु० ॥ ॥ ११ ॥ सूयगडांग में साधु दोय कह्या रे, ठाणा अंग मांहो चालीस । एकसोगुणंतर चौथे अंगे कह्या रे, भगवती दोय तास ॥मु० ॥१२॥ पचास मुनि ज्ञाता मध्ये रे, अन्तगड नेऊ होय । तेतीस साधु नवमें अंगे कह्या रे, एकवीस विपाकमें जोय ॥ मुं० ॥ १३ ॥ रा०पसेणी केसी समण वली रे, जंबूदीवपन्नत्ति रे माय । एरवयक्षेत्र तणा चक्री साधु सुहामणा रे, ते वंदू मनलाय ॥ मु० ॥ १४ ॥ दस साधु कप्पवडंसिया रे पु-प्फिया मांही सात । चवदे भिक्खू वह्निदशा रे, हूं वंदु दिन रात ॥ मु० ॥ १५ ॥ बयालीस साधु उत्तराध्ययनमें रे, नन्दीसूत्रमें एक । आठ पाट श्रीवीर ना रे, हूं गा [illegible] त्रेक ॥ मु० ॥ ॥ १६ ॥ सर्व सा [illegible] पांच सो इक-

सू [illegible] स-

॥ १

परतिख संयम आदर्यो रे, दशार्णभद्र* नरेस। ॥मु०॥७॥ मुनि करकंडु** राजा देश कलिंग नो रे दुम्मुह पंचाल मूचाल। वली विदेही नामे नमि नरपति रे, नग्गई गंधार रसाल ॥ मु० ॥८॥ सिव बीजे ने महाबल** ए सहु राजवी रे, व्रत लेई थया अणगार। काम कषाय निवारी शीतल आतमा रे, विचर गंगेयो गणधार ॥ मु० ॥ ९ ॥ हुवे श्री वीर जिनेश्वर शिष्य सुहम्म गण रे, तास परंपर एह। जंबू प्रभवने वली शय्यंभव जाणिये रे, मनगपिया मुनि तेह ॥ मु० ॥ १० ॥ श्रीयशोभद्रने मुनि संभूति विजय वलि रे, भद्रबाहु थूलभद्र एम। घनेरा जिणवर आण

* दशार्णभद्रका अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १८ गाथा ४ में कहा है।

** करकंडु आदि चार मुनियोंका अधिकार उत्तराध्ययन अध्ययन १८ गाथा ४६ में कहा है।

* शिवराजर्षिका अधिकार भगवती श० ११ उ० ९ में कहा

** महाबलका अधिकार भगवती शतक ११ उ० ११ में कहा

छोड़ लिया जोग रोग करमोंका मिटाया जी ॥
॥ टेर ॥ फिर दुतिय पाट शिवलाल मुनोको थाप्या
॥ म० ॥ क्रिया उद्धार करायाजी । कियो ज्ञान
तणो उद्योत सभी कुं खोल सुणाया जी । फिर
तृतिय पाट उदेसागरजी सोहे ।। म० ॥ सभीको
लागे प्याराजी । ज्याने चतुर्थ पाठ मुनि चोथ-
मल कुं दिया बिठाईजी ॥ श्री० ॥१॥ फिर पंचम
पाट मुनि श्रीलाल तपधारी ॥ म० ॥ तेज सूर्य
सम भारीजी । हुवे महा बड़े मुनिराज जिन्हों की
जाऊं बलिहारीजी ॥ संवत उन्नीसे साल पिचंत्तर
माहीं ॥म०॥ चैत वदी नम सुखकारी जी । रतनपुरी
मंझार पूजने चादर ओढाई जी ॥ श्री० ॥२॥
चतुर विध सग मिलीने महोत्सव कीनो ॥ म० ॥
सभीके आनन्द छाया जी । देश देशके
आय जातरी उत्सव गावेजी ॥ फिर छठे पाट
मुनी जवाहिरलालजी दीपे ॥म०॥ जैनमें वल्लभ
लागेजी । ज्याने किया बहुत उद्योत भवी जीवन

गया रे, संप्रति वरते जेह । नाण दंसण ने चरण
करण धुरंधरा रे, श्री देव वंदे तेह ॥मु० ॥१८॥

—✿✿—

॥ कलश ॥

चौवीस जिनवर प्रथम गणधर चक्री हलधर जे हुआ।
संसार तारक केवली वली समण समणी संयुआ।
संवेग श्रुतधर साधु सुखकर आगम वचने चे सुण्या
दीपचन्द्र गुरु सुपसाये श्रीदेवचन्द्रे संथुण्या ॥ ११ ॥

देवचन्द्रजीके गुरु दीपचन्द्रजी इनके गुरु ज्ञानधर्म गणि हुए यथा दोहा—पाठक ज्ञानधर्म गणि, पाठक श्रीदीपचन्द । तास शिष्य देवचन्द्र मुनि, भणता धर्मानन्द ॥२०॥ यह दोहा प्रकरण रत्नाकर भाग प्रथम गत नयचक्र विवरण का प्रशस्तिका है।

पूज्य श्री श्री आचार्य मुनिराजोंका स्तवन

॥ दोहा ॥

श्री पूज्य गुण वर्णन करूं सुणो सभो चितलाय ।
दऊं पाटकी सावणी, जोडी चित्त लगाय ॥१॥

श्रीहुकुममुनि महाराज हुये अवतारी । महाराज जैनका धर्म दिपाया जी । जाने भोग

गारीजो । सिरेमलजी सन्त ज्ञानमें हैं भण्डारीजी।
सिमरथमलजो महाराज बड़े हैं ज्ञाता ॥ म० ॥
सूत्रके है वे धारीजो। हैं पुनमचन्दजी शिष्य जिनोंकी
महिमा न्यारीजो ।। श्री० ॥७॥ ठाण दस तीजोजो
महाराज बिराजे ॥म०॥ जुमाजो हैं ब्रह्मचारीजो।
सिलेकंवरजी औरजेठाजी सब गुणधारीजो । इन्द्र
कंवरजी पानकंवरजी जाणो ॥म०॥ ज्ञानमें हैं ले
लोनाजी । ज्याने किया ज्ञानका थोक उनोंकी
महिमा भारीजो ।।श्री०।।८।। कालकंवरजी फकी
रकंवरजी जुं जे ।।म०।। तपमें जोर लगावेजी।
ज्याने कीवी तपस्या बहुत आतमा कूंय सुधारीजो
अणचकंवर महाराज बड़ जसधारी ।। म० ॥
छोटाजो हैं गुणवन्ताजो। वाने दीवी रिद्ध छिटकाय
ध्यान प्रभुसे लगायाजो ।।श्री०।।९।। संवत उन्नीसे
साल सोतंतर मांहो ।। म० ।। आपने किया चौमा-
साजो । हुआ धर्म तणा उद्योत सभी जीवों हित–
कारीजो ।। भायां बायांको अरज आप सुण लीजो

कूतारस्याजी ॥श्री०॥ ३ । पंचमहाव्रतधारी परम उपकारी ॥ म० ॥ दोष बयालीस टालोजी । मुनि लावे सुजतो आहार । जाणे सब ही नर नारी जी ।कल्पवृक्ष साक्षात महा मुनिराया ॥ म० ॥ चिन्तामणि चिन्ता चूरेजी। ये कामधेनु सम जाण जगतमें है सुखकारीजी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ गुरु भाई मोतीलालजी जारी ॥ म० ॥ तपस्या माहे भारी जी । लालचन्दजी सन्त सभीमें हिम्मतधारी जी राधालालजी महाराज बहु उपकारी ॥ म० ॥ सताइस गुणके धारीजी । सिरदारमल श्रीच-न्द उनोंका गुण कथ गाउंजी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चांदमलजी मुनि देखा वपधारी ॥म० ॥ सुरजमल है सन्तोषीजी। करे ज्ञान ध्यान उद्योत रात दिन सोलाण ताईजी । शहर चोकाणे मांही पाप विराजी ॥ म० ॥ सभीका पुन्य सवायाजी। जो नित करे आपकी सेव-उसीका बेड़ा पारीजी ॥श्री०॥६॥ श्री रतनचन्दजी संत साथमें लावे ॥म०॥मूरति मोहन

उड़दना बाकला वीर प्रतिलाभ्यो । केवल लहिव्रत भाविकाए ।। ४ ।। उग्रसेन धुया धारिणी नन्दन राजमती नेम बल्लभाए ।। जोवन वयसे कामने जीत्यो । संयम लेई देव दुर्लभाए ।। ५ ।। पंच भरतारी पाण्डव नारी द्रुपद तनया वखाणीए ।।एक सौ आठ चीर पुराणो शीयल महिमा तस जाणो ए ।। ६ ।। दशरथ नृपनी नारि निरूपम। कौशि-ल्या कुल चन्द्रिका ए ।। शीयल सलोनी राम जनेता । पुन्यतणी प्रणालिकाए ।। ७ ।। कौशम्बिक ठामे सन्तानक नामे । राजकरे रंगराजियो ए । तसघर घरनी मृगावती सती । सुर भवने जस गाजियो ए ।। ८ ।। सुलसा साची शियल न काची राची नहीं विषय रस ए ।। मुखडा जोतां पाप पलाए । नाम लेतां मन उल्लसे ए । ९।। राम रघु वंशी तेहनी कामिनी जनक सुता सीता सती ए ।। जगसहु जाणे धीज करंता अनल शीतल थयो शियलथिए ।। १० ।। सुरनर वंदित शियल अख-

॥म०॥ अरज करूं आन गुजारोजी ! कल्पे सो चोमास आप चोकाएों कीजोजी ।श्री॥१०॥ पहले श्रावण सुदी मासके माँई ॥ म० ॥ चतुरदसी तिथने गाई जी । या करी जोड सुध भाव आपका गुण में गावोंजी । मालु मंगलचन्द अरज करे सुण लीजो ॥ म० ॥ त्रिविधे शीश नमाइजो । जो भूल चूक इस मांय हुवे तो माफ करावोजी ॥श्री०॥११॥इति।

॥ अथ श्री सोलह सतियोंका स्तवन ॥

आदिनाथ आदि जिनवर वन्दू । सफल मनोरथ कीजिये ए ॥ प्रभात उठी मंगलिक कामे । सोलह सतीना नाम लीजिये ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी । ब्राह्मी भरतनी बेनडी ए घट घट व्यापक अक्षररूपे । सोले सतीमा जेवडी ए ॥ २ ॥ बाहुबल भगिनी सती शिरोमणि । सुन्दरिनामे ऋषभसुता ए ॥ अंक स्वरूपी त्रिभुवन माहे । जेह अनूपम गुणजिता ए ॥ ३ ॥ चन्दन बाला बालपणोंथी । शियल वन्ति शुद्ध श्राविका ए ॥

पूज्य श्री श्री १००८ श्री जवाहिरलालजी
महाराज कृत

सुदर्शन चरित्र

॥ चौपाई ॥

धन शेठ सुदर्शन शियल शुद्ध पाली तारी आतमा ॥ टेक ॥ सिद्ध साधु को शीश नमाके, एक करूं अरदास ॥ सुदर्शन की कथा कहूं मैं, पुरो हमारो आस ॥ धन०॥१॥ चम्पापुरी नगरी अति सुन्दर, दधी वाहन तिहां राय ॥ पटरानी अभिया अति प्यारी, रूप कला शोभाय ॥ धन० ॥२॥ तिन पुर शेठ श्रामक दृढ़ धर्मी, यथा नाम जिन दास ॥ अर्हदासी नारी अति खासी, रूप शील गुण खास ॥ धन० ॥३॥ दास सुभग बालक अति सुन्दर, गौवें चरावन हार ॥ शेठ प्रेमसे रखे नेम से, करे साल संभार ॥ धन० ॥ ४ ॥ एक दिन जंगल में मुनि देखे, तन मन उपज्यो प्यार ॥ खड़ा

ण्डित शिवा शिवपद गामिनी ए। जेहने नामे निर्मल थई ए बलिहारी तस नामनी ए ॥ ११ ॥ कांचे तन्त चालणी बान्धो । कूप थकी जल काढ़ियो ए ।। कलंक उतारवा सतीय सुभद्रा । चम्पा पाप उघाड़ियो ए॥ १२ ॥ हस्तिनापुरे पाण्डु रायनी । कुन्ता नामे कामिनीए ॥ पाण्डुमाता दशे दशारनी बहने पतिव्रता पद्मिनीए ॥ १३ । शील वती नामे शीलव्रत धारिणी त्रिविध तेहने वंदिये ए ॥ नाम जयन्ता पातक जाये दरशने दुरति निकन्दिये ए ॥ १४ ॥ नीषध नगरी नल नरेन्द्रनी दमयन्ती तस गेहनी ए ॥ संकट पड़ता शीयल-जराख्यो । त्रिभुवन कीरति जेहनीए ॥ १५ ॥ अनंग अजिता जग जन पूजिता । पुष्फचुलाने प्रभावती ए ॥ विश्वविख्याता कामित दाता । सोलहमी सती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे भाखी शास्त्रे साखी । उदयरतन भाखे मुदा ऐ ॥ भाण-खवंता जे नर भणसे ते लेशे सुख सम्पदा ए ॥ १७ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

पूज्य श्री श्री १००८ श्री जवाहिरलालजी महाराज कृत

सुदर्शन चरित्र

॥ चौपाई ॥

धन शेठ सुदर्शन शियल शुद्ध पालो तारी आतमा ॥ टेक ॥ सिद्ध साधु को शोश नमाके, एक करूं अरदास ॥ सुदर्शन को कथा कहूँ मैं, पुरो हमारो आस ॥ धन०॥१॥ चम्पापुरी नगरी अति सुन्दर, वधी वाहन तिहा राय ॥ पटरानी अभिया अति प्यारी, रूप कला शोभाय ॥ धन० ॥२॥ तिन पुर शेठ श्रामक दृढ़ धर्मी, यथा नाम जिन दास ॥ अर्हदासी नारी अति खासी, रूप शोल गुण खास ॥ धन० ॥३॥ दास सुभग बालक अति सुन्दर, गौवें चरावन हार ॥ शेठ प्रेमसे रखे नेम से, करे साल संभार ॥ धन० ॥ ४ ॥ एक दिन जंगल में मुनि देखे, तन मन उपज्यो प्यार ॥ खड़ा

ण्डित शिवा शिवपद गामिनी ए। जेहने नामे निर्मल थई ए बलिहारी तस नामनी ए ॥ ११ ॥ कांचे तन्त चालणी बान्धी। कूप थकी जल काढ़ियो ए॥ कलंक उतारवा सतीय सुभद्रा। चम्पा पाप उघाड़ियो ए॥ १२ ॥ हस्तिनापुरे पाण्डु रायनी। कुन्ता नामे कामिनीए॥ पाण्डुमाता दशे दशारनी बहने पतिव्रता पद्मिनीए॥ १३। शील वती नामे शीलव्रत धारिणी त्रिविध तेहने वदिये ए॥ नाम जपन्ता पातक जाये दरशने दुरति निकन्दिये ए॥ १४॥ नीषध नगरी नल नरेन्द्रनी दमयन्ती तस गेहनी ए॥ संकट पड़ता शीयल राख्यो। त्रिभुवन कीरति जेहनीए ॥ १५ ॥ अनंग अजिता जग जन पूजिता। पुष्फचुलाने प्रभावती ए॥ विश्वविख्याता कामित दाता। सोलहमी सती पद्मावती ए॥ १६ ॥ वीरे भाषी शास्त्रे साखो। उदयरतन भाखे मुदा ए॥ भाणन्तां जे नर भणसे ते लेसे सुख सम्पदा ए ॥ १७॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

सरे. पुरमें जय जयकार ॥ धन० ॥ १२ ॥ पंच धाय हुलसावे लालको, पाले विविध प्रकार ॥ चंद्र कला सम बढ़े कुंवरजी, सुन्दर अति सुकुमार ॥ धन० ॥ १३ ॥ कला वहोत्तर अल्प कालमें, सीख हुआ विद्वान ॥ प्रौढ़ पराक्रमी जान पिताने, किया व्याह विधि ठान ॥ धन० ॥१४॥ रूप कला यौवन वय सरीखी॥ सत्यशील धर्मवान ॥ सुदर्शन और मनोरमाकी, जोड़ी जुड़ी महान । धन० ॥ १५ ॥ श्रावक व्रत दोनोंने लीना पौषध और पचखान ॥ शुद्ध भावसे धर्म अराधे, अढलक देवे दान ॥ धन० ॥१६॥ किया शेठने काल कुंवरने, जब पाया अधिकार ॥ पर उपकारी परदुःखहारी, निराधार आधार ॥ धन० ॥ १७ ॥ नगर शेठ पदराय प्रजा मिल, दिया गुणो दधि जान ॥ स्वकुटुम्ब सम सब की रक्षा, करते तज अभिमान ॥ धन० ॥ १८ ॥ कपिल पुरोहित विविध विद्याधर, सुदर्शनसे प्रीत ।' लोह चुम्बक सम मिल्या परस्पर, सरीखे सरीखी

सामने ध्यान मुनिमें, विसर गया संसार ।।धन०।
५ ।। गगन गये मुनिराज मंत्र पढ़, बालक घरके
श्राय ।। शेठ पूछते मुनि दर्शनके, सभी हाल
सुनाय ।। धन० ।। ६ ।। प्रमुदित भावे शेठ कहे
धन, मुनि दर्शन ते पाया ।। अपूर्ण मंत्रको पूर्ण
करके, शुद्ध भाव सिखलाया ।। धन० ।। ७ ।
शिखा मंत्र नवकार बाल जब, मनमें करता ध्यान
ऊठत बैठत सोवत जागत, बस्ती और उद्यान ।।
धन० ।। ८ ।। एक दिन जंगलसे घर आता,
नदिया आई पूर ।। पेली तीर जानेको बालक,
हुआ अति आतुर ।। धन० ।। ९ ।। धरके ध्यान
नवकार मंत्रका, कूद पडा जल धार ।। खेर खूंट
घुस गया उदरमें । पीड़ा हुई अपार ।।धन०।।१०।।
छोड़ा नहीं नवकार ध्यानको, तत्क्षण कर गया
काल ।। जिन दास घर नारी कुखे, जन्मा सुन्दर
लाल ।। धन० ।। ११ ।। कर महोत्सव रखा नाम
सुदर्शन, वर्त्या मंगलाचार ।। घर घर रंग वधावना

गुरुकी मुझे प्रतिज्ञा, कहु न तेरो वात ।। तुम भी निश्चय नियम करोरो, लाज मेरी तुम हाथ ।घन०। २७ । नियम कराया बाहर आगा, मन पाया विश्राम ।। बाधिनके मुखसे मृग बचके, पाया निज आराम ।। घन० ।। २८ ।। लिया नियमपर घर जानेका, जहां रहती हो नार ।। निज घर रहके धर्म आराधे, शियल शुद्ध आधार ।।घन०।।२६।। नृप आदेश इन्द्र उत्सवे, चले सभी पुर बाहर ।। सज सृङ्गारी चली नृप नारी, कपिला उसकी लार ।। घन० ।। ३० ।। पांच पुत्र संग मनोरमाजी, चली बैठ रथ मांय ।। कपिला निरखी अति मन हर्षी, रानीको बतलाय ।। घन० ।। ३१ ।। सती सावित्री लक्ष्मी गौरीसे, अधिकी इनकी काय ।। किस घर यह नारी सुखकारी, शोभा वरनी न जाय ।। घन० ।। ३२ ।। राणी कहे सुण पुरोहिताणी, शेठ सुदर्शन नार ।। सत्य शियल और नियम धर्मसे इसका शुद्ध आचार ।। घन० ।।३३।।

रीति ॥ ध० ॥ १९ । पुरोहित नारी महा व्यभिचारी, कपिला कुटिल कठोर ॥ शेठ कीर्ति सुन सुन्दर तनकी, व्यापो मन्मथ जोर ॥धन०॥२०॥ पति गये परदेश शेठ पै, बोली कपट विशेष ॥ पति हमारा अति बीमारा, चलो चलो तज शेष ॥ धन० ॥ २१ । प्रीति बंधाना शेठ शियाना, आया कपिला साथ ॥ अन्दर लेकर हाव भाव से, बोली मन्मथ बात ॥ धन० ॥ २२ ॥ महिषी सींगमें डांस डंक सम, लगे न इसको बोल ॥ दाय उपाय से यहांसे निकलूं, करते मनमें तोल ॥धन० ॥२३ अपच्छर सम तुम नारी प्यारी,मम नव यौवन काय ॥ कौन चुके ऐसे अवसरको, मिल्यो योग सुखदाय ॥ ॥ धन० ॥ २४ ॥ हतभागी हूँ मैं सुन सुभगे, अन्तरायके जोर ॥ संढपना है मेरे तनमें, व्यर्थ मनोरथ तोर ॥ धन० ॥ २५ ॥ हे दुर्भागी जा दुर्भागी, धिक मैं खोई बात ॥ धिक मेरे अज्ञान पतिको, रहता तेरे साथ ॥ धन० ॥ २६ ॥ देव

४० ।। जो मैं नारी हूँ हुशियारी, सुदर्शन वश लाऊं ।। नहिं तो व्यर्थ जगतमें जी के, तुझे न मुंह दिखलाऊं ।। धन० ।।४१।। सुदर्शनको जो वश लावो, तो तुम रंग चढ़ाऊं ।। नारी चरितकी पूरी नायिका, कहके मान बढ़ाऊं ।। धन० ।।४२।। करी प्रतिज्ञा हो निर्लजा, क्रोड़ा कर घर आई ।। धाय पंडितासे वात सुनाई, लोभसे वह ललचाई धन० ।।४३।। घाट घड़ा नाना विध जव मन, एक उपाय न आया ।। कौमुदी महोत्सव निकट आवे जब, काम करूं मन चाया ।। धन० ।।४४।। काम देवकी करी प्रतिमा, महोत्सव खूब मडाया ।। बाहिर जावे अन्दर लावे, सब जनको भरमाया ।। धन० ।।४५।। कार्तिक पूर्णिमा कौमुदी महोत्सव, नृप पुर बाहिर जावे ।। सुदर्शनजी नृप आज्ञासे पौषध व्रतको ठावे ।। धन० ।। ४६ ।। कर प्रपंच अभिया मुर्छाणी, नृप बोले युं वाणी ।। कोन उपाधि तुम तन बाधा, कहो कहो महारानी ।। धन०

मुह मचकोड़ो तनको तोड़ी, हंसी कपीला उस वार ॥ भेद पूछती अति हठ धरती, कहो हंसी प्रकार ॥ धन० ॥ ३४ ॥ नारी नपुंसकको व्यभिचारी, जन्म्या पुत्र इन पांच ॥ तुम जो बोलो शीयलवती है यही हंसीका सांच ॥ धन० ॥ ३५ ॥ कैसे जाना हाल सुनावो, कहो बीतक सब बात ॥ राणी बोली मतिमन्द तोरी, हारी सुदर्शन साथ ॥ धन० ॥ ३६ ॥ छलकर तुझको छली सुघड़ने, तू नहिं पाया भेद ॥ त्रियाचरित्रका भेदन समझी व्यर्थ हुआ तुझ खेद ॥ धन० ॥३७॥ मुझसे जो नहिं छला जायगा, वह नर सबसे शूर ॥ सुर असुर नागेन्द्र नारीसे टले न उसका नूर ॥ धन०॥ ३८ ॥ अरि मूर्खा मत बोलो ऐसी, नारी चरित जो जाने ॥ सुर असुर योगिन्द्र सिद्धको, पलक हाल वश आने ॥ धन० ॥ ३९ ॥ व्यर्थ गर्व मत धरो रानीजी, मैं सब विधि कर छानी ॥ सुदर्शन नहिं चले शीलसे, यह बात लो मानी ॥ धन० ॥

लेकर गई बाहरको पहरेदार भरमाई ।। पौषध-शाला शेठ सुदर्शन, मूर्ति फेंक ले आई ।। धन० ।। ५५ ।। पौषध मौन शेठ नहि बोले बैठा ध्यान लगाई । अभियाकर शृंगार शेठके, खड़ी सामने आई ।। धन० ।। ५६ ।। हाथ जोड़ अमृतसम मीठा बोले मुखसे बोल ।। मैं रानी तुमपुर जनमानी, सरखे सरखो जोड़ ।। धन० ।।५७।। कल्पवृक्ष सम काया थारी, मैं अमृतकी वेलो ।। मौन खोल निरखो मुझ नयना, ध्यान ढोंग दो मेली खोल ५८ ।। करूं जतन तुम जाव जीव लग, प्राण बरो वर मान ।। तन धन यौवन तुम पर अर्पन, अबसे लो यह जान ।। धन० ।। ५९ ।। व्यर्थ जन्म मुझ गया आज लग खबर न तुमरी पाई ।। आज सु-दिन यह हुआ शेठजी धाय पंडिता लाई ।।धन०।। ।। ६० ।। बोले नहि जब शेठ रानीने, लिया नेत्र वढ़ाई ।। नयन बानको मारे खेंचके, पांव घुघर घमकाई ।। ।।धन० ।।६१।। पहना शील सनाह शेठ

॥४७॥ हुंहुंकार करे नृपनारी, शब्द न एक उचारे ॥ धाय पंडिता कपट चरित्रा, खोटो जाल पसारे ॥ धन० ॥४८॥ महाराजा तुम युद्धसिधाये राणी देव मनाये ॥ जो आवे सुखसे महाराजा, तो प्रतीति तुम पाये ॥ धन० ॥ ४६ ॥ कार्तिक पूर्णिमा महोत्सव पूरा, विन बाहर नहिं जाऊं ॥ विसर गई ऐ नाथ साथ तुम ताके फल दरशाऊं ॥ धन० ॥ ५० ॥ आप कहो अरदास नाथ यों, माफ करो तुम देव ॥ महारानीको भेजूं महलमें करे तुम्हारी सेव ॥ धन० ॥५१॥ त्रिया चरित वश होके राजा, हाथ जोड़ सब बोला ॥ त्रिया चरित को देव न जाणे, भेद ग्रन्थने खोला ॥धन० ॥५२॥ कपट छोड़ रानी जब जागी, दासी बात बनाई ॥ नृपको भरमाई महल गई, रानी हर्ष भराई ॥ धन० ॥ ५३॥ धन्य पंडिता तव चतुराई अच्छी बात बनाई ॥ आज महल ले आवो सेठ को, जोग बना सुखदाई ॥ धन० ॥ ५४ ॥ मूर्ति

राया ।। माने नहीं तुम मेरे वचन को, यमपुर देउ पहुंचाय ।। धन० ।। ६६ ।। बात हाथ है सुन रे बनिया, अब भी कर तू विचार।। रूठो काल कतरनी हूं मैं, तू ठी अमृत धार ।। धन० ।। ७० ।। महा बातसे मेरू न कंपे, अभियासेती शेठ ।। ज्ञान वैराग्य आतमबल बलिया, मैं यह सबमें जेठ ।। धन० ।।७१।। त्यागा तब शृंगार नारने,विकल करो निज काय ।। शोर करी सामन्तको तेड़े, जुल्म महलके मांय ।। धन० ।। ७२ ।। पुरजन सह नरनाथ बागमें, मुझे अकेली जान ।। महा लम्पट मुझ तनपर धाया, मैं रखा धर्म अभिमान ।।धन० ।।७३।। पुर मंडन यह शेठ सोभागी, घर अपछर सम नार ।। आवे आंक न लागे कदापि, शेठ छोड़े किम कार ।। धन० ।। ७४ ।। शोच करे सरदार रानी तब, बोली कठिन करार।। रे रजपूत रंक होय क्यों, करते ढीलमढाल ।। धन०।।७५।। सुभट शेठ को पकड़ राय पैं, लाये खास हजूर ।। देख शेठको

ने धीरज मनमें लाई ॥ ज्ञान खडगसे छेदे बानको, रानी गई मुरझाई ॥धन० ॥ ६२ ॥ वर्षा ऋतुसम बनी भामिनी, अम्बर बदल बनाई ॥ हुंकारको ध्वनि गाज सम, तन दामन दमकाई ॥ धन० ॥ ॥ ६३ ॥ अमोघ धारा वचन वर्षाती, चाह भूमि भिजाई ॥ मग शैल सम शेठ सुदर्शन, भेद न न सके कोई ॥ धन० ॥ ६४ ॥ करुणा स्वरसे रोवे कामिनी, पूरो हमारो आश ॥ शरणागत मैं आई तुम्हारे, मानो मम अरदास ॥ धन० ॥६५॥ अवसर देख शेठ तव बोला, सुनो सुनो बड़ मात ॥ पंच मातमें तुम अग्रेसर, तज दो खोटी बात ॥ धन० ॥ ६६ ॥ तजदे यह तोफान सुदर्शन, मैं नहिं तेरी मात । मूर्ख कपिला ते भरमाई, मुझे छला तू चाहत ॥ धन० ॥ ६७ ॥ मेरु डगे धरती धूजे सया, सूर्य करे अन्धकार ॥ तो पण शील छोड़ूं नहीं माता, सच्चा है निरधार ।धन० ६८। सुनकर वचन नयन कर राता, वाघिन जेम विक-

धन० ॥ ८३ ॥ कोप करि कहे राय शेठको, देवो शूलि चढ़ाय ॥ धिक् २ नारी जाल कोय कांई, नृप को दिया फंसाय ॥ धन० ॥ ८४ ॥ सुभट शेठको पकड़ शूलिका, पहनाया शृङ्गार ॥ नगर चोवटे ऊभो करके, बोले यों ललकार ॥ धन० ॥ ८५ ॥ यों सुदर्शन शेठ नगरको, धर्मी नाम धराय ॥ पर तिरियाके पापसे सयो, शूली चढ़वा जाय ॥ धन० ८६ ॥ पड़ी नगर जब खबर लोग मिल, आये राय दरबार । राख राख महाराज शेठको, विनवे बार-म्बार ॥ धन० ॥ ८७ ॥ दाता रा सिर सहेरो सरे, पुरजन जीवन सार ॥ सुदर्शन जो चढ़े शूल तो, जीना हमें धिक्कार ॥ धन० ॥ ८८ ॥ व्योम फूल सम बात बनी यह, सेठ न मूके शील ॥ नारीवश महाराज आज मत, डालो धर्मको पील ॥ धन० ॥ ८९ ॥ झूठा मुक्का बेन जगतमें, यह सचा लो जान विध २ से मैं पूछा शेठको उखलत नहीं जवान ॥ धन० ॥ ९० ॥ चार ज्ञान चउदे पूरब धर मोह

देह राय मन, हो गया चकनाचूर ।।धन० ।।७६।।
कंचन ऊपर कीट लगे किम, सूर्य करे अन्धकार ।।
चन्द्र आग वर्षावे तथापि, शेठ चले न लिगार ।।
धन० ।।७७।। पास बुला यों नरपति पूछे, कहो
किम बिगड़ी बात । अगर सांच मैं बात कहूँ तो,
होवे मातकी घात । धन० ।।७८।। पुण्य पाप है
किया जा मैंने, वे हैं मेरे साथ ।। मौन रहे नहीं
बोले शेठजी, नरपतिसे कुछ बात ।। धन० ।। ७९।।
बहुत पूछनेपर नहीं बोले, तब नृप जानो सांचो ।।
आये महल निज नार देखने, वो सूती खूंटो
खांचो ।। धन० ।। ८० ।। बांह पकड़ नृप बैठी कीनी
ते बोली रोस भराय ।। धिक है तुमरे राज कोप
जहां, लम्पट वणिक बसाय ।। धन० ।। ८१।। देखो
यह मम गात वणिकने, कैसे नाखे हाथ ।। शील
रख्यो मैं नाथ और तो, बिगड़ी सारी बात ।धन०।
८२ ।। मैं जीवूं या शेठ जियेगा, निश्चय लेवो
जान ।।सुन नारीके वचन रायके, मनमें आई तान ।

सूलीसे उगरे, तो मैं निरखूं जाय ॥ धन० ॥९८॥ धर्म रूप पतिकी पत्नी मैं, उस पर चढ़ा कलंक ॥ सूर्य ग्रसा है आज राहुने, जगमें व्याप्या पंक ॥ धन० ॥९९॥ धर्मध्यान दो दान लालजी, पाप राहु टल जाय ॥ पिता तुम्हारे सुदर्शनजी, रवीरूप प्रगटाय ॥ धन० ॥१०० ॥ माता पुत्र मिल ध्यान लगाया, प्रभु तेरो आधार ॥ वन वचे आज ये पिता हमारे, होवे जय जयकार ॥ धन० ॥ १०१॥ कोई प्रशंसे कोई निन्दे, शेठ शूलीपर जाय ॥ लाखों नर रहे देख तमाशा, शेठ न मन घबराय ॥धन०॥ ॥ १०२ ॥ सागारी अनशन व्रत लीनो पाप अठा- रह त्याग ॥ जीव खमाये शान्ति भावसे, द्वेष न किसमें राग ॥ धन०॥१०३॥ महा योगेश्वर धरे ध्यान त्यों, जिन मुद्राको धार ॥ ध्यान धरे नवकार मन्त्रका, और न कोई विचार ॥ धन० ॥ १०४ ॥ इसी मन्त्रके ध्यान शेठने, तजे पूर्व भव प्राण ॥ डिगे देव सिंहासन उससे, महिमा मन्त्र की जान

उदय गिर जाय ॥ शेठ बिचारो कौन गिनत-
में यों लो चित्त समझाय ॥ धन० ॥ ६१ ॥
तुमही पूछो सेठ कहे कुछ, उस पर करें विचार।
नहीं बोले तो शूली देनेका, सच्चा है निरधार ॥
धन० ॥६२॥ महा भाग तुम मुखड़े बोलो, जो है
सच्ची बात ॥ बिन बोल्या से सेठ सुदर्शन, होत
धर्मको घात ॥ धन० ॥ ६३ ॥ सत्य धर्मका मर्म
जानके, रह्‌ना मौनको धार ॥ हार खाय जन मनो-
रमा की, कहा सभी निरधार ॥धन०॥६४॥ न मुर-
झाई मुर्च्छा आई, पड़ी धरणी कुमलाई ॥ पाँचों
पुत्र तब मा-मा करते, पड़े गोदमें आई ॥धन०॥६५॥
चेत लई बोले जब मनमें, हुई न होवे बात ॥
शील चुके नहीं पति हमारो, नियम धर्म विख्यात
॥धन०॥६६॥ नहीं निकली घर बाहर शेठानी,
धीरज मनमें धार ॥ दियो बोध पाँचों पुत्रन को,
एक धर्म आधार ॥ धन० ॥ ६७ ॥ सत्य नमरता
सुनो पुत्र तुम, झूठ न मुझे सुहाय ॥ आज शेठ

राय प्रजा मिल पतिव्रताको, सिंहासन बैठाय
दम्पति जोड़ा देख देव नर, मनमें अति हर्षाय ।।
।। धन० ।। ११३ ।। जय जय हो सुदर्शन शेठको,
जय मनोरमा मात ।। धर्म तीर्थको जुड़ी जातरा,
पुरजन बहु हर्षात ।। धन० ।। ११४ ।। शाह घरे
सब आये बधाये, मोती चौक पुराय ।। देव गये
निज स्थान रायजो बोले मंगल वाय ।धन०।११५।।
धर्म मंडना पाप खंडना, तुम चरणे सुपशाय ।।
हुई न होवे इस जग माँहि, सब जन साख पुराय
।। धन० ।। ११६ ।। नहीं चीज जगमें कोइ ऐसी,
चरन चढ़ाऊं लाइ ।। तथापि मुझ पें मेहर करीने,
मांगो तुम हुलसाइ ।। धन० ।।११७ ।। राय तुम्हारे
रहते राजमें, मिला धर्मका सहाय ।। और कामना
मुझे न कुछ भी, माता साता पाय ।।धन०।।११८।।
सुनी शेठक बैन सभी जन, अचरज अधिको पाय ।।
शत्रुको समभाव दिखाया, महिमा वर्णी न जाय ।।
धन० ।। ११९ ।। एक सभासद कहता सुनिये, शेठ

॥धन० ॥ १०५॥ शील सत्य अरु दया साधना, लगी मन्त्रके साथ ॥ हिए हुलसते देव गगनमें, आये जोड़े हाथ ॥ धन० ॥ १०६ ॥ सुभट शेठको धरे शूलीपर, हाहाकारका नाद ॥ शूली स्थान पं हुका सिंहासन, बजे दुन्दुभी नाद ॥धन० ॥ १०७॥ छत्र धरे और चामर विजे, वर्षे कुसुमा धार ॥ ध्वजा उड़त है बीज्या जयन्ती, सुर बोले जयकार ॥ धन० ॥ १०८ ॥ मनमें सोचे शेठ सुदर्शन, शीलवन्त शिरताज ॥ धिक् धिक् है अभिया रानी को, निपट गमाई लाज ॥ धन० ॥ १०९ ॥ जग जन मुखते करते कीर्ति, गई रायके पास ॥ दधि-वाहन नृप आया दौड़के, घर मनमें हुल्लास ॥ धन० ॥ ११० ॥ खमो खमो अपराध हमारा, बार बार महा भाग ॥ धर्म मर्म नहीं जाना तुम्हारा, नारी चाले लाग ॥ धन० ॥१११ ॥ सुनी बात जब मनोरमाने, पुलकित अंगन माय ॥ पांच पुत्र संग पति दर्शनको, शीघ्र चाल कर आय ॥धन०।११२॥

समीक्षा वहकाई भर जोष ॥ धन० ॥ १२७ ॥
कलाकुशल जबहो तुम जानु, इससे बिलसो भोग ।
ऐसा नर नहीं इस दुनिया में, रूप कला गुन योग
॥ धन० ॥ १२८ ॥ बनी कपट श्राविका वेश्या, मुनि
भिक्षा को आया ॥ अन्दर ले के तीन दिवस तक,
नाना विधि ललचाया ॥ धनन ॥ १२६ ध्यान ध्रुव
जव रह्या मुनीश्वर, वेश्या तज अभिमान ॥
बन्दर कर मुनीजीको छोड़े, बनमें टाया ध्यान ॥
धन० ॥ १३० ॥ अभियाऽयंतरी आय मुनिको,
वहुत किया उपसर्ग ॥ प्रतिकूल अनुकूल रीतिसे,
अहो कर्मका वर्ग ॥ धन० ॥ १३१ ॥ मुनि रंगमें रंगी
गणीका, पाई सम्यक् ज्ञान ॥ शुद्ध हृदयसे कृतपापों
का पश्चाताप महान धन० ॥ १३२ ॥ धाय पंडितासे
कहती वेश्या, मुनि गुण अपरम्पार ॥ दम्भ मोह
अब हटा है मेरा, पाई तत्वका सार ॥ धन० ॥
॥ १३३ ॥ अब ऐसा शृंगार सजूंगो, तज आभूषण
भार ॥ सोना चांदी हीरा मोतीका, लूंगो नहीं

गुणोंकी खान ।। नम्र भाव और दया भावसे सबका रखता मान ।। धन० ।। १२० ।। जो अपनेको लघु समझता, वो ही सबमें महान ।। गुरुता की अकड़ाइ रखता, वो सबमें नादान ।। धन० । १२१ ।। स्वारथ रत हो करे नम्रता, यही कुटिल को बान ।। बिना स्वार्थही करे नम्रता, सज्जन जन गुणवान ।। धन० ।। १२२ ।। यद्यपि रानी महा अज्ञानी, कीना महा अकाज ।। तथापि शेठ तुम्हारे खातिर, अभय देऊंगा आज ।।धन०।।१२३।। सुनी बात अभिया हुई सभिया, पापका यह परिणाम ।। गले फांस ले तजे प्राणको, गमाया अपना नाम ।।धन०।।१२४।। धाय प्राण ले भगी महल से, पटना पहुंची जाय ।। वेश्या घरमें नीच भावसे, रहके उदर भराय ।। धन०।।१२५।। अवसर देख शेठ मन दृढ़ कर, लीनो संयम भार ।। उग्र विहार विचरतां आया, पटना शहर मजार ।। धन० ।। १२६ ।। देख मुनिको धाय-पंडिता, मन में लाई रोष ।। होरनी वेश्या करी